This book is sourced from another online repository and provided to you at this site under the TFIC collection. It is provided under commonly held Fair Use guidelines for individual educational or research use. We believe that the book is in the public domain and public dissemination was the intent of the original repository. We applaud and support their work wholeheartedly and only provide this version of this book at this site to make it available to even more readers. We believe that cataloging plays a big part in finding valuable books and try to facilitate that, through our TFIC group efforts. In some cases, the original sources are no longer online or are very hard to access, or marked up in or provided in Indian languages, rather than the more widely used English language. TFIC tries to address these needs too. Our intent is to aid all these repositories and digitization projects and is in no way to undercut them. For more information about our mission and our fair use guidelines, please visit our website.

Note that we provide this book and others because, to the best of our knowledge, they are in the public domain, in our jurisdiction. However, before downloading and using it, you must verify that it is legal for you, in your jurisdiction, to access and use this copy of the book. Please do not download this book in error. We may not be held responsible for any copyright or other legal violations. Placing this notice in the front of every book, serves to both alert you, and to relieve us of any responsibility.

If you are the intellectual property owner of this or any other book in our collection, please email us, if you have any objections to how we present or provide this book here, or to our providing this book at all. We shall work with you immediately.

-The TFIC Team.
बड़ा जैन-ग्रन्थ-संग्रह।

मनोहर २१ चिथरियों सहित ६२४ पृष्ठों में १६२९ सुने हुए दो मागों में आचरणक सम्पूर्ण निष्पादनों का अपूर्व संग्रह।

प्रथम माग के संग्रहकार—\\
गुरज (मागर) निवासी माएर गौरेद्वार जैन।

प्रकाशक—\\
जैन-सहित्य-सन्दिग्ध, सागर [मो. प्र०]

प्रयोग १६८२ धीर सं २५५२ मासबार { पाली जिल्ला २, सुनारी जिल्ला २।}
हमारी छपाई पुस्तकों और चित्रों की सूची।

वडा जैन-ग्रंथ-संग्रह—[ संचित ] अनेक पुस्तकों का संग्रह न
लपदेश खेजन माला—[ संचित ] वपैचश्रंद हृदा और भजन
जैन-जीवन-संगीत—[ संचित ] मुनि आहार विधि,
इने हुए अनेक वारहवासों तथा कविताओं का संग्रह
मेरी भाषना और मेरी इलाज पूजा—दाखों प्रतियों छप चुकीं
दल्लु-संग्रह हिन्दी पदानुवाद—[ भेया भगवतीदास कृत ]
रंजकरण श्रावकाचार-हिन्दी पदानुवाद—[ पृं गिरिराव
शर्मिया कृत ] बहुत ही सुरू और सुन्दर कविता में
बहुत ही सुरू और सुन्दर कविता में
जैनस्तव रथमाला—संचित [ पृं गिरिराव शर्मिया कृत ]
वारहमाला, सामाजिकपत, आलोचनापत, महात्मार,
शान्तिनाथ, पार्वतीनाथ आदि सुन्दर स्तोत्रों का संग्रह
महावान पार्वतिनाथ—[ संचित ] उपन्यास के बँध पर बहुत
ही कलित रचना में भगवान का चरित्र खिला गया है
ढला चला—शुभार्कों और स्वनिःवालकों का सन्नार्जक संवाद
अतिशयक्षरत चांदबेड़ी का इतिहास और पूजन—[ संचित ]
प्राकृत शोधकारण जयमाला-भावा टोंका—संचित, भावा
टीकामात्रावालोंका सूत्रप बड़ी अच्छी तरहे बलाया गया
है, वत, कथा उद्दयपन की विधि और संग्रह-संग्रह लिखित...

चित्र।
हमारे यहाँ हेमेगा तवे २ मात्रुपर्ण, पौराणिक तीव्र क्वतियों
अंदि के चित्र तैयार होते रहते हैं। और बहिष्य चित्रने आर्ट पेपर पर
क्रम छपाही में छप वे जाते हैं। प्रत्येक मंदिरों तथा दर्शनों में लगाकर
धम-शिक्षा और सनातन दोनों का लाभ हानाये।

पत्रा—जैन-साहित्य-मंदिर, सागर ( म० प्र० )
पिसनहारी की मढ़िया, जबलपुर।
बड़ा जैन-ग्रन्थ-संग्रह
पहिला भाग ।

रत्नकरराद-श्रावकाचार, हिन्दी-पद्यानुवाद ।
( पूं गिरदार शर्माकृत )
पहिला परिचय

सकल कर्ममें जिन्हे धोखे, हैं, वे वर्धमान मंगवान।
लोकालोक भास्ते जिसमें, येषां दर्पण जिनका शान।
बड़े घावते भक्तिमाते; नमस्कार कर बारंबार।
उनके श्रीचरणों में, प्रणमू, सुख पाउँ हर विचन-विकार॥
जो संसार हुज्जसे सारे, जीवों को हु बचाता है।
सर्वोत्तम सुखमें पुनि उनको, भलोमोति पहुँचाता है॥
उसी कर्मके कार्तनहारे, श्रेष्ठस्मृती कहता हैं।
श्रोतामत्तमद्वाय्यवर्तका, भाव बताना चाहता हैं॥१२॥

पर्व किसे कहते हैं।

गणधररादि धर्मस्वर कहते, सम्बन्धान सम्बन्धान-।
श्रमक्षरित धर्मरथ्य हैं, सुखदायक तव भावति निद्रा।
इनसे उक्ते मिथ्या हैं सब, दृश्य शान और चारित्र।
भव कारण हैं मस्य कारण हैं, हुब्ब कारण हैं मेरे मित्राः॥

सम्बन्धान का लज्जा ।

आठ अंगसूत, तीन मूहता रहित, तमन्र तो हो अध्यान।
सच्चे देव शाक्त गुरु पर इह, सम्बन्धान उसकी जान॥
सच्चे देव शाक्त गुरुका में, लक्षण यहाँ बताता हूँ।
तीन मूहता आठ अंग-सद, सयका मेद बताता हूँ।॥१७॥
चढ़ा जैन-प्रस्थ-संग्रह।

सन्ये देव का स्वरूप।
जै स्वर्ण शाख का स्वामी, जिसमें नहीं द्वार का चेष।
वही आस है वही आस है, वही आस है तीर्थ जिनेश।
जिसके भीतर इन बातों का, समावेश नहीं हो सकता।
नहीं आस वही हो सकता है, सत्य देव नहीं हो सकता।
भूख प्यास बीमारि बुझापा, जन्म मरण भय राग द्वेष।
गर्व मोह चिंता मदोच्छर, निर्द्व भरति खेद अधैरवेद।
द्वेष अठारह ये माने हैं, हीं ये जिनमें जरा नहीं।
अस्ति वही है देव वही है, नाथ वही है और नहीं।
सर्वानंद सत्य निन्दु।
आदि रहित हो अत्त रहित हो, प्राच्छर रहित हो महिमावान।
सव जीवों का हीय हितेश्व, हितेशपेशी वही छुजान।
अंचल राणे के विवा स्वारथके, सत्यमार्ग वे वतन्तरे।
कुनातुफ़ जिनके वस्तुरुपको, हम्य प्रकृत हो जाते।
उस्तादेंके कर स्पष्टे तज मुद्रूक ध्वनि करता है।
नहीं किसी से कुछ चहता है, रलिकों के मन हरता है।

शाख का लचार।
जै जीवोंका हितकारी है, जिसका है न कभी खड़न।
जै न प्रमाणों से चिरुम हो, करता हीय कुपथ-लंडन।
बस्तुहुपकें महीमातित्ते, वतन्तरा है जा भूर्विँतर।
कहा आप्तका शाख वही है, शाख वही है छुन्दरत।
तपस्वी या गुरु का लचार।
चिपय छोड़कर निरारंभ हो, नहीं पतिया रक्षे पास।
शान ध्यान तप में रत होकर, सव प्रकार की छाड़े आस।
भूल माल उसकै तज देना, या तज देना घार प्रमाद॥
ऊँचे नीचे आगे पीछे, अगल वगल मिटने चढ़ना।
विपुलके अतिचार कहते, याहूं न मयादा रखना॥६०॥
अनर्थदुःखरित।
दिगमर्यादा जै की होच्चे, उसके भीतर भी चिन काम।
पाप भैसले बिरक होता; है अनर्थदुःखद्वृत नाम॥
हिंसादान प्रमादचर्या, पापदेश-कथन अपर्याय।
त्योहाँ हुःशुति पाँची ही गे, इस चूढ़के हैं भेदः युक्त। उद्यान॥६१॥
हिंसादान।
भूरी कटारी खंग खुनोता, अग्निपुष्प फलसा तथ्वार।
साँकल सींगी अखु-राख्का, देना, जिनसे हैवें वार।
हिंसादान नामका मिटने, कहलता है अनर्थदुःख।
बुधजन इसका तज देते हैं, जोहें नहीं हैवें युद्ध प्रचंड॥६२॥
प्रमादचर्या।
पृथ्वी पानी अभिन चायुका, चिना काम आरौं दरण।
व्यर्थ लेखना वनस्पतीको, वे-मतलब चलना फिरना॥
वौंरों को भी व्यर्थ युमाना, है प्रमाद चयाँ दुःखकर।
कहा अनर्थदुःख है इसके, युम चाहे ता इससे उर॥६३॥
पापोप्रेश या पापादेश।
जिससे धारा देना आचे, मनुज कि त्यों हिंसारस।
निर्मलका संकट देने, वणिज के फैलाकर दरम॥
ऐसी ऐसी थाते कहना, पापादेश कहला है।
इस अनर्थदुःखको तजकर, उत्तम नर छुन पाता है॥६४॥
अपर्याय।
रागदृष्ट के बसमें होकर, करते रहना ऐसा ध्यान।
उसकी प्रिया मुझे मिल जावे, मिल जावे उसके धनघात॥
वह मर. जावे वह कठ जावे, उसको होवे जेठ महान।
वह छूट जावे संकट पावे है अनर्थदुःख अपर्याय॥६५॥
इश्वरी।
जिनके कारण से जानु गए हैं, राग छूट मद काम विकार।
आरंभ साहस और परिश्रम त्यों। छाव निश्वालविकार।
मन मैं जिसे हो जावे, प्यारे छुनना ऐसे प्रनय।
इश्वरी नाम अन्न कहाता, कहते हैं बानी, निर्णय। ॥ ६६ ॥
अन्यन्यदृष्टिके अतिचार।
स्मराधीन हैं हृंसी दिल्लगी-करना मंडवचन कहना।
बकवक करना आंख लड़ाना, कायकुटेष्टा में बहना।
सजावज के सामान बढ़ाना, रिना विचारे त्यों प्रियवर।
तनमनवचन लगाना कृतिमें हैं अतिचार सभी वृत्तिह। ॥६७॥
भोगेयभोगपरिमाण।
इन्द्रिय-चिपयों के प्रतिदिन ही, कम कर राग घटा लेना।
है जत मेण्वेयभोगपरिमित, इसकी ओर ध्यान देना। ॥
पंचप्रेमिय के जिन चिपयों के भेग छोड़ दें वे हैं मेराए।
जिन्हें भोगकर फिर भी मेरे मित्रों में ही हैं उपभोग। ॥६८॥
अत जीवों की हिंसा नहीं हो-होने पावे नहीं प्रमाद।
इसके दिले सर्वथा त्यागे, मांस मह मधु छोड़ विपाद।
अदरक निम्बुपूष बहुव्रीजक, मक्खन सूर आदि सारी।
तजा सचित वीजें जिनमें हो, थोड़ा पल हिंसा भारी। ॥६९॥
जा भविष्य हैं सत्यपूर्वों के- सेवन वेध्य नहीं जा है।
उन चिपयों के सोच समभकर, तज देना जो वत सेह है।
भोग और उपभोग त्याग के, बताये यम नियम उपाय।
अनुक चतुरतफलयाग 'नियम' है, जीवन भरका यम कहालाय।
नियम करने की विचि।
भोजन बाहुर शयन स्नान सुचि, दृत पान कुंकुम-भेदन।
गीत वाच संगीत कामरति, माला भूपण और वसन।
इन्हें रात दिन पक्ष मास या, वर्ष बादि तक देना त्याग।
फहळाता है ‘नियम’ और ‘यम,’ धार्मिक इनका परित्याग
भेगोदेशगर्मिमात्रे सहिष्णु।
विषय विषय का आदूर करना, मुक्त विषय को करना याद।
चर्मान के विषयों में भी, रखे पचे रहना अविपाद।
भागामी विषयों में रखना, दृष्ट या लालसा अपार।
विन में विन का अनुसार करना, ये भेगातिवित्त।
पांचवां परिच्छेद।
शिरामूर्ति-देशाधिकारिक।
पहला है देशाधिकारिक युनि, सामाजिक प्रवचन उपवास।
वैयाथ्य और चाप चाप, शिशारूढ़ हैं लुक-आचार।
दिनभत का दबा चौड़ा स्थल, कालेबेद से कम करना।
प्रतिविद्य वत देशाधिकारिक से, गृही जनों का लुकारना।
असुक नैह तक असुक गठी तक, असुक गाँव तक जाऊँगा।
असुक शैतं से असुक नहीं से, आगे पढ़ न छोड़ूँगा।
एक वर्ष छहमास मास या, वर्षवाड़ा या दिन दो चार।
सोमाकाल सेवूस श्राद्ध, इस वृत के छेते हैं घार।
स्थूल सूक्ष्म पांचों पापों का, हो जाने से पूरा त्याग।
सोमा के बाहर सब। जाने, इस वृत से सु महानुष्ठान।
हैं बतिचार पांच इस वृत के, मौनवाना प्रेषण करना।
ङ्ग दिखाय इशारा करना, चीज़ फैकना, ध्वनि करना।
सामाजिक।
पूर्ण दीत से पक्ष पाप का, परित्याग करना सहान।
मर्यादा के भीतर बाहर, असुक समय धर समता ध्यान।
है यह सामाजिक शिशारूढ़, असुक विनों का उपकार।
बिचि है अनुसार सावधान है, बने लड़ा इसके घार।
तन जीव नाक आंख कान ये ही पंचद्वारी, जाके जे ते होय ताहि तेले सर्दीहीजिये। संज्ञ है विपीलि तीन मौर चार नर पंच, इन्हें आदि नाता भेद समुचि गहरीजिये। ॥ ११ ॥

पंच हिंदी जीव जिते ताके भेद दोह कहे, एकत्रिके सन एक मनविना पायिे। और जगवासी जैन तिनके न सन कहैं, एकत्रिके वेदद्वारे तेंद्री चोइन्द्री चताइये। एकत्रिके भेद दृष्ट सुखम बादर होय, पर्यापत अपर्यापत सवे जीव पायिे। ताके बहु विस्तार कहे हैं जु प्रस्थति में, थेरे में समुचि ज्ञान हिरदे अनाइये। ॥ १२ ॥

चउद्वार मारकणा चउद्वार गुणस्थान, होहि ये यशुह नय फहे जिनराजने। वेही भाव जैल तोलो संसारी कहावे जीव, इनके उल्लंघनकरि मििे शिव साजने। शुद्धि विलोकनिती शुद्ध है सकलजीव, द्रव्यकी उपेक्षा तो अनन्त छवि छानिे। सिद्धि समान थे विराजमान सवे हंस, चैतना सुभाव धर फरे मिज़ काजने। ॥ १३ ॥

अग्निकम्हीन भए गुणपुत्र चरमसु, दैह ताते कछूँ अने। सुद्र को विवाह है। थीको जु भए ताता स्थित है अनन्त सिद्ध, उत्पादन्त संयुक चला जाके वास है। अनन्तकाल पर्यत थिति है बहुसंख जाकी, थीकाहिलोकप्रवतसारी झानको प्रकाश है। निम्न झुकराज फरे बहुरि न जन्म धरे, ऐसे। सिद्ध राष्टि का आतम विवाह है। ॥ १४ ॥

प्रकृति भी धितितन्त्र अरुसाग वेदपःशक्त पदै चार शन्य मेंि कहिये। इन्हीं चछूँ वत्तरि अवलंि हैं के चित्रानन्द, अनिशिका सम औद्भव को सुभावी कहिये। और सन जगजीव तमैं निज दृष्ट जव, परसोंके गीि करे तवे संधि गहिये। ऐसे ही अवादिति नई कछूँ सई नाहि, कही प्रत्यमांहि जिन तैली सरदीहिे। ॥ १ ॥

(इति जीवस्य नवाधिकारः)
अजीवदरव पंच ताके नांव भिन्न सुने, पुड़गल भो
धर्मद्रव्यको सुभाव जानिये। अधर्म द्रव्य आकाश द्रव्य काल
दृव एई, पांचो द्रव्य जग में अचेतन बखानिये। तामें पुड़गल
हे सूर्याको ऊपर र्स गन्ध, पर्षमें सुपरजाय लिये जानिये।
और पंच जीव जुंट कहे हैं अमूर्ततीक, निज निज माह घरे
में हरे हैं पिछानीरे। १५।

शब्द बनन सूक्ष्म शून्य भी आकार रूप, हैवा सिलिबो
ओ विचुरिता, घोष छाय है। अंधारो उजारो भी उद्वीत चळुद-
कांतिसम, मात्र सु भानु जिम नाना में हरे छाय हैं। पुड़गल
अन्त ताके परजाय है अन्त, लेखे जो लगाये तीक्षुपता-
न्नत घाय हैं। एकही सम्में आय तय दर्शन बढ़ी, देखी
घानवंत ऐसी पुड़गल प्रजाय हैं। १६।

जब जीव पुड़गल चले उठि दिलोपकाय, तब स्वर्ग
काय सहाय आय होत है। जैसे मचछ पानी माहि आपुहोतें
गोन करे, नीरकी सहाय संती अस्थलता बोत है। पुनि यों
नहूं जो पानी गोन को चढ़ावे पंथ, आपुहोते चढ़े तो सहाय
कौँ नीत है। जैसे जीव पुड़गलको थर न चढ़ाव परे,
सहजे ही चढ़े तो सहायका देवत है। १७।

जीव अब पुड़गलको कथितसहकारी होय, ऐसो हे अधर्म-
द्रव्य दृश्यताहैं हद है। जैसे कोई परम मुनि दुपाणहत्व गोन
करे, घाया के समूप आय बहो नेकु तद है। जैसे यों नहूं जू
पंथ को राजाणु बठाय कङ्घा, आपुने सहज बहो वाको आछी-
पद है। जैसे जीव पुड़गल ने अधर्मस्तितकाय तद, होत
है सहाय 'भेया,' कथितसम जद है। १८।

जीव आदि पंच पदार्थनिको सहायी यह, वैत अवकाश
ताके आकाश नाम पायो है। ताके भेद देवय कहे पक है वलो-

काकाय, इँटो नेटाकाया दिन प्रत्यक्ष दिखाई है। तीनों कई घर हैै सब तीन घरों बाज, तीन पंचदेवधकृत है। बड़ा पहली मरे लें विन निहं लुटा गई, वाही द्वे आर दो रोकथान हो कहाई है। २६।।

जितने साकारेशरि नई दे बुझपंचरि, जितने चाकाय को जु नेटाकाया करहै। चरमत्रथ पंचदेवधकृत काकाय गुज़रू, गुज़रू देवधक यहै सब चौंटरों जहां तही। दोनों भी भी काल बांद दो विराज रहू, तात तीन नेटाकाया देवधक सर-दही। देवधक द्वारणित्र हर्मवड़हार ढाके ढाके, गुड़पंचरि नीच सुभाष मूढ़ गही। २०।।

जाई चरमत्रथका प्रवचन समरय, सैठुं चाकाय चोड़मस्ताका राजाई। निज निज परजाय विचिं परजाय वहै, काल का सहाय पान करे निज काज़ी। २०।। दोनों नेटाकायके विराज रहे मेवँ देय, एक व्यवहार परिणाम आदि डाज़। दोनों परमार्थकाल निक्षुष्मवत्ता चाल, कालों रोहित चाकाय-कायाका ढुगाढ़ा। २१।।

नेटाकाया के जु एक एक परजेश चिनी, एक एक काल अभयवकार रहें हैं। ताति काल बाण के असतंत्रताव कहि-शुल, रत्न की राजिय जीन 'कुंक पुंज रहें हैं। कालों न मिरी काई दत्तात्रेय दुष्ट तोई, तैसे काल बाण होय सिखावाव गई हैं। आदि वक्त मिर नाहीं चर्चा सुभाष मांहि, सबै पठ महूर्त परजाय मेद सैठ। २२।।

ढौहा।

लोच बर्तौरचहि द्रुत्य के, मेद सुभाष चाल।
ताले पंच सुमोगँ घर, काकाय चिन मान। २३।।

'समावरके' ऐसा सो पात हैै।
बड़ा जैन-ग्रन्थ-संग्रह।

हिंचिचि अनेक गुण प्रदान करि, कहै सुदिविनुप पड़करै।
चिन्हिंचिचि सजवत लूचि, देहु 'भविन' निज फलक में।

दोहा।

द्रव्यसंग्रह गुरु उद्धिन्सम, किंदिविचि कहिये गार।
यथानिक गुण वरणिये नितम्नि के अनुसार॥२॥

चौपाई १५ माणा।

गाथा मूल नैमिताएँ करि। महा अर्द्धनिर्द्वह गुण भरी॥
बहुत घरा, जै गुणवत ते सब अर्थ लखहि चिरत।
हमसे सुरक्षा समक्ष नाहि। गाथा पढ़ै न अर्थ लखहि॥
काह अर्थ लख वुधि ऐन। अन्वितं रूप्यो अति चिरत।
जो यह श्रेय कवितामें हो। ती जगमाहि पढ़ै सब कोय॥
इहिविचि ग्रंथ लख्यो भुविकाल। मानसिंह व संगोऽद्रियनाथ॥
संत सत्तहि इकतोस। माघुर्दी दशामी शुभदीस॥
मंगल करण परमर्षते भाग। द्रव्यसंग्रहग्रन्थि करहू प्रणाम॥७॥

इति श्रीद्रव्यसंग्रहमूलसहित कवितांब्र समाहं।

पुयार-पाप-फल।[कविता]

श्रीमं में धूप परै तामें भूलि भारी जरै।
फूलत है लाक पुनिः अति ही उमहिः।
चर्यार्थू मेघ भरै तामें चूalus केईं फरै,
जरि जवासा अय आपुहितें डहिः॥
रूं न देश कौं धूप पाप फलि देया।
जैसै जैसैं किये पुरूः तैसैं रहि सहिः।
केई जीच छुबै होहि केई जीच छुबै होहि,
देखू तमालेशे 'सैया' त्यारे नेकौ रहि केई॥
इत्यादिषः मूलः

[ श्रीमलोकचन्द्र सिद्धान्तवाचकारां क्रत ]

जीवनमार्गं द्वारं लिङ्गवरसहस्रेण जेन ग्रिहिष्ठः। देविं-अयं चंद्रं वंसं वंसं तं स श्रवं सिपस्य ॥ १ ॥ जीवं द्वयोगमयो अमुत्त कणा सदेहपरिमाणे। सेचा संसारस्यैै सिद्ध्यै से वियमस्तुरूढः गाई ॥ २ ॥ तिकाले चच्चारणा इदत्र बहमाद आण्याणेन च चवहारा सः जीवं निःक्रयणवदे ठु चेदाणा जस्त गा। ॥ ३ ॥ उववोगं दुःख्यक्रे दंशं गाणं च दंशं चुत्मा। बकुतु अनवकू भोही दंशमध्य केवलं गेरं ॥ ४ ॥ गाणं अद्भुत चिरवप्पं मदिसुद्दोही अणाण्याणाणि। मण्डल्द्यं वेदनमवि पञ्चकपरोक्षमेवं च ॥ ५ ॥ अद्भुत-चच्चारणांत्यं सामाणं जीववक्षणं करणं । चवहारा दुःख्यं गुणं दंशं गाणं ॥ ६ ॥ वचनं रसं पंथं गंगा द्रव्य अद्भुत निःक्रयं जीवं । पोत सति अमुतितं वदेन चवहारा मुन्त मञ्चादें ॥ ७ ॥ पुरजलकमाणिणं कणा चव-हारं ठु निःक्रयं । चेतनकमाणादा सुदरण्या सुदभां। ॥ ८ ॥ चवहारा दुहदरुं पुरजलसमपलं पुस्तं ददिन । आदिनिःक्रयणयदै निःक्रयस्य खुद्य आदस्स ॥ ९ ॥ अषुएक-देहमयो उवसहरपरसपदें चेदा। अषुएक्षेत्र चवहारा निःक्रय-यणयदै अबस्तं ददिन ॥ १० ॥ पुंजिनलंदैवावसहंदवहृदेत्र्यी । निगतिः कच्चरणश्वः तस्तिजवा हृदति कंतादी। ॥ ११ ॥ समणा भागा चेया पंबलीक्ष निःक्रयापरे कस्मै। वाद्वहुदमाणिः सचै पुजधक इदरा च ॥ १२ ॥ मण्डव-गुणंहाणः हि चवहसंह हर्मतिः तथ असुदरण्या। द्रव्यमया निःक्रयापरे सब्बा सचै पुजधक ॥ १३ ॥ गिर्हिनया अद्भुतगुणा
किंचूँपा चरमविद्रोहिण्यं सिद्धां। देयण्येवितरं चिन्चा उपपदवः
येहि संजुच्या ॥ १४ ॥ अज्जीवों पुणे जेवो पुगल धर्म्मो
अधिमम आयासं। काले पुगल मुनी सूवारिगुणो। असुखी
सेला हु। ॥ १५ ॥ सदृशं वियो झुम्से थुले संडायणभोदत्वमधाया।
उन्जाद्वयणलिपन्या पुगलज्ञानस्त पञजाया ॥ १६ ॥ गगतथकीणयाणाः
धर्म्मो पुगलज्ञीविवाण गमणसहयारी। तत्यं जह मच्छाण्यं
अम्बतापेव सैं कै देख। ॥ १७ ॥ दाण्डूमणं अधयायं पुगल
जीवाण ज्ञान संहयारी। चाया। नय पश्चिमाण गच्छंता जेष्ठ
सैं धरं। ॥ १८ ॥ अधगास्त्राजेवम्भं जीवाङ्गों अवियाण
आयासं। जेष्ठ लेगागासं अलोकागासमिद्धि दुविंछ। ॥ १६ ॥
धममाध्यममा काले पुगलजीवा य संति जावद्ये। आयासे
सैं झोगे तत्तोऽ पदेसं अङ्गुस्तो। ॥ २० ॥ दुर्वपरिच्छेदः। जै सैं
काले ह्रेडेव ववहारो। परिमाद्वादीतकेव बर्टण
ज्ञानीं य परमदेस। ॥ २१ ॥ लेयगासपदेरे इक्काकेचे जे
वियं हु इक्केकका। स्थणाण सासीमि त्य कालणू असत्व
द्वयणासं। ॥ २२ ॥ दिभ्यमिद् जीवाजीवपम्भदेसद्ववम्व। उत्तर
कालविज्ञुतं गणनवा पंवं अवियकाया दु। ॥ २३ ॥ संति जावदे
शेखे जेन्यो अनत्वति भरणति जिनवरा जम्मा। काया इब
बहुदेस सान्तरा काया य अवियकाया य। ॥ २४ ॥ ह्रेडेव असत्व
बिचे धममाध्यममे अंगत आयासे। गुरू तिबिह पदेसा कालुङ्गेंग।
जण तेण सैं कामो। ॥ २५ ॥ यपदेसो वि अणूऽ पाणासंतंपद्वे-
ररे होदि। बहुदेसैव उवयारा तेण य कामो भरणति सभ्यायुं
॥ २६ ॥ जावदियं आयासं अवियमौ पुगलज्ञानवर्द्धं। तं
खु पदेसे जाणे सनवागुड़णापरहि। ॥ २७ ॥ आसचार्यमसं
जंगिरणसूजरमोक्ता हुपुरणरचि। ते। जीवाजीववेष्टिकाशे
ते वि सद्याचे न प्रमणसो। ॥ २८ ॥ आसचार्य तेण संस्तं परिनाम-
कछुकी वात रही कल ऊपर, भूल अभी को जाने। मत ।
पीनेवाला—संग नहीं यह शिव की वृद्धि, वज्र अभार है करता।
जन्म जन्म के पाप नशा कर सब रोगों को हरता।
चलो विरोधो—संग नहीं यह विप की पत्ता, करे मरुप को खाराज।
जीते जी अत्या कर दूंगी, फिर नक़ां हो डालः। मत ।
पीनेवाला—कुंडल में खुद्र वस्त्र खड़े है, चौ सोटे में श्रवण।
विद्या में अभाव यहते हैं, रगड़ रगड़ में रामः।
चलो विरोधो—अरे संग के पीनेवाले भयंकर युद्ध हरेन।
होशयार तो चतुर मद्द को, खरा गाथा कर देतः। मत ।
पीनेवाला—सूदी वातें फिरे वलनता, ले पी थोड़ी संगः।
एक पहर के बाद देखना वैसा छावे रंगः।
चलो विरोधी—हानत इस पर, हानत हुभ पर, चल चल होजा हू।
संग पिये संगड़ कहलावे अरे पातकी कूरः। मत ।
पीनेवाला—संग के अबसुन मजे को दुने कछ जाना नहीं।
रंग का इसके लग सी सूदः पहराना नहीं।
आंख में हुरसों का होरा सन में मोरोः की लहर।
शांति आनन्द विन इसी के के पार सच्चता नहीं।
( चलत ) दादू संत भयंकर सव पीते क्या कंगाल अमोर!।
हेश्वर से होलीन करावे वे इसकी तालीर।
चलो विरोधी—है नहीं यह संदूक काँटिहुक को तलवार है।
वेहोश करति है यही जानोः महा सुरदेर है।
खोफ जिनको तक़ का है वह इसे छुड़ते नहीं।
बात सब मानी हमारी नक़ा का यह छार है।
( चलत ) यह सब सूदी वातें भाई संग नक़ा में डालः।
आखें खोल जगत में देखो हालों काम विगाड़े।
मत ।
पीनेवाला—सुनकर यह उपदेश तुम्हारा हमें हुआ आनंदः।
हुक्का का ड्रामा।

हुक्केबाज—अाहार क्षमा अच्छा हुक्का है।
हे फंसई हुक्के का पीने वाला।
(चटन) क्या हुक्का वगाये आता, मर मर पीके तुम लाका।
जो पीवें इसे पिलावं वह हुक्क जितने पावं।
विरोधी—युगी भावत है यह भावे मत हुक्की करो बड़ाई।
दूर दूर दूर दूर दूर दूर हो लानत लानत फशों लानत। सोदूर्ध।
यह तन का खूब जलावे, वलगम का बहुत वहावे,
जो मुंह से इसे लगावे, ना लड़जात कुछ भी पावे।
हुक्के वाज—जिसके इस चिलम पिलघाई वलगम का करी लफाई।
विरोधी—दूर दूर दूर दूर दूर दूर हो लानत लानत फशों लानत सोदूर्ध।
हुक्केबाज—क्या हुक्का वह घाला, भरभर पोले तुम लाका।
जो पीवें इसे पिलावं वह अच्छा मन्द्र कहनावं।
विरोधी—जो हुक्के का दम लावे, वे चिलम आग का जावे।
को सी गाली फिर खावे यह मान बढ़ाई पावे।
हुक्केबाज—यह कैसी वान वनाई कुछ कहने शरम न आई।
विरोधी—दूर दूर दूर दूर दूर दूर हो लानत लानत, फशों लानत सोदूर्ध।
हुक्केबाज—क्या खूब वना यह आला, गज़ाली ६२वें दला।
पीते हैं अहरना आला, यह घट में करे उजाला।
विरोधी—क्या बाक वना यह आला, दिल जिगर करे लव काला।
भच्चा यह नशा निकाला, देवजन में गिराने वाला हुकेबाज़—यह महफिल का सरदार, क्या जाने मृदु गंवार।
विरोधी—क्या तक कि हुक्का नेशन मुहल्ला जगाओगे।
पंशी चंगे के नाम के कवतक खिलाओगे।
एक दिन यह मारी आस्ती उड़ेगा बस तुम्हें।
पंजे से पैड़े टेढ़े के चबने न पाठोगे।
गर चाहते हो जिन्दगी में इसका तरक करे।
छूट अपना बरना विररने हसते जलाओगे।
(चलत)—जिन इससे भ्रमित लगाई, आर्थिक में हुई हुखदाई।
मान कहा करों पागल बनता कहां गईं।
मतो हुकेबाज़—तरी मान नसीहत छोड़। ले अभी चिंतम को तोड़।
नहीं को तोड़ मरोड़, हुक्का को जमी से पोड़।
ना पीढ़े कम यह हुक्का, चाना लानत यह हुक्का।
न पिया के। यह हुक्का, बेशक लानत यह हुक्का।

सिगरेट का खामा।

पीनेबाज़ा—यारो मुसे सिगरेट या बीड़ी दिलाना।
बीड़ी दिलाना, मामिला लगाना कैसा यह फैलाव बना।
विरोधी—देवम २—छोड़ो जरा सिगरेट का पीना पिलाना।

‘पीना पिलाना दिल के जलाना नाक है करते गुनाह।
पीने-दूरूः जेब खानी बिड़िया सी खानो झूठता नहीं यह नशा।
विरोधी-शेमशम दिंदी पहुँचे इसमें छूट मरीं छानती है छानती है नशा।
पीने-दूरूः चाहते है कैसी दीवारों यह जैसी गप शापलगाते है।
विरोधी-शेमध-होबेगी हवारी लगाओ जरा
पीने-दूरूः पीढ़ी पिलाओ जरा मुहको लगाओ कैसा यह शौर्य।
विरोधी-शेमध-शोएल पुकारे जिन हास प्यारे खोचे तो दिल मेंजरा।
बड़ा जेन-प्रन्थ-लंग्रहः

बैरी भरे बहुत हे, जो होंने यस जगत में।
उनसे क्रोध कराउँ, तव प्राण तन से निकले।
परिप्राम का जाल मुक्त, फौज बहुत है स्वामी।
दससे ममत्व दूर, तव प्राण तन से निकले।
हुष्कम दुख दिखाएँ, चा रोग तुम्हे को घेरें।
प्रभु का ध्यान हृदय, तव प्राण तन से निकले।
इच्छा ज्ञाता तुषा की, हेवे जो उस घड़ी में।
उनको भी त्याग कर दूः, तव प्राण तन से निकले।
ऐ नाथ ज्ञात करती दिनती पर ध्यान दीजे।
होवे सकन मनोरथ, तव प्राण तन से निकले।
होवे समाधि पूरी तव प्राण तन से निकले।

वेश्या कुटलाईः
मत करे प्रीति वेश्या विष बुझी कटारी। है यही सकन
रोगनकी खान हत्यारी॥ टैक॥ अविन्धि अनेक हैं लर्प डैको
भाई। पर इसके काटेरी नहीं कोई दावाई॥ गर लगे बांन ता
जीवित हु रहे जाई॥ पर इसके तेतन के बानसे हेय सफाई॥ है
रोम रोम विष मरी करै न यारी। है यही सकन रोगनकी खान
हत्यारी॥ यह तन मन घन हर लेय मधुर बोधी में। बुझो का
करे शिकार उमर भोली में॥ कर दये इजारों हेटपैट होरी में।
खाबी तिथकर चिया कैद बैली में॥ गई हसी कर्म में खाबी
की जमोदारी। है यही सकन रोगन की खान हत्यारी॥ हो गये
इजारों के बल चिट्ठी छार। खाबों का इसने बंश नाश कर छारा।
विदिया प्रमेह आतिश ने देश बिगारा। भारत गारत हो। गया
इसीका मात्रा॥ कर दये हजारी इसने चेरा। बद जारा॥ है यही
सकन दुरुँ फही खान हत्यारी॥ इसही उगनी न बच माल
सिख जाया। सब घर्म कर्मके इसने धुर मिलाया॥ और दया
श्रीकृ लख्जा की मार भगवान। भक्तीका मूल नाश करज़ाया।
हैं इसके उपालक रोचक के अधिकारी। है यहीं और
युवकोंको जैन सैनिकें जांच और अति दरों की बहु गद्दी कर
जावे॥ धन हरण कर निंदा राह बतावे। कधे तीन पंच तो
जूते भी लगावावे। उपदेश कर पीछे त्यानी अद्वितीय पुलिस पुकारी। है
यहीं फिर किया पुलिस ने खूब अति दरकार। हो गई
खजा मिला महा इश्क का सारा। जा सूत हो तो सज्जन करा
चिन्ता। त्यान शूल देते सत्यचतुर स्वीकार। अब तजो
पत्नी यह भति निन्दू दुख कारी। है यही सरकार देखोंको अच्छी
दृष्टारी।}

श्रीकृ लख्जा के मेदूः

हे मेदू शोभा के जाने जै छो सत्यवादी नारी—टेक
पर पुरुषों से बात न करना, विहंग मन का साथ न करना—
पर घर बासा रात न करना, काम कथा मत गारी। जो हैं
इस आसान पर कभी न बैठो, पर पुरुषों के साथ न सेटो।
पिता ध्यान पत्त को तम में, बनो कुटुम की प्यारी। जो हैं
परं पुरुषों के अंग न निरखो, अंग की ज्ञात मत हर्यों—
कुटिल सरल को मन से परलो, तू नोचो नजर रखारी। जो हैं
हां बाद में खड़ी न होना, इकले घर में जाय न सेटा।
जैनी, समय न्यय ना जेना, तज्जय से सुख वहारी। जो हैं
कल्या विनय करे हैं।

अब करें बिनय, कल्या विनय करें हैं। अब भावन महा नदि भारी,
हम दूड रहीं अब सारी। तम करें उचार, कल्या विनय करै हैं।
अब भावन निम्न वानियारी, अब छाई कारी कारी। तम करें उचार,
कल्या विनय करें हैं। निया इस जग में व्यारी, छुए देतो। हमको
भारी—तम करें प्रचार, कल्या विनय करें हैं। विगड़ी है दुःखा
हमारी, तुम चेता घबरी ही नारी। तुम करो खुशार, कल्या विनय राहे हैं। तुम चोर अपरी दोरा, अध अपनी विशा खुशारी। त्यागी कुविचार, कल्या विनय करै हैं। चित्कृतो ले करके यारी, क्यों अपनी विशा खिजारी। करो जल्दी उपदार्त, कल्या विनय करै हैं। संती बंजना गयी निकारी, वह रोती बाँझ दारी। अध लहा शीघ्र में उग, कल्या विनय करै हैं। वह शीघ्र महातम भारी। वन में भी हुआ खुशारी। फिर मिट गये खुमार, कल्या विनय करै हैं। हा सीता शीघ्र अपारी, कृष्ण के अध्यास-संभारी। हुई अन्न जड़ धार, कल्या विनय करै हैं। में विनय कह ले कर जोरी, खुन के माताभो मेरी। करो शिशा संचार, कल्या विनय करै हैं।

लुशामद्र का महत्त

लुशामद्र हो से भामद्र है, बड़ी इस्लिए लुशामद्र है। टैक महाराज ने कहा एक दिन, बंगन बड़ा तुरा है।

लुशामद्र ने कहा, तभी तो, खेड़-गुरु नाम पढ़ा है।

लुशामद्र के लब कुछ रई है, बड़ी इस्लिए लुशामद्र है। टैक महाराज कुछ देर में बाँध, बंगन ली वच्चा है।

लुशामद्र ने कहा तभी तो, दिर पर भुजुट धरा है।

लुशामद्र में इतना मद है, बड़ी इस्लिए लुशामद्र है। टैक स्वामी दिन को रात कहे तो, वह तारे धमका देते।

यदि वह रात को दिन कह दे तो, सुरज भी दिस्कारू है।

लुशामद्र की भी कुछ हद है, बड़ी इस्लिए लुशामद्र है। टैक स्वामी कहें मंच कैसा है? कहें लुरा झूटकर है।

स्वामी पूछो घिस्ता जायज? कह दे जोध अमर है।

लुशामद्र है मला, मला बर है, बड़ी इस्लिए लुशामद्र है। टैक
दुःख का वसर ही नहीं।
कैले प्राणी के प्राणों का गात करै तेरे दिल में दुःख का वसर ही नहीं। जै तू हिरणों का बन में शिकार करै का लियोह लेनक का खतर ही नहीं। तेक। जैन चाण कुनो, ज़रा गोर करै, जान भीरों की अपनी सी ध्यान घरे, ज़रा रहम करै, अपने दिल में करै, प्यारे ज्ञान का अच्छा समर ही नहीं। १। मेले बन के पक्ष्य हैं दरते फिरें, मारे दरके तुषारे से दूर रहें। वो तुषारा न कोई विगाड़ करैं, उनका बन के सिया कोई घर ही नहीं। २। दुःख घाट चर अपना पेट अरें, बचन देष तुषारा न कोई हरें। प्यारे बच्चों से अपने चाली बाँटै करैं, उनके दिल में तेरे कोई सी शर ही नहीं। ३। कामो देवाओं ने इतने रवा हैं किया, भूला अपनी तरफ हो न है मलखा घड़ा। वरना पुरान कुरान में जीवों के मारन का, जाता कहीं भी झिकक ही नहीं। ४। दुःखमई हैं धरम सत जाना सही, जिन राज ने है यह बात कही। ठुलो। स्वामत बिना जिन घरे बंसी प्यारे होगा मुकत में घर ही नहीं। ५।
भूला है सांसार।
भूला है सांसार बाँल खोल कर देखो। तेक।
जिसे कहता मेरा नहीं दू। भेरा में तेरा सलनबी है सांसार। १। जीवितों के सब साथी; का घोड़ा कंट और हाथी। बलाये का परिवार। २। जब काल अचानक आये, तब-छट पकड़ ले जाये, चले न कुछ तकराये। ३। यहाँ बढ़े २ ये शाया बाजारे, सब ही की काल है जाये, सबसे दू सूर्य गांव। ४।
यह दुपने कैसी माया, का देश मार्ग में आया, जिन नाम घरे न बार। ५। जूँ सेह नीह में लेबी, और जन्म वृद्धा बयों खोजके, मिन न भाियाल। ६। जै प्रसुनो का घृण गाबे, लेस जन्म सफर के इठे यह जोड़ है। क्यों पुकार।
श्रीमान पूजा पंजी गणेशप्रसादजी वर्णी ।
बाबा भागिरथजी वर्णी ।
पंजी दीपचन्दजी वर्णी ।
पणानी | भव दुःखत वैपि ग्रासी, जिन यें वसत जिय जानी ||
चेतन सों खेलें हैरी, भान विचकारे, येंग जह लावे ॥ १११ ॥ तिम्बे
जब जग होते महिना फाग, करैं अलमार, सभी नरतारी || ऐं फिरे
फूंढ़े कर गुड़ाग विचकारे || जव श्रीमुनिवर गुप्तानांत्र अवतर
धर ध्यान, करैं तव भारी || कर शीर लुकारस करमन उगर दारी ||
( भढ़ी )—कोिति कुम ग्राम चनावें, करमि के फाग पचावें || जी
बारामाता गावं, सी || अति सागर पद पावं || यह भावें जीयां—
काल, धर्म गुप्तानांत्र, येंग दर्शावे || १२ || जिन अघिं लखारू

वारहमासा—राजुल |

राग मरहरी [भढ़ी ]
में लुंगी श्रोतरहन्त, सिद्ध मनमण्त, लापु विद्वानंत वारका लर्ना ल।
निष्कं नेम विन हमें जगतू कर्ना—|| टेि
आपात मास (भढ़ी)
संि भाया अवात धर घोर, मेंग वाघूंस्वर, मचा रहे टीरा
झहें समभावो ल। येंग प्रीतम को तुम पवन परित्राना थािवो || हैं कहाँ
मेरे मरतार, कहां गिरार, महावन धार वहे किम दम में || 
फरी
बांध मोड़ दिया तोड़ करा सीधी मन में ||
( असंति )—ज जारे परिवा जारे, प्रीतमकों दे समभारे ल।
रहिनी भव संग तुमहारे, क्रोण छोड़ दै हा मसभारे ल।
(भढ़ी )—क्यों विना दीघ भये रोप, नहीं सन्तोष, यही अफ-भोग
वात नहीं बुझी || दिये जारी घुपन कोड़ छेड़ क्था बुझी ||
मोझि रालो शरण मंडार, मेरे मरतार, करे उदार, क्यों दे गये
कुर नया || निष्कं नेम विन हमें जगतू कर्ना—
आवरण मास (भढ़ी)
संि आवरण संचर करे. समधरे हमें, दिगम्बर धरे करा ||
मेरे जी में ऐसी आवे सहात्र धरिये। सब तजुं दार स्तंगार, तजुं संसार, फौं सब संसार में जी मरमाँ। फिर पराधीन तिरिया का जन्म नहीं पाँच।

(भर्ते) सब्जुन लो राजडुलारी। दुःख पड़गया हम पर भारी।
तुम तज दी पीति हमारी कर दो संगम की त्यारी।

(भड़ी) अब भागा पावस काल, करो मत रात, भरे सबताल महा जल बरली। बिन जरे धोमणवत मेरा जी तरसे।
मैं तज दई तीज लड़ौन, पलट गई पीत, मेरा है कौन मुझे जग तरना। निम्न नें बिन हमें जगत खा करना।

आदें माल (भड़ी)

दिवि भादी मेरे तजाव, मेरे निषादाच, करेंगो वेसाव से संशोधकरण। कहं दृष्टिज्ञ के प्रति ले राप निवास्य। कहं रोट्टीप उपयोग, प्रक्षुमी अधाक, अधृती वास निशादम मनाँ।

तपकर शुमाब दशमी को कर्म जलान।

(भर्ते) सचि तुर्कर रस पी वारा। नजाहार चार भरकार।
कहं उध उध तय सारा। द्वियाँ तेज मेरा निजतारा।

(भड़ी) मैं रत्नराय तप धानं चहुदर्शीण सड़क, जगत से तिंक करं पकवां। मैं तम मे धमार द्विय मत तजुं सब राड़ा। मैं ततों तत्त्व विवाह, के गाँव संसार, तजा संसार

तो फिर का करना। निर्नय नें बिन हमें जगत खा करना—

आलौक माल (भड़ी)

सचि भागा वास छुँड़ा, तो भूलण तार, खुदे गिरनारं
को द्विय आया। मेरे पारिपात्र आहार को है प्रतिदिन।
को तार दे जूड़ामणी, रत्न की कणी, मुहों शव तज़ी वेल दे। बैनी।

सुभको अवश्य भरतारं हीरा लेनी।
बड़ा जैन-अन्ध्र-संग्रह

(फर्वरैं) — मेरे हेतु कमण्डलु लायों । इक पीछी नई मौंगाबो । मेरा मत जी मरमावो । मम घृंते कर्म जगावो ॥

(हड्डी) — है जगमें असाना कर्म, बड़ा वेशम, मोह के श्रमसे धृत न सुन्ने । इसके बल अस्त्या हित कल्याण न दूर से । जहां छाया लुण्डा को घूर, बहां पानी दूर, सत कर्तव्य मूर कहां जल भरना ॥

निन्नम नैम बिन हमें जगत् का करना —

कालिक माल (हड्डी)

सखि कालिक काल अन्त का, श्रीभक्ति, की लंब महत्तने अन्तां पाली । धर येगा यह सब मोक्षी लुण्डा राखी । जब बुध कृष्ण अस्त्यान, स्वण भस्मान, तत्वे व मकान महत दिवाभी । घनी उन्हें सिमे जिन घर्म बमावस काली ॥

(फर्वरैं) — उन के वह बान उपाया । जगता अन्तेर मिटाया । जिसमें सब विशेष समाया । तत्र धन सब अखिल बताया ॥

(मधु) — है अखिल जगत् समान, अरो मति तंत, जगत्का अन्त है धुम भए पताका । मेरे पीर ने सत जानके जगत् विसारा ।

मेरे उनके चरणकृते वेरी, तु सर्था देरी, हानि मा मेरी है एक दिन मरना । निन्नम नैम बिन हमें जगत् का करना —

अभयन माल (मधु)

सखि अभयन ऐसी घड़ी, उदै में पड़ी, मैं रहदाई खड़ी दरस नहीं पाये । मैंने सुख के दिन विष्ठा योही गँवाये ।

नहीं मिलते हमारे पिया, न जग तप किया, न सत्य किया

अटक रही जगमें । पही काल अनादिसे पापकी बेड़ी प्रेम में ॥

(फर्वरैं) — मत बहरौति मा आमारी । मेरे शहीलके लाने गारी ।

मत करो अन्त ध्यारी । मैं यागतान तुम संसारी ॥

(मधु) — हुए कल्त हमारे जती, मैं उनकी खती, पहला गई

रती तो घर्म नहीं खण्डू । मैं अपने पिताके बंशकी कैसे माँडू ।
नित्य निग्द्र अनादि रहो श्रस्के तनकी जहाँ दुर्भेषसाइ।
प्रोक घो निकले वह तेय ल्यों इतर निग्द्र रहो चिरंज्वाइ।
सुखम बादर नाम भयें जवही वह भाति घरी पर्यायी। बारहिं।
जय हो पृथ्वी जल तेज भयें पुनि होय बचप्पटीकाई।
तेह अघास घरी जव सुखम घातत बादर दीर्घताई।
एक उद्द प्रत्येक भयें लाह्म धारण एक निग्द्र वसाई। बारहिं।
इन्द्रिय एक रही चिरमें कव लहिण उद्द हकबं उपशमणाई।
वे रव चार घरी जव इन्द्रिय देह उदः विवलकण आइ।
पंच आदि किर्ती पर्यन्त घरे इन्द्रियक्षे चर काई। बारहिं।
काय घरी पशुकु रहे चर होय पंखके घर लगाई।
जय घल सांगी अकाश रहे चिर होय पंखके घर लगाई।
में जितनी पर्याय घरी तिनके घरणे कहू पार न पाई। बारहिं।
नरक महार लियो अत्यादर परी दुख मार न कोई सहाई।
जय लिखिते सुख काज किये भयें तब नरकमें लुखि आई।
ता तियके तनकी पुतली हवारे हियरा करि लाख मिराई। बारहिं।
लाह प्रभा सु मही जह हैं अन शकर रेत उनहार बताई।
पड़ प्रभा सु भुभाचत है तमसी सु प्रभा सु महातम ताई।
ज्ञान लाख लुपोख रिपेट तहां इकही बिनमें गाल जाई। बारहिं।
के अब घात महात हुकवायक में विषयासके फल पाई।
कारत है जबही निरदेश तबही सरिता मही देत वहाई।
हेम्ब्रह्मदेव कुमार जहाँ बिन पूरार बैर बतात जाई। बारहिं।
क्यों नरहेम मली कम सों करि गरसं कुवाल महादुखाइ।
जे नव मास कलेश के मधमुख अहार महाजय ताई।
जे दुख देखि जमिनको पुनि रेख बालपनतुकाई। बारहिं।
घोष में तन प्रेम भयो कहूं चिरहः नल भ्याखुलताई।
मान चिरं हस नींग चहो उनमत भयो सुख मानत ताही।
पुकारः पत्रोलोः

अथ यसो द्वारे विर्भाषणः से नर से इस माति गम्याई ||वार्धिणः||
देव भयो सुर लोक विवेच ्तव मैथि रही परया उर लाई ||
पाय विभूर्ति धेरे द्वारा पर सम्पति देखत सूरत छाई ||
माल जवँ मुरङ्काय रहेय विपुर जाति तरे विल-लाई ||वार्धिणः||
जे दुःख में सुगते भवके तिनके वरणे कही पार न पाइ ||
कास घनकिन्त आदि संदे ताहैं में दुःख माति हैं अर्ध माति ||
से दुःख जानते हो तुमहीं जबहीं यह माति घरोपर्यर्थी ||वार्धिणः||
कर्म अनुक्रोजः करे हमरे हमके चिरकाल भये दुःखदाई ||
में न विगाड़ करे इनके विन कारण पाय सये ओऽ आई ||
मात पिता तुमहीं सोंगके तुम छाँड़ि फिराइ दो रह जाई ||वार्धिणः
ले हुप सरा लब दुःख को पात्र जानत हो तुम पीर पराई ||
में इनके सत्संग खिये दिन दिन दिन भवत मैथि कुराई ||
बाँह महानिधि लूट लिये रह रख किये यह माति उराई ||वार्धिणः
में प्रभु एक सर्व सो लब थे हन पुराय को कुराई ||
पाप छु पुण्य छु निज मार्ग में हमको नन्ही फासि छु राई ||
मैथि थकाय दिये ह जगले विरहानल के देह न. कुमाई ||वार्धिणः||
वे विजित्य खुन लेखक की निज मार्ग में प्रभु लेव कामाई ||
में हुम दास रहो हमरे संग लाज करो शरणागति आई ||
में कर दास बदरास भयो हमरो शुभमाल सदा उर लाई ||वार्धिणः||
हेद करो मत श्री कर्मानिधि जु शत राधानाद निकाई ||
व्यायं जूरे कमले प्रसन्नजी यह व्यायं हजूर भयो हम आई ||
आन रहो शरणागति हीं हमरी हृदये तिहुतु देन ककड़ाई ||वार्धिणः
में प्रभु जी हमरी समके इन वरर पाय करो दुःखदाई ||
व्यायं न ओऽ न करो हमरे न मिले हमको तुम सी ठकुराई ||
सत्तन राख करो ओऽ पिया दुःखात देख निकात शादाई ||वार्धिणः||
दुःखः को सत्तागतच में हमको कहु जान परी न निकाई ||
शीलपहात्मयः

जिनराज प्रेम कीजिये सुभ दीन पर कहना। मैं वन्दूको अब दोलिये बस शीलका शानता। देव || शीलकी धारा में जो स्नान करे हैं। मध करमको सो घोष के शिवनार वरे हैं॥ प्रताराज नो वेताल व्याल काल दरे हैं॥ उपसर्ग वर्ग गोर कोट कहु दरे हैं॥

tap द्रान ध्यान जाप जपन जोग अचारा। इस शील से सव धर्मके मुंह का है उडारा। शिवपत्थ प्रन्थ मंथ के निर्देश निकारा। विन शीठ कौन कर सके संसार से पारा॥ इस शीलके निर्वाण नागरकी है भवादी। जेसठ शालका कौन ये ही शील स्वादी॥ सव पूज्य की पद्वी में है परंधान ये गाढो। अजार वहरे में वह। अवादो॥ इस सील से सौता को हुआ आत्र से गानो। पूर द्वार खुला चढ़निमें भर कुप सो पानी॥ फूप ताप दरा शील दे राती दिया पानी। गड़ामें ग्राह सों बची इस शीर्षके रानी॥ इस शोल होसे साँप सुमन माल हुआ है। दुबा वंजना का शील से उद्हार हुआ है॥ यह सिन्धुमें श्रीपालको आधार हुआ है। वमाका परम शील होसे यार हुआ है॥ द्रोपदी का हुआ शीलके अर्बर का अमारा॥ जा धातु हीप कृपण

ने सव कहू निवारा॥ सच चन्दना सती की वंथा शीलने टारा।
दारा, परिवार, किसी का न कोई साथी लव हैं अकेले ही। गिरिघर झाड़कर दुखिया न सोचकर, तत्पर ज्ञान बैठके एकान्त में अकेले ही। कल्याण है नाम रूप झूठे राव रंक भूप, अद्वितीय चितानन्द तू तै है अकेले ही। ॥ ५ ॥

अन्यत्र भावना।

धर बार धन धार्मिक दौरह बजाने माल, भूषण बसन बढ़े बढ़े ठोंठ न्यारे हैं। न्यारे न्यारे अवयव शिर बड़ा पाँव न्यारे, जीव त्वचा आँख नाक कान आदि न्यारे हैं। मन न्यारा चित न्यारा चित के विकार न्यारे, न्यारा है अहंकार सकल काम न्यारे हैं। गिरिघर शुद्ध बुद्ध तूते एक चेतन है, जग में है और जो जो तोसे सारे न्यारे हैं। ॥ ६ ॥

शाश्वत भावना।

गिरिघर मल मल सारूँ खूब न्यारे, धैर्य, कीमती लगाय तेछ बार बार बाल में। केवला गुणाव वेला मोतियाँ के लंधे इत्त, बाये खूब माला ताल पड़े बेटी चाल में। पहले बसन नीके निरख निरख काँच, कार कर देह का न तीव्रा किसी काल में। देह अपचित महा हाड़ माँख रक्त भरा, देह मध्युत्स का बंधा है नसजाल में। ॥ ७ ॥

शाश्वत भावना।

मह की प्रवृत्ता से कवयियों की तीव्रता से, विषयों में धार्मिक मात्र देखो फूस जाते हैं। यहां फूसे वहां फूसे यहां पिटे वहां कुटे, इसे मारा उसे, डाका पाप यो क्षमते हैं। पड़ते परन्तु जैसे जैसे हैं कवयि मनद, वैसे वैसे उत्तम प्रकृति रच पाते हैं। गिरिघर भुले मह बच काय येग, जैसे रहें सदृश वैसे कम बन आते हैं। ॥ ८ ॥
संधरभाषना।

तोड़ दांत ध्रम जात, मोह से चिरत हो जा, कर न प्रसाद कर पुगे लें दे कपाय तू। दूर हो विचार वात करने से विषयों की, माथे पड़ी छारी सह मत रक्तात तू। मन राख वाणी रोक रोक सब हिंद्रियों को, गिरिघर सत्य मानकर वे उत्पाद तू। रथणे न कर न करे निरपेक्ष हीके सदा, करतन्त्र गालन कर खूब ल्यों खुदाय तू। ॥

निर्जरा भाषन।

इससे न बात करो इसी यहाँ न भाले हैं, इस के खताओं मारे किंकूं द्वेष्वान हैं। कपटी कहती कर पापी अपराधी नीच, बौह बाकू; गठबंधन दुष्कर्म की खान है। राहूं विचार ऐसे डाल जो सतावे तोभी, सहले विपर्ययों को माने ऋण-दान है। गिरिघर धम्म पाले कितनी ही न बधि बैब, तपसेन नसावे कर्म वही झांतान है। ॥

लोक भाषन।

बांकी कर केन्द्रियों का जरा पांव दुरे रख, आदमी को बढ़ाकर गिरिघर ध्यान धर। चतुर्वेदि राजा लोक ऐसा ही है नराकार, उसमें मरे हैं द्रव्य क्षणों सभी स्थान पर। एक-कितिय दौनिय जिन्द्र। चतुर्वेदिय त्वों, फल्बलिन्द्र वन्य-संस्कृत पर्यायमय तरंग कर। मरे ही पड़े हैं जीव पर सब चेतन हैं स्वामिनाक करें ल्यों ल्यों पावें मोक्ष धारा। धर। ॥

बौधिदुल्लभ भाषन।

एक एक श्वास में भीराह गठार बार, मर मर धरे वेद जगजीव जानो। बड़ी ही कठिनता से निकले निगोदले तो, अगणित चार ध्रमे सव मव मानो। दुर्लभ मनुष्य मधव
सर्वोत्तम कुलधर्म, पाये हो गिरिघर तों सत्य तत्व छानले।
हूकर प्रमाद वश काल श्रेय करो मत, सबकी महाधार सबकी पिछानले। ॥ ११ ॥

धर्म भावना।
बाहरी दिखाओं को रहने न देता कहीं, सारे द्रोष
छुर कर सुख उपजाता है। काम, कौश, लेख, मोह,राग, व्यप,
माता, मिथ्या, कृष्णा, मद, मान,मल सबकी नसाता है। तत
मन चारों को बनाता है विविध और, पतित न होने देता
क्षण प्रकटता है। गिरिघर धर्म प्रेम एक सत्य जगवीच,
परमात्मतत्व में जो सहज सिन्धता है। ॥ १२ ॥

सामायिक।
हो सच्चे सखिपना, गुद हो गुणी पे। माध्यम स्थ माध
मम हृय विराजियोंपे। दुःखाते अथि द्वाधन हो द्वा ही
हो नाथ कौमट सदा परिणाम मेरे। ॥ १ ॥

धारु दुःखा डुपुटा डूलुटा सदा में। ल्यों सत्य,शैव,
भिय सयम भी न त्याग। छोड़ू नहीं तप, अकंचन, बहार्थ,
है रत्नश्चिम दुरस्तक्षण धर्म मेरा। ॥ २ ॥

में देवपूजन करुँ, गुरुभक्षीयाँ। स्वाध्याय में दच
दुसंयम आदरू में। धारु प्रसो तप, निरंतर दान दू भू में।
पदम ते-नितकलं जबली गुरी हूँ। ॥ ३ ॥

पारु महासुख प्रसो, दुःख वा उठाओ। लेंग पलंग-पर,
भूपर हो पड़ू वा। लेंगे तथापि समता अति उच्छ मेरी।
सामायिक प्रबल ही मम नाथ पेशा। ॥ ४ ॥

चाहे रूह मनमये, यन्त्रे रूह, या-प्रासाद में बल रूह
अथवा तुम्मै। लेंगे तथापि समता अतिवध मेरी-सामायिक
प्रबल ही मम नाथ पेशा। ॥ ५ ॥
दर्श कस्म अख्शानस्त्रों से, छुवे प्रग्राध अख्शानस्त्रों का।
हमारा राष्ट्रही जब है, स्वयंत्र्यक अहिंसा का ॥ २ ॥
विना जीते महारणके, न जीते-जी दहेंने हम।
तजों त्यों न तिलखर की, कभी रस्ता अहिंसा का ॥ ४ ॥
भों पालेजियां चल चल, हमें कोई चुलावे दें।
भुजवों में न खावें, दिखा विकम अहिंसा का ॥ ५ ॥
न हम नापक खूनों से, रूपें पाक दायरों का।
हमारा खून होता ही, विजय होगा अहिंसा का ॥ ६ ॥
कभी धीरज्ञ न ढांढ़े, नहां में शांति भर देंगे।
सिखवें सबक सब की, अहिंसा का अहिंसा का ॥ ७ ॥
हमारे हुतास्ने जानी भी, हींगे दृश्य कठ बाकी।
कहैं कर शुकाके थें, वतादो शुर अहिंसा का ॥ ८ ॥
तमना है, न दुनियां में, निशां भी हो गुलामी का।
सभी आजाद हीं के में, बोजे डंका अहिंसा का ॥ ९ ॥
बड़ा जैन-ग्रन्थ-संग्रह

ज्ञानाधर जी कर्म
नोट—कुछ करों में नामिकराज, द्रान्द देने में श्रेयांस राज, तप करने में बाहुबली जो एक साथ तक कार्योत्तर खड़े रहे। भाव की शुद्धता में भरत, चक्रवर्तियों के दीर्घ होने ही केवल ब्राह्मण हुआ। बलदेवों में रामचन्द्र, कामदेवों में सङ्कृमान, सतियों में सीता, मातियों में रावण, नारायणों में कल्यण, द्रविदों में महादेव, बलदेवों में भीम, तीर्थकरों में रामकृष्ण, वे पुरुष जगत में बहुत प्रविद्ध हुए हैं।

दूसरे सिद्धचरित्रों के नाम:

1. मांगीतरंग, 2. सुकागिरि (मेडृगिरि), 3. सिद्धवरकुट, 4. पारवागिरि (चेलना नदी के पास), 5. शेषुक्र, 6. बद्रवानी, 7. लोनागिरि, 8. लेनागिरि (लेनालंड), 9. दौलागिरि, 10. तारंगा, 11. हृषुगिरि, 12. गजपंथ, 13. राजग्रही, 14. गुलाबा, 15. प्रत्या, 16. केलिंगिरि।

चौदह गुणस्यान

1. मिथ्यात्र, 2. सासादत, 3. मित्र, 4. अभिरत सम्भूर्त, 5. देशवत, 6. अभिरत सम्भूर्त, 7. अभिरत सम्भूर्त, 8. अपूर्व करण, 9. अविश्वकरण, 10. छुँकम सांपराय, 11. ज्ञात्वान्त क्षयव वा उपशान्त्व मेह, 12. अक्षुण्ण क्षयव वा क्षुण्ण मेह, 13. स्मृयकावली, 14. अवयाकास्वली।

श्वेक के 21 उत्तर गुण

1. रवजयावत, 2. द्रवजयवत, 3. प्रमचत्त, 4. प्रतितिवत, 5. परद्धाप्राप्य, 6. पररास्त, 7. सौम्य दृश्ट, 8. गुणग्रही,
श्रावक की ५२ क्रियायें।

८ मूर्छगुण, १२ व्रत, १२ तप, १ समतास्मात, ११ प्रतिमा, ४ दान, ३ रक्तयज्ञ, १ जल-खण्डन-क्रिया, १ दार्शि-भोजन-त्याग और दिन में अनादिक भोजन साधक कर्म करना अर्थात् छानबीन कर देख-माल कर खाना।

श्रावक के ८ मूर्छगुण—प्रथम व्रतमय। ३ प्रकार।

१२ व्रत—प्रथम अणुवत्त, ३ गुणवत्त, ४ शिष्यवत्त।

प्रथम अणुवत्त—१ वहिंसाअणुवत्त, २ सत्याणुवत्त, ३ परस्मी त्याग अणुवत्त, ४ अचर्य (केरी-त्याग अणुवत्त), ५ परिप्रेय-प्रमाण अणुवत्त।

३ गुण व्रत—१ दिग्दश्वत, २ देशश्वत, ३ अनर्थ दंड-त्याग।

४ शिष्यवत्त—१ सामाचिक, २ प्रोष्टोपचास, ३ अतिथि-संविशार, ४ स्तोत्रप्रेरण परिमाण।

१२ तप—वाचार्य के ३६ गुणों में छिले हैं। इनके सी वही नाम हैं। जयद्वे इतना है कि मुनियों के महानु व्रत होते हैं। श्रावकों के अणुवत्त अर्थात् कर कर परीप्रावले।

११ प्रतिमा—१ दर्शनप्रतिमा, २ व्रत, ३ सामाचिक, ४ प्रोष्टोपचास, ५ सत्याणुवत्त, ६ जलमुखित-त्याग, ७ ब्रह्म-
चर्च, ८ आर्थम-त्याग, ८ परिप्रेक्ष-त्याग, १० अनुमति-त्याग, ११ बहुमत-त्याग।

४ दान—आहारदान, आज्ञादान, श्राक्षदान और अभय-दान। यहू ४ दान भावक को करने योग्य है।

३ रत्नत्रय—सत्यगृहर्षन, सम्यग्धान, सम्यक्चारित।

यह तीन रत्न भावक के दान हैं। इनका खुलासा अर्थ जैन-वाल्म-मुट्टिके के हृदय के साग में सम्यक्च के चर्चन में खिला है। इनका नाम रत्न इस कारण है क्योंकि जैसे कुलरास-कुदक सर्व धन में रत्न उत्तम चर्मावेश कोमत होता है। इसी प्रकार कुल नियम, प्रतिनिधि तथा, तथा में यह तीन रत्न में उत्तम हैं। जैसे कि विनय वर्तक विनियम किसी काम को नहीं। इसी प्रकार वन्धु इन तीनों के सारे प्रतिनिधि नियम शुद्ध भी फलदायक नहीं हैं। सर्व नियम, प्रति मानिष्ठ विनियम (शून्य) के हैं। यह तीनों मानिष्ठ शुद्ध के शुद्ध के हैं। इसलिए इन तीनों का रत्न मोना है।

दातार के २१ गुण—६ नवधामक, ७ गुण और ५ आभूषण।

यह २१ गुण दातार के हैं। अर्थात् पात्र के दान देनेवाले दातार में यह २१ गुण होने चाहिए।

दातार के नवधामक—पात्र के देख शुद्धाना, दृष्टि-सम पर वैषाला, वैवरण शोना, वाचन विनय वस्त्र पर बढाना, पूजा करना, सन् शुद्ध रखना, वचन विनय-रूप चेलना, शरीर शुद्ध रखना और शुद्ध आहार देना।
यह नव प्रकार फी भक्ति दातार है। अर्थात् दातार कहिए दान देनेवाले का यह नव प्रकार की नवाचारकि करनी चाहिए।

दातार के सातगुण—1 असंजवान, होना, 2 शक्तिवान होना, 3 अल्पमो होना, 4 द्वारवान होना, 5 भक्तिवान होना, 6 शुक्लवान होना और 7 चित्रक चार होना।

दातार में यह सात गुण होते हैं। अर्थात् जिसमें यह सात गुण दो हो वह सवा दातार है।

दातार के पाँच भूपण—1 अनन्दपूर्वक देना, 2 आदर-पूर्वक देना, 3 प्रिय वचन कहकर देना, 4 निर्मल माच रखना, 5 जनम लक्ष्म मानना।

दातार के पाँच दूरपण—1 विलक्षण से देना, 2 विस्मित होकर देना, 3 दुर्योग कहके देना, 4 नियामक फरके देना, 5 देनक पहचाना।

यह दातार के पाँच दूरपण है। अर्थात् दातार में यह पाँच वाले नहीं दोनों चाहिए।

ग्यारह प्रतिमाओं का सामान्य स्वरूप।

दोहा।

प्रणम पांच परमेष्ठि पद, जिन आगम अजुतार।
श्रीयुक-प्रतिमा पक्षिका कहूँ भक्तिन हितकार ।।

खेबा-श्रद्धा कर प्रत पाठे, सामायकिक द्रोप ढालै, पीली माँड सचित को तयारी, हों घटावं। साधारणकि परिहृ,
जैन-प्रथ्य संग्रहः

मैं अनादि जग-नाल योपित फैसि न हृप न जान्यो।
एकोऽंद्रय दे आदि जातु को प्राण हरान्यो।
ते अब जीव समूह सुने गेरी वचा करज़ी।
भव भव के अप्राण त्वमा कोस्यो करि मरजी। ॥१५॥

श्रव चतुर्थि स्तवन कर्मः

नस्यूँ आयम लिनवेद जलित जिन जीव कर्मः को।
संभव सब दुःखदर्पणकर्म अविवक्तु शर्मः को।
सुमति सुमतित्रितार तार भवसिन्धु पारिकर।
पर्वतम परमाः भानि वहसीति प्रीतिधर। ॥३६॥
श्रीदुःखपार्व दुःखपाल ताशं भव जाल मुखः कर।
श्रीचंद्रप्रस चंद्रकांति तम देह कांति यर।
पुष्पदीत दमि देशोदश मधि पेय रेखुपहर।
शीतक शोभल कर्म हस्त सब टाप श्रीरहर। ॥५४॥
श्रीरघुप जिन श्रेय वेष नित लंब भन्यजन।
बास्फूल्य शतपूल्य बालवालिक सब संघ हस।
विमल विमल शैलि हैम वन्त गति हैं श्रवण्ड जित।
थर्म थर्मे शिवकरण शानि जिन शानि विलाशिय। ॥६१॥
कृष्णू कृष्णू कृष्णू ज्ञनीवपाल वर्तनाथ जाल हर।
मद्वि महवत मेहवत मारण प्रर्वार घर।
सुनिशुवान प्रतकरण नमः दुर संघिति नमि जित।
नेनिनाथ जिन नेति धर्मरथः माशि हान घन। ॥६७॥
पार्वतानाथ जिन पार्वतपदव भोजरामपुरिति।
वद्रूपानाथ जिन नस्यू वद्रू सच्चुः करम्हात।
या विधि में जिन संबहप चन्द्रायः संघ्याग्रः।
स्त्राः नस्यू र्राः चार वार दर्दौ शिव शुक्कर। ॥२०॥
अत्र पचम बंदना कर्म।
बंदूः में जिनचौर्यों धीर महारिग्रहण समस्तिः।
वर्षमान अति चित्तरं बंदिनिे प्रवचनवतक्त।
निशाचार्यनुज महेशा धीरा विचारपरिति बंदूः।
बंदू नितिप्रिति कनकस्पेतु पाप निरक्षुः॥
सिद्धार्थ नूपर्यादृश्य हन्दु दुःख-दैष मिहार्न।
हृदरस्त द्वानन्द चमित्य ज्याठ जगीत्री उधार्न॥
कुंडलिपर करि जन्म जगतिजित्य आनन्दकार्न।
वर्ष वहचरि लायु पाय सच ही दुःख-द्वारा॥
सत्स हस्त तत्तु त्रृंग भायौ क्रत जन्म मरण-भय।
आधारप्रमाण क्रिय हेर बादेहि झारमय॥
देव उपदेश उपारित तारि मर्यन् श्रीवचन।
आप बसे शिवमार्गै तार्ति यद्दृश्य प्रवचनवत॥
जाके बंदन धकौ द्रोष्टु हुस दूरन्द्रि जावी।
जाके बंदन धकौ मुक्ति तिय सन्नुक लावी॥
जाके बंदन धकौ बंच होर्ते सुरगत के।
पैसे धीर जिनेश बंदिन्डः कमयु परिक।
सामान्यिक प्रद कर्म मार्हि बंदन यह पचम।
बंदे धीर जिनेश भद्रशतचं बंच मम॥
जन्म-मरण भय हरे करो अध्य शांति शांतिमय।
छै धार्मिकायु सुपाद्य दैष को दैष विनाशय।॥

अथ पञ्चम कायोत्सवं कर्म।
कारोत्सवं विकारण करू क्रांति सुखदारः।
कारोत्सवजन भय दैष काय सबकाँ दुःखदारः।
धृष्टिर्मयां तपस्व: दिशा पथिमि उसर मै।
जिन-शुह वर्तित कर्तं हशमं भव पाप-तिमिरे।।२६।।
शिवेनां मैं कह क्वं तपस्वं सर्व च स्वरे दरि क।।
आचार्यदिक किया कह मन चच मद मरि क।।
तोम ढोकं जिन स्वाव माइं जिन हैं जु भ्रात्रिम।
कृत्वम् हैं हथरंद्रीपमाहीं बंद्रों जिम।।२७।।
आठकोडिपरि झप्पन छाव जु सहस सत्याण।
व्यारि शातुङ्गरि धारि एक जिनमंडिर जायु।।
व्यारि स्वयं धारण जायु जिनमंडिर।
जिन-शुह बंदरं कर्तं हर्हुः सम पाप संधकर।।२८।।
सामायिक सम नाहि और कोइ वैर मितायक।
सामायिक सम नाहि और कोइ मैहीद्रायक।
शाब्रक अंग्रेज बादि औंत सतम गुणवाणक।
यह आचार्यक किये हौ किया विश्व दुःखाननक॥२८॥
ले भवि भाटम काज चरण छाव के भारी।
तक सच काज विदाय करो सामायिक सारी।
राज देष मह मैह कौंघ लोकारिक ले चच।
हुच महाराजे विश्व जाय तातै सीयो बच।॥२०॥
हूक सामायिक भाषा पाठ सपवाह।

श्रीअमितगति आचार्य विरिचित
(सामायिक पाठ संस्कृत)।
सर्वेषु मैं तो शुभिषु प्रमेर्, क्रिश्चु जीविषु कहाप्रत्ययम।
मध्यस्थांचं विपरीतवृत्ति, खुदा मधात्मा विद्वान्तु देव॥११॥
जैन-प्रांत्य संप्रभु ।

शरीरतः फर्तुमनन्तरशिक्ति, विमिश्रमात्मानमस्थायशेषम्।
जिनेन्द्र कोपाश्रय वहियाति, तव प्रसादिन्त ममास्तु शकिः॥१२॥
हृदेन हुच्चे चैरिणि कल्युच्यां, वेगे हियोगे सवचे खाने था।
निराखतापस्मभवचुःः, सस्म सनो मेस्तु सदापि नाथ॥१३॥
मुनीश्वर्जैनःविव कौशिकदिविव, सिंहरी निशाताविव बिस्मताविव।
वादौ तवश्रीयो मम तिङ्वतात लदा, तनो।धुंतानो हृदि दोरकाविव थ॥

पकः न्ययायाय यदि देव देविः, प्रमादत: संचारता इत्ततः।
क्षता विमिश्रा भक्ति निपीडिता, तदस्तु मिथ्या जुङ्गुरित्त तदामुः।
विस्मकमारमारिकहुःक्षितात्तिना, सया कपालकश्री दुःखिता।
चारित्युः देरकाविक लेरिन, तदस्तु मिथ्या मम हुःक्षत प्रमः॥१६॥

विनिम्दुःटेवं वहिःषैं, सनोधः: तायकपायलिमितम्।
विनिन्दित पार्श मदुःस्थिकाराय विनिपित्व मदवणौपिनिलिमितमृ॥६॥
अतिकाृ य च चिमनेवंतिकाृ, जिनातिचार नुसक्रितककर्मेण।।२६॥
ञ्ज्ञातनाामास्ति शिकृप्रमादः, प्रतिकाृ तत्स्य करोपि शुद्धी॥१०॥
शष्ठो तमशुद्धिविचेताकथिम्, च्वतिकाृ शोतवेनविलिकानमृ।
प्रमेयितिचार विषयेशुचरर्य, विस्तस्यनाचारमिहातात्सिकात्मम।॥१३॥
वद्वन्द्वमागापद्वतत्तत्ती है, मया प्रजादायाम दितस्याकानम्।
हने खःमिद्वारिनित्वादु देवी, ललस्तति देवशोपालिमितः॥१०।१॥
वेयिः: समाधि: परियामरुद्विवः स्वात्मोपतिविवः शिववृहस्यसिद्धिः।।
चित्तांगमि चिन्तितस्तुन्तुदाने, त्वानं बंधनावश्य ममास्तु देविः॥११॥
यः स्वयंते सर्वमाणनीमित्वादु, यः स्तुत्यते सर्वनामादिरकृः।।
ये भोयते वत्र धुरारणशाखे, व देवदेवी हृद्ये ममास्तम्॥१२॥
ये दर्शनदा नुसवतवमादः, समस्तसंद्राविकारवादः।।
समाधिगम्य: परमामहम्, व देवदेवी हृद्ये ममास्तम्॥१३॥
त्रिसुंचन पति हैं ताहि तैं छवि विराजे तीन।
अयसरा नाम बरेझ पढ़े बरण बाँधी। ॥ १५ ॥
सब निरंतर भद नाचे तुल सामंदल बीच।
कस्म मेंटे समता गांह नाँह लहे गति नोच। ॥ १६ ॥
दोई चोर झोरत अयस्र बौसठ थमर लगेद्र।
निरंतर हि भय कौ हेरे मध चलेक के चढ़े। ॥ १७ ॥
तत्त्व ब्रह्मक तुन हरत हैं कचि जीवन का झोप।
बालुकता कुल देटि के करै दिराझू गोक। ॥ १८ ॥
अंतर बालिन परिश्री लयाणी सकल इमाज।
संधासन पर रहत हैं अंतरींच निन्द्राज। ॥ १९ ॥
जौस भई हिन्दु मेहतैं यश सूक्त है ताज।
देह हुंकार रे के तब वाणे चला चक्कास। ॥ २० ॥
विन नहर इति रहित चित्तिर दिव्य ध्वनि होय।
हुद नर भदु सबसे सब संशय रहेत लेख। ॥ २१ ॥
वल्लित नुह तर के कुजम भुज बंदि बढ़े ओर।
फेलूत शुभ शुभासन हरपत माँच सब ठोर। ॥ २२ ॥
लक्कूद नाच नब दोष ग्राहि अर्ण्ड देंदु लगाम।
विष्णु विकर सबही तरे समर्थ है जन्न जन्य। ॥ २३ ॥
श्रीभाद चंडाल पुनि अजन भील भुजार।
हाय! हार! जाहि सब तरे अज हमारी घार। ॥ २४ ॥
नुह जन यह विचार टरे हुय जोड़ दिर वाय।
जब लों शिव नहि रहे तुव मक्की तद्व अब्द्वित्त। ॥ २५ ॥
शान्तिनाथायोगक स्तोत्र

नामा विविष्णभवं दुःखं रासी, नाना विविष्णं महानं पांशी। पापानि वोपानिहरंति वेवा, इस जन्म शरणे श्री शान्तिनाथं।

् १।। संसारं मथ्ये सिद्धात्मं निंता, सिद्धात्मं मथ्ये कर्मानि कदां। ते बन्ध छेदृंति देवावधि देवा, इस जन्म शरणे श्रीशान्तिनाथं।

् २।। कामलय कोवस्तय माया विलक्षं, चतुः कर्य इस जन्म बल्यमुः। ते बन्ध छेदृंति देवावधि देवा, इस जन्म शरणे श्रीशान्तिनाथं।

् ३।। जातस्य मरणं अवृतस्य दचनं वकस्ति जीवा वहुः हुः जन्म। ते बन्ध छेदृंति देवावधि देवा, इस जन्म शरणे श्रीशान्तिनाथं।

् ४।। चारित्र हीने ते जन्म मच्छे; कस्यक रहं प्रतिपलं यति। ते जीव छीर्दृंति देवावधि देवा, इस जन्म शरणे श्रीशान्तिनाथं।

् ५।। बुदं चाकाहिः ने काठनं चिंत्ता, परजीव हिसा मनसोच वंधा। ते बन्ध छेदृंति देवावधि देवा, इस जन्म शरणे श्रीशान्तिनाथं।

् ६।। परद्रुष कैसी परदार सेवा, हिसाहि कः अनुशं संखृं। ते बन्ध छेदृंति देवावधि देवा, इस जन्म शरणे श्रीशान्तिनाथं।

् ७।। पुष्ट्रिति विचारानि कलथं वंधं, इस बन्ध मच्छे वहुः जीव बंधं। ते बन्ध छेदृंति देवावधि देवा, इस जन्म शरणे श्रीशान्तिनाथं।

जपति पदति नित्यं शान्तिनाथे विशुद्धं
स्तवन मधु मिराशं, पापतापं वारं
शिवं छुबं निधिपोतं, चर्म सत्वासुखं
हठत खुनि युपन्मदं, सर्वं कायं सुनितं।

दति शान्तिनाथ स्तोत्र
सहावीराश्क स्तोत्र ।
कविवर भागचन्द्रजी कृत ।
शिक्षकी क्रंद ।

यदीये भैतकङ्गे मुकुर द्वे भाजारङ्गदचितः ।
सर्भ भानति धौर्य व्यय जनितलावताौतराषितः
जगत्लाण्डी भार्तमक दिवलार्था भारुर्विधोः
सहावीरस्वामित नयनपघगामि स्वतः मेन (नः) ॥१॥

वतानां यथकङ्गुः कमलयुगः स्पद्वरहितमुः
जनास्तोपार्थे प्रक्षतवित वास्त्वलर्थमालपि
स्कुर्ते मृचिर्यस्य प्रशंसितस्मयी वातिविमला
सहावीरस्वामित नयनपघगामि स्वतः मेन (नः) ॥२॥

सर्वचारात्मकाँ शुकर सरिष्मासात जयित
शस्त्रायाख्याताज्ञ यथिहह यथोऽयतः तद्युवान
अवक्ष्यातवाशाल्यः प्रसवति जलो वा स्वर्गमध्ये
सहावीरस्वामित नयनपघगामि स्वतः मेन (नः) ॥३॥

द्वद्रव्यमाग्नेन प्रसुद्दितमा वद्दुर्व इह
ह्याद्वात्तीत्वानं गृहगणसमूः हःशनिधिः
तमंते सजहाः भिवदत्रेवसमाजं बीमु ततः ॥
सहावीर स्वामित नयनपघगामि स्वतः मेन (नः) ॥४॥

कन्दनत्त्वंपासोऽसाद्यस्यवर्गततुद्धारः निवाहहे
विविखातमाण्डोकः नपतिवर्षिपः शर्त्वनः
अज्ञामाण्ड श्रीसागर विगायतमचगामाः सुद्धातिर
सहावीरस्वामित नयनपघगामि स्वतः मेन (नः) ॥५॥

यदीया वव्याती चिविधनयकोऽद्विचिमचः
शृद्धाकलाम्बॉसोरिलगति जनताः वा स्तववति

---

94
जैन-प्रत्य-संग्रह

च याको, बिरचन येग्य सही है। यह तन पाय महा तप-कीजिए,
इस में सार यही है। ॥ ८ ॥ मोग बुजै, मच रोग बढ़ावै, बैरी हैं
जग जीके। वे रस हैय विपाक समय धति, सेवत लागेन जीके। वज्र अनिन विपाक रे हैं वें, हैं अधिके दुःखःदाई। धर्मरथ
के चेर प्रबल बति दुर्गति पन्थ सहाई॥ १० ॥ मैह उदय
यह जीव अहानी, मोग महे कर जाने। यौं कोई। जन
खाय घूसू, ले जब कचन माने॥ यौं यौं मोग संयोग
मनोहर, मन चांहिल जन पावे। रुपणा नागिन त्यों त्यौं
हंसके छहर। लेकभ बिष लाबे। ॥ १२ ॥ में चक्री पद पाय
निरहठ, मौग मोग घनेरे। तोही तनक भये ना पुर्ण, मैहा
मनीरथ मेरे॥ राज समाज महा अघ कारण, बैर बढ़ाकन
हारा। वैश्वा नम दहरी भति चचल इसका कीन पत्यारा। ॥ १२
मैह महा रिपु बैर विचारे, जग जीव संकर डारे। घर
कारनगभ विलिता वेदौ, परजन हैं रखवारे॥ सम्प्रवर्षण
हान चरण तप, वें जिय को हितकारी। वे ही चार असार
और सब, यह चक्रो जीव धारी॥ ॥ १२ ॥ चौड़े, चीरुदर्श
नवोनिचि, छौ छौ लंग लायो। केटि बाठर तैरें। छौड़े,
चौरासी ठब हायी॥ हत्यारिक सम्पति बम्हतरो, जीर्ण
रुपासन लयागी। नौति बिचार नियोगी सुन कै, राज्य
दिया वह भागी। ॥ १४ ॥ हैय निस्सलय चनेर नृपति संग,
भूपण वश उतारे। श्रीगुरू चरण धरे तित सुदा, पंच
महा गत धारे॥ चन्द्र यह समस छुदुच्छ जगौतर, चन्द्र-वीर्य
सुंज धारी। ऐसी सम्पति छौड़ बले वन, तित पद थोक
हामाई॥ ॥

परिमह पोठ उतार सब, ढीनो चारित्र पंथ।

निज स्वचाव में धिर भये, बजनासि निर्ग्रम ॥
समाधिमरण भाषा

( पं० सुरचन्दजी रचित )

चन्दौ सुमायार्द्ध परस्म गुरु, जे सबको सुखदाई।
इसजगमे हुक को मैं भुगते, तो तुम जाओ राहे।
अग मे धर्म कहूँ निर्मले, कर समाधि उरमाइंह।
ब्रजसम्यमे यह चर माँगूँ, तो दीजे जगराइ॥ १॥
भव भवमें तन धार नये मैं, मय भव शुष्क लांग पायो।
भव भवमें नृप मंदिर खड़े मैं, मात पिता झुक थाये॥ ॥
भव भवमें तन पुष्प तनो, घर, नारीं तन ढीलीं।
भव भवमें मे भये दुष्कुल, आतमगृह नहिं चीने॥ ॥
भव भवमें सुरपद्द्वी पाई, ताके हुक धति सेगे।
भव भवमें निर्मल धर, दुख पाई विधवो।
भव भवमें तिरंद देवी धर, पायें। दुख वति भारी।
भव भवमें साध्वी जनको, रंग शिखे हितकारी॥ ॥
भव भवमें जिनपूजन जोनी, चुन झुपालहि दीनी।
भव भवमें समाधिमरणमें, देखे जिनपूजन भीने॥
पति वस्तु मिली मह भवमें, सम्पूर्ण गुरु नहिं पायो।
ना समाधिमरण मरण करा मैं, ताते जग भारमाये॥ ॥
काल अनादि भये जग स्रमते, सद्यु कुमराहि जोनो।
एक वारह सम्पूर्ण मैं, निम आतम नहिं चीने॥
जा निमें कोढ़ दान हैये तौ, मरण समय हुकमाई।
देह विनाशी में निजमायो, जोति स्वरूप सदाई॥ ॥
विपय कपायतं वश हैफर, देह आपने जाने।
कर संध्याशयकाम हिये विच, आमस नाहि निमानो॥
यौ कठेश हिय घार मरणक, चतौर गति मरसायो। सम्प्रक्षद्वन्द्वन हान तीन वे, हिर्देंभं तवं त्यायो।

दु: अत या अरज कहः प्रथु छूलिये, मरणसमय यह नानी।

रेघ जनित पीड़ा मत होऊ, अर्न कपाय मत जागो।

ये सुभ मरणसमय दुखदाता, इत हर साता कोजे।

जो समाधिषुत मरणाहाय सुभ, अर्न मिश्यासद छोजे।

तो यह तन स्वातं टुकुरात मई है, देखत ही चिन आये।

चर्म-छेत्री ऊँपर सतौ, भीकर बिढ़ा पावे।

अस्ति दुःखड़ अराचन सो यह, मूरक्ष प्रीति बढ़ावे।

देखः रिदाशी यह जचिनशी, मित्यत्रसू पहावे।

यह तन जोरेनु, छूटसम मेरी, यात्री प्रीति न कीजे।

तूतन महत् मिले फिर हमको, चामः क्या सुभः छोजे।

मृत्यु होनसे हाय चौन है, याको भयः मतः जावे।

समता से जै देखः तकोने, तो यहमः तन हुमः पावे।

क्षत्रिय मित्र उपकारी देरे। इस अवसर के प्राणी।

जीर्ण तनसे देव तनहे यह, या सम साद नाही।

या सेती हुमः मृत्युसमय नर, उत्सव अतिही फीजे।

कलौशादवी त्याग सराने, समतासाच्य धरीजे।

जो हुमः पूर्व पूणु किल्ले हैं, तिनको फलः दुःखदाई।

स्त्रुत्यमित्र विन कौन दिखाये, स्वर्ग सप्तवा भाई।

रागः दूको छोड़ स्वादु, वात विसन दुःखदाई।

अतं समय में समता घारो, पर मथ पन्थ सहाई।

कर्मः महा दुःख रैसी मेरे तासें दुःख पावे।

तन पिङ्गे में संध किये हुमः, जासौं कौन छुड़वे।

भूषः तुषः दुःख आदि अलेकन, इस ही तनमः गाड़े।

मृत्युदात जह अयाक्त तनः पिङ्गे से काड़े।
होऊँ नहीं क्वत्तर कसी में दोहें न मेरे उर आवे। 
शुष्क-प्रहण का माह रदे लित, हृदि न दोहों पर जावे। इकोई जुरा कहे या, अच्छा, 
शायद आवे या जावे, 
हाथी चुच्चे तक जीके या, चुस्कु आज ही आ जावे। 
बनवाम, कोई बैठे ही भय या झाड़ दें भावे। 
तो भी न्यायार्थ से मेरा कसी न पद डिगने पावे। 
होकर ठुलामें सम न फुठे, ठुलामें कसी न घबरावे। 
पवन-दृढ़-सामाजिक संयम ने नहीं भय जावे। 
रहे धडाड़-अक्षं निरल्ल, यह मत, हुबूत बन जावे। 
इथवियोज-दलितयोज में सहनशीघ्रता दिखावे। 
ठुली रहे सब जीव जगत के, कोई कसी न घबरावे। 
बैरि-पाप-नममान ढोड़ जग नित्य नवें मंगल गावे। 
घर, घर घरा रहे चर्मकी, ठुलट ठुकर हो जावे। 
झात-चरित उद्यत कर अपना मुज जन्म-फल सब पाँव। 
ईत-भोपति न्याय नहीं जग में, वृद्धि प्रथम पर हुया करे। 
बर्मिछु होकर राजा सी न्याय प्रजा का सिया करे। 
रूग-सरी-तुरिसक न फेंके, प्रजा शान्ति से जिया करे। 
परसम अहिस्सा-धर्म जगत में, फैल सर्वहिस्सा किया करे। 
हैले प्रेम पर्स्वर जग में, मेह दूर पर रहा करे। 
विपय-क्षुद्र-कठोर शब्द नहीं कोई जुर से कहा करे। 
बनकर सब "युग-बोध" हृदय से देशोत्सवित रत रहा करे। 
बस्त-स्वल्प विचार ठुली लें सब ठुलु संकट सहा करें।
पच परमेश्वर के १२२ मूल गुण

सौरता

प्रणाम श्रीत्वर्धनं, द्वाकाशित जिन्दरामके।
शुरु निरग्रंथ, महन्तं, अवर न मानूं, सर्वं श्रु
चिन गुण की पहिचान, जानें वस्तु समानता।
तत्त्वं पद्म वबानं, परमेश्वर के गुणं कह।
रागंद्रपुत्रं देव—माता हिंदुधर्म बुलः।
संग्रंथगुणं की लेव, लेका सिद्धान्ती जग भुमी।

अर्हतं के ४६ मूल गुण।

दूहा।

चौतीसों अतिशय सहित, प्रातिहार्यं पुनि बाघ।
अन्वं चतुर्द्ध गुणसहित, चौयातों पाठ।

अर्थ—२५ अतिशय, ८ प्रातिहार्य, ४ अन्वं चतुर्द्ध वे
अर्हतं के ४६ मूल गुण होते हैं। अव इनका सिंग सिंग, व्यवहार
करते हैं।

जन्म के १० अतिशय।

अतिशय रूप सुगंध तन, नाहि पल्लव, निर्दार।
पियपिउत स्नान अतुल्य व्यठ, वहर्षे श्वेत लाकार।
छठ्व शर्सस्थित तन, समच्चुम्पसङ्गठन।
श्रीमान्नमनाराचा हुत, ये जसमत दृश लान। II 6 II

शर्य—१ अत्यन्त घनूर शरीर, २ चाति दुःगम्यमय शान्त, ३ पलिविरहित शरीर, ४ पलिवीयरहित शरीर, ५ अव-पतिप्रभवत वेद्य, ६ अत्यद्वचन, ७ दुःरचतृ अव्यूष तंग, ८ शतार्य में एक हजार अध चक्र, ९ समच्चुम्पसङ्गठन, १० श्रीमान्नमनाराचछसंहन। ये दृश वातिष्ठ अर्घन्द भवनान के जन्म से ही दर्शन होते हैं। II 6 II

केबल द्राण के १० शतिष्ठ्य।

योजन शत दक्षिण सुभिल, भगनगर्मन मुख चार।
बाहि अद्वा उपसर्ग नहीं, नाहि कवलाहार। II
श्राव किया ईसूरपलो, नाहि बद्वै निवेश।
अगिमिकहृ छायारहित, दृश केवलके बोध। II 8 II

शर्य—१ पासून योजन में सुभिल, अर्थादि जिस स्थान में केबल हो उससे चारी तरफ बौधी करने शुरुआत होता है, २ बाकार में संग्रह, ३ चार मुखो का दीक्षा, ४ दिस्ताब्ज वाम, ५ पंक्तिगमरहित, ६ कार ( प्रास ) चर्चित आघार, ७ समस्त विविधार्थी स्वामोपत, ८ नक्षत्रशृंखला रहित्व १२ दुः चार्य रहित। ये १० शतिष्ठ्य केबलद्वार दर्शन होते से प्राप्त होते हैं। II 8 II

देव—कृत १४ शतिष्ठ्य।

देव रचित हैं चार दृश, शर्सस्तायमेको माण।
वाप्सलमांही। मित्रता परीम्य, निर्म, दिशा माकाय। गृहे।
विभाष्टि हृतावकायं नैत्र तथा हरिद्वादिगुणायकेषु।
कैशं स्नुतमणिरु यति ग्रथं महत्वं नैवं तुकाचशके से
किरणाकुतेषिपि। २०। मन्ये चरं हरिद्वादिप एव हृष्या
हृष्येदु पेशु हरसं त्यष्ठि तोपेन्दित। कं चिक्षितेन भवता
शुचि वेन नायः काँडिनस्नैन हरसं गाय भवान्तेषिपि। २१।
कृषोऽं शतानिः शताव्यो जनवच्यं पुओणा नायः हुंतर
त्वद्यमं जगती भस्यता। तच्चा किवा वच्यति मानि
हस्तरिष्यं भ्राच्ये विजयन्यात् स्वरद्वसुहालम्। २२।
ह्वामाणमन्ति सुन्यः परमं पुष्म्रं—पादित्वयणमेन तमसः
पुष्मातु ह्वामेव सम्प्रयुक्कभ्यं जगति मृत्युः नायः शिवः
शिवपुद्वल्ल सुहीदं पथं। २३। ह्वामाणवयं विपुसुमचित्तयम्
संहंस्यां च ब्रह्माणोपश्रेष्टमण्यकाण्डपन्नंकेतुम्।
योगोऽवर विचिन्ता
एवाणेकेचिक्षितं दानवध्रुवमभं प्रवर्द्धिति सचं। २४।
बुद्धावः विवुधाविसीतबुद्वन्वोवात्यं शंकरोऽक्षिदति सुवनरवच्यं
कर्णवास। वातावरि घोर शिवमार्गविधेयंविस्मातुः तवेसव
बुद्ववंच्युर्वोपेन्द्रि। २५। तुम्यं नरमहामुखानातिहरायं नाथ
तुम्यं नमः क्षिरात्तमहामुखाय सुम्यं नमलिङ्गाति परमेश्वराय
तुम्यं नमः जिनमारेवशिस्योपणाः। २६। केवैति विस्म
द्रोपदशृविविधानाय ज्ञानवर्गम्: स्वरम्णतेषिपि न क्षातोमिन्नतिः
तेस्विति। २७। उच्चारेेकत्सात्सात्तित्मयुसम्याभांति रूपम
मलं भवते बिदार्तम्। २८। उपश्रोतसुक्तिकरणमस्मापितान्व बिस्म
रवेतित्परेर्खपाश्चवर्ति। २८। हिरायं मन्यमुखार्या
विचिन्ते विश्राव्ये तच्च वपु: कन्काभादातं। २९। विस्मवं विचिन्ति
सददशुं ब्रतवातितानु तुकोद्वादिशिष्टीव षुकः। २८।
कुंत्वादादस्तहुक्ताचायहृमें विश्राव्ये तच्च वपु: कष्ठोत—
कान्तम् । उपचार्य:कुष्ठशिविनिमर्गवारिघारे—मुखेश्तर सुरगिरे-रिव शान्तिकोभस्म्। ॥ ३० ॥ छंदर्त्यं तं न्रित विभावति श्राशंकुक्षानं-सुमृतसिद्धतं स्थागिनतमाल्यतपाम्। ॥ ३१ ॥ गन्धकाउपरारजाल-चिंत्रितोभामूं प्रहायपचिन्तज्ञत: परमेश्वरतम्। ॥ ३२ ॥ गम्भीरान्तररूपरितिदिविभाग:—क्षैरलोक्यात:कुमार स्माषमूतिविद्य:।

इदं राजायमोघादीकोपारोप: सनो ते हृदयांशिजते यक्षो:। ॥ ३३ ॥ मन्दरधन:सन्दर्नेमेष्टुपारिजातसन्तानकाविशेष-मान्तलकृष्णस्वरूप: । गुंधारवृधिकुन्तुभमसन्दर्धस्तम्पता दिव्याविधा:।

पति सः ह्वन्नात्तत्तत्व: वयस्तत्तत्व: ॥ ३४ ॥ हम्रमप्रलयमय्युरीतिभ्यं भिन्नस्ते लोकायुक्तिमात्र न तिमाशक्यती। ॥ ३५ ॥ सुन्दरामुक्तोध्यरविश्व: हृदयाज्ञद्वयु: निशामिपि सोमसी:।

३६ ॥ स्मृतिस्मरणं गम्मभिन्नविश्वाभाग: सद्भरतस्तत्रकथ्येकपु: रितारक:। ॥ ३७ ॥ पुरुषोपवेदयाधिकवाक्य: पञ्चतुस्तिसंघ: मन्यक्लबश्चाभिमार:।

पाही पदाति तत्र यथा जनेन्द्र धर्म: पदाति तत्र बिंदु:। ॥ ३८ ॥ तत्त: निम्नानुवितां जनेन्द्र जयोऽपदेशमनिं पति। ॥ ३९ ॥ रथयोतम्भुक्तोविलितोकोपेक्षाकृतमन्नमुद्भयम:।

फणार्वाल्रूपमुक्तमहत्मापतनं द्वार अति वहतिन्न: ॥ ३५ ॥ विशवान्ताभिमन्पूर्वसंतत्वाय द्वीपग:।

वद्भकयं क्रमगतं हृदिवितोपिया नामात्ति कमुः चालनां-प्रक्षेत। ॥ ३५ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
समद्वीपिकर्षणष्टनीलत कोष्ठोडतं वाणिर्मुक्तणमापतनस्मृति ||
आक्रमणि कम्पिंगेश निर्ज्ज्वक्ष्मकमामागवमनी द्वादशयस्त्र रूपः || ४१ ||
वल्लुज्जनं तत्त्वं जग्निष्टानस्मानामाजो वर्णं बलबालमण्डध्वे भूपतिनामृ ||
उद्दित्तवकरमूँखर्वशालापिविदं त्वकैर्तः
नाम ह्वार्ष मिन्दुमुह्यिताः || ४२ ||
ज्ञानाग्निधिकाश्चतावारिष्टवा
सिवावेगावत्तावानुवेण्यामः ||
युवे जयं विजितहुर्जयं
यक्षशास्त्रकपाटपदपञ्चजनार्थिणो ततोत्तरे || ४३ ||
अन्यां नधीरा
श्रृंगितसीणनक्रकपाटीपीठाभयदांविवाहवाडशी ||
तः तद्राज्जी
शिरस्वित्त्वणपांश्चाणवाणम्वतः स्मरणते न वाणितमिती ||
ह्रद्वृष्टिवीणं तलेदरभारस्तुमां श्रीवचस्य दशास्त ||
शिरस्वित्त्वणामः ||
तत्त्रादपञ्चजनार्थिणोऽविधः
छात्राः-वाणित तत्त्रति मकर-नामज्जलयेवः || ४४ ||
अपांकणमवदास्तुक्ष्मचित्ताबोनयक
वणः बहुश्रुण्डकोटितिप्रमुखज्ञाः ||
त्वाममत्तमनस्यां मनवां: स्मरंत सचः
रूपं विगतावन्धवम् भवाणि || ४५ ||
मत्त्विप्रेमिन्द्रे
सुनगराजद्रावणानाहिंसामात्मारिधिमहादेवरक्षनाथाय ||
महात्म्यं
हु नामस्यायति तथा सिद्धेव वस्त्राकर्म-स्नातकेष्य
मत्त्विप्रेमिन्द्रे भवाणि || ४६ ||
हु नामस्यायति तथा सिद्धेव वस्त्राकर्म-स्नातकेष्य
मत्त्विप्रेमिन्द्रे भवाणि || ४७ ||
जैन-प्रस्तु-सुंदरह।

बावजूद के छूट आदि कुमार। सुक गये रेवाणट सार। कोड़ि पंच अर लाल पचास। ते बंदौं धरि परम हुलास। ११। रेवाणटी सिंधवरकृत। पश्चिमदिशा देव जहाँ छूट। है चको देश कामकुमार। ऊठकोड़ि बंदौं सवापार। १२। चड़वायी बचनय पुचार। दृष्टिप दिशा गिरिवृङ उतंग। इन्द्रजीत वहुं कृं जु जर्जा। ते बंदौं दिवसंगाररत। १३। सुबरणसह आरति सुनं चार। पावागिरिक शिखरमकार। चैटना नहों तीरके पास। सुकि गगे बंदौं नित तास। १४। कभी की श्रुवण्यार श्रुतयुप। पश्चिमदिशा द्रोणगिरिरूप। शुद्धचारि सुनी झुर जर्जा। सुकि गगे बंदौं नित तास। १५। वाल महावाण सुनि द्रैत। नागकुमार मले जय होय। श्रीमण्डपः सुकिमकार। ते बंदौं नित सुरसंगार। १६। अच्छा पुर्णी दिशा ईशान। तहां देवगिरि नाम प्रावान। साजुद्विन कोड़ि सुनिराय। तितके चरन नसूं चित हाय। १७। वंशमध चनके हिंग होय। पश्चिमदिशा कुंघगिरि सेय। शुद्धभूपण देसभूपण श्राम। तिनके ब्रजपनि करं प्रणाम। १८। महाराजां के छूट कहै। देसानकिंग पांचली लही। कोड़ि शिला सुनि कृष्णलिप्रमान। बंदू मंदू लोग जर्जा पांझ। १९। यमचक्षु श्रीपार्श्व जित्तद। रेजूर्गिरि नवनान्द। ब्रद्वारी वन शुल्किर। ते बंदौं नित धरमजिहाल। २०। तीन लेक्स के दौर पर बहाँ। नितानि बंदू कोटी तहां। मन चच कायसहित सितलाय। बंदू करहि सबके गुणगय। २१। संवत सत- वहलौ दक्ताल। अभिनादि द्रामी झुकिशाल। “मैया” हंदू करहि श्रीकाल। जयमिरणकोण गुणगमाल। २२।
बहा जैन-ग्रंथ-संग्रह

आयुकर्म ६
पुनि चौदी झुकठवठ, बहार तेरह हरी ।
इम घाति वदुविधि कर्म पुहूच्यो, समयमें पंचमगति ॥ २२ ॥
लोकशिर ततुचात,—वत्तमाहं सिद्धियो ।
वर्मद्रविचिन गमन न, जिति आगे कियो ॥
मधरहित सूरहो, अंबर जारिसो ।
किमपि हीन निजज्ञोलो, मयी प्रमु तारिसो ॥
तारिसो पंजे नित्य अविचल, अर्थ पर्जेय कुशाक्षरी ।
निरवचनों रसंतु गुणवं विवहार, नय वस्त्र गुणमयो ॥
वस्तू स्वात्विक विभाविकत, शुद्ध परशु न तरिसो ।
स्कंद परमांश्वमिदिर, सिद्ध परमातम मये ॥ २३ ॥
तनु रंगात्रतु द्रमिनिर, लब बिर गये ।
हेन श्रीग नक्षत्राशुप, जे परिणये ॥
तव हरिस्मुल चतुरविधि, सुरासन सुभ सरवे ।
मायामई नक्षत्राशुप, जिनतनु रचयो ॥
रथि घार चंद्रप्रसुह परिलिङ्ग, उद्य जिन जयसारियो ।
पदपवत अगनिक्षुसुकुचारण, सुविधि संस्कारिया ॥
निर्वाणक्लय्याणक कुम्हिमा, सुनत सब छोख पावहीं ।
भव ' रुपचंद्र , सुदेव जिनवर, अगत मंगल गावहीं ॥ २४

मंगल गीत ।

मैं मृत्तिहोन भगतिवश, माचन मांहया ।
मंगलrabbitृत्रघ्न छ, जिनगुण गावहया ॥
जो नर छन्ददिव शक्ताह, छुर घरि गावहीं ।
मनवांछित फल सो नर, निजनै पावहीं ॥
चहः दला।

श्रीयुत पंडित दोसवपरार्जी कृतं।

सौरता।

लील मुचन में सार, बीतराग विख्याता।
शिवस्वरूप शिवकार, नमः ज्ञेयोग सम्हारिके॥

भष्महाल—चौपाई छन्दः १५ मात्रा।

विश्ववनमें जीव अनन्त। सुख वाहु, दुखते भयबन्त॥
ताते कुलारी सुखकार। कहैं लीला गुरु कलाणाधार ॥ १॥
ताहि सुनो। भवि मनातिर। आह। जो बहाँ अपनोऽकप्यान।
मोह महा मद मियो अपादि। भूल बापे केवलम मादि॥ २॥
लास श्रमणकी है वधु कथा। पी कृपु कहैं। कही सुनि यथा॥
काल अनन्त निग्राण संभार। बीतो। पकोद्रि तन्पर धार॥ ३॥
एक श्वासमें अठहराबार। जन्मो भरो भरो दुख सार॥
विकल्प भूमि जल पावक भयो। पचन प्रत्येक वस्तुपति यथो॥ ४॥
दुर्भग लहिये चित्तामणी। त्यो पर्यंत जहै त्रस तथो॥
हट विपील अहि आदि शरीर। घरघर सरी सही बहुपीर॥५॥
कबूँ पवहन्द्रो पशु भयो । मन विन निपट बहानी थयो ॥
सिहादिक सेनी हृ । कृर्ष । निवस पशु हत काप भूर ॥ ६ ॥
कबूँ आध मयो बलहीन । तवल्लकर खायो अति दीन ॥
छेदन मेदन मृत्युर प्यास । भार बहनिम आचार तास ॥ ७ ॥
वच कंधन आदिक दुःख घये । कौति जीवनकर जात न भये ॥
अतिसंख्येश भावने मरो । भार शुष्क सागर में परे ॥ ८ ॥
तहाँ भूसि परसत दुःख इसो । बीड़ महसूस दसे नहीं तिसि ॥
तहाँ राध रोपित दाहिनी । कम कुठ कलित वेध द्वाहनी ॥१०॥
सेमहतर जय तश्र असिपत । बनि ज्ञां देख विदार्दे तन ॥
मैनकमान लेख गिजियार । ऐसी चीत उसना थय ॥ २ ॥
तिलर तिस करे देख के स्तंब । असुर निर्भावें दुःख प्रचंड ॥
सिद्धु बीरत्न प्यास न जाय । टी फण एक न बूढ़ बहाय ॥१५॥
तीन ढाक के नाज जो बाय । मिटे न भूस कणा न जाहाय ॥
ते दुःख बहु सागरलो लहै । कर्मयोगितां पस्याति छों ॥ १२ ॥
जनती चौद बलो नवमात्स । अंग सकुचते पर चास ॥
किस्ति जे दुःख पाये चार । तिरक कहत न भावे और ॥१३॥
वाकयापन में श्वान न छहो । तहम शमय तवणि धति रखा ॥
बद सुतक सम वृहापनो । कैसे एँ जैं आपनो ॥ १४॥
कः वकाम निर्जित करे । मंवत्रिक में चुर सन घरे ॥
विपयचाह द्वारात्तल देखो । मरं विदंय कंत दुःखवहाँ ॥१५॥
जो विमानवासी हृ थाय । स्मर्यंक्षरसावित्र दुःख पाय ॥
तहि चयात्वत तन घरे । यी परिवर्तन पूरे करे ॥ १६॥

द्वितीय दाल—पढ़्रीबंत १५ मात्रा ।
ऐसे मिठ्या दुःख शानचरण । वरा ब्रमते भरतं दुःख जन्म मयैं ॥
ताति इनकार तजिये शुजान । छुन तिन संक्षेप कहै बधान ॥ १॥
तीनो असिन अविन शुध, उष्णयोग की निध्रुल दशा।
प्राणों जहाँ जूगाजानवहार ते, 'तीन धा एकी त्या॥ ८॥
परमाण नय निश्चेष्यको न उचीन, अनुभवमि श्रीवै।
दण्ड-हान सुख-वल मय सदा नाहि, आन भाव जो ते चिनुँ॥
मैं साधन साधक में अवाग्र, कर्म अरत्सु पुरुः नित्य॥
चित्रपिंडच चंद्र अबंद सुगुण करंद्, च्युत्त। पुरुः कल्याणिन्त॥ ९॥
चों चित्र निमिन्त मधु मदु रित्र, अकृत्त जो आन्नदु चिन॥
सों चत्त्र नाग-गरेन्द्र का अहिंसिनं नाभि कहहो॥
एहां शुक्ली ज्ञानानि कर चढ़, धार चित्रि, कानन दृशी॥
सव लघुक्षा केनल हान करि मधु, ठोकर चित्र ग्राम कहहो॥ १०॥
पुरुः धारि चेत अधार विचि, चित्रमाही श्रीत्रं भू बसे॥
बस्क करम चिन्नि सुगुण वसु, साधना आविक चार दृशी॥
संघार चार अपार पारा, चारं तरि तीरि गये॥
अविकार अकल अरपुर्ण, चित्रित अविनाशी भये॥ ११॥
पुरुः माही लोक अज्ञान गुणं, पयाय प्रतिविभिन्त थये॥
रहि हैं अनन्तान्तर काल-वार तथा शिव परणे।
धनि धनं हैं जें जीव नर भव, पाय यह कारज, कायिः।
तिनहीं जानानी स्मरण पंच, प्रकार तज बर सुख देशा॥ १२॥
सुख्योपचार हुसेद यों बड़ः, भाग अर्द्रतय गये॥
अरु धरिगे ते शिव लहैं। तिनं, खुयंशजल जगमठ हैं॥
इम जानि भावल हानि साहस, ठानि यह शिख श्रादरो।
जबली न राग जसा गहे तब, हों जगत निजहित करी॥ १३॥
यह राग भाग इह सदा। तात्रैं समाजत पोज्ये॥
चित्र भजन चित्र समाय अव तो, त्याग निश्चेप होंजिये॥
कहा रक्षों पर प्रतिमें न तेरु, पद यहैं कनो दुख सहै।
अब दौँह वाज हस्ति सुन्दर रचि, दूर मत चूके यहे॥ १४॥
दौहा।
इन नव वस्त्र इन वर्षको, तोज सुकुल रेखाश।
करयो तत्त्वपदेश यह, लखि दुःख जनकी सार। ॥ १ ॥
लघु थी तथा प्रमादति, शब्द अर्थ की भूल।
छुरी सुधार पढ़ो सहा, जो पाचो भव कुल। ॥ २ ॥

श्रीजिनसहस्रांनामस्तोत्रम्।
(भगवन्चिन्तेनाचर्यैकृतं)
प्रविच्छन्दकल्याणेदलक्षण्त्वा गिरान पतिमु। नामनामद-भस्मेन तोष्टमोभस्मीभिषिद्धेये। ॥ १ ॥

तथ्या।
श्रीमान्मच्चयंभुतं वसः शंबवः श्रमुरात्ममुः। श्वयंर्मा: प्रमुर्मोका विश्वभुर्पुहसंच। ॥ २ ॥
विश्वात्मा विश्वलोकेशो विश्वलोकरक्षण। विश्वविष्कर्तविविदेशः विश्ववंस्योलिन्दीबः।
॥ ३॥ विश्ववस्त्रपा विश्ववर्गता विश्वलोको विश्वलोकाचः। विश्ववाती
विश्वाचं धासः श्रवणविश्वातिश्रवणः। ॥ ४ ॥ विश्वकर्मा जगत्येघः
विश्वमुर्िनीकायः। विश्वदुर्विश्वमुर्िवेशः। विश्वमुर्िनीरन्नीवः।
॥ ५ ॥ जिनो लिष्नुग्मेयत्स्मा विश्वरीशो जगत्यति। अनन्त-
स्निद्वनिन्न्यत्त्वमा भवयःवहुस्वत्त्वम। ॥ ६ ॥ युगादिपुत्रो भ्राता
पञ्जव्रहमयः। श्रावः। पर: परतर: सुःस: परमेश्वरी सनातनः।
॥ ७ ॥ श्वंस्वय्यैर्निरुपेत्रल्ल्यम् ब्रह्मणः। निर्येयोनिनि। मोहारि-
विजयि जेतां धर्मचक्रोधायलाजः। ॥ ८ ॥ प्रशान्तारितन्त्रपीत्ता
योगी योगी श्वाबासंत; भवयिधुभत्तत्वो ह्राशोदाविचत्वसः।
श्वर: II ६ II सिद्धो बुद्ध: प्रसुदात्मा सिद्धार्थः सिद्धशाश्वनः।
सिद्ध: सिद्धान्तविद्येः सिद्धास्थो जनगितः II १० II सही-
युक्तस्वविद्वासनः प्रसविद्युतस्वविद्वासनः। प्रमुखसुरजारोजारोजः
श्राजिष्ठप्रवर्जनः II ११ II विवाहवलसम्युषुषः स्वयंसृषुषः
पुराणः। परमात्मा परमज्योतिषिन्धर्जार्ज्ञपरमेवः। II १२ II

इति श्रीमद्यदार्श्नतमः II १ II

विन्यण्यायपरिलिपिः: पूर्वाक्यपूर्वशाश्वनः। पूर्वात्मा
पर्ययोगत्याविषयमांश्चको दस्सीवः। II १ II श्रीपरिमाणवार्त्तिहर्जेवः
विरजः:शुचि:। तीर्थकरक्षेलीशास्त्रः पूजाः: स्नातकासमंकः:
II २ II अनन्त्वीशिष्यात्मा: स्वयं: सुक्तः: शको
निरावजो लिखको भुवनेश्वरः। II ३ II निरवनो जगज्यो-
स्तिन्दकोकथिनिरामः। अचलस्थितितरित्रियोः: कूटस्थः:
स्थायुक्षरः। II ४ II

अग्नीप्रशांतिः प्रश्ने न्यायशाख्यातः। शास्त्रा चर्मपति-
थे न्यायमां धार्मिका चर्मितीपकः। II ५ II वृष्ण्ववो नृपानीशो
कृतकेनुर्वायुः।। कृषी: वृष्ण्ववर्तः वृष्णानी: कृष्णोऽद्भवः। II ६ II
हिरण्यनाप्पुर्तात्मा: भूतमूलबन्ताचावः।। प्रसोऽविभवी
सास्वेन सवी माते: भवान्तः। II ७ II हिरण्यगमः: श्रीगमः:
प्रभूतिविम्बोल्लः। स्वयंसृषु: सर्वदुः सार्थः सर्वं: सर्वस्त्राशः:
स्त्राशः सर्वलोकेशः: सर्वविश्वविवचंकजितः। II ८ II सुङ्गतः:
सुषुङ्ग: सुषुङ्ग: सुर्विकासुङ्गः।। विविधो विन्धवः: पार्थो
विश्वाशी: शुचिच्छवः।। II १० II सहस्रशीरः: श्रीताः: सहस्राशः:
सहस्राशः। भूतमनव्यक्तस्ति: विश्वविधा: महस्म्हारः। II ११ II

इति दिव्यादिशतमः II २ II
११४

तैन-मन्थ-लंग्रह

॥५८॥ नवादिसस्ये च इ०४१॥ सर्वस्य इ०४२॥ तदानीन्द्रियाः। युगविरक्षयाचतुर्थ्य: ॥ ५३॥ निरुपमेशागमन्तः ॥ ५४॥ लोपपालिखित वैक्रियाः ॥ ५५॥ तदिन्यप्रत्यय: च इ०४६॥ तैजस-प्रिय: ॥ ५७॥ शुम्भ विशुद्धमंन्याया वाहारक प्रसत्संगतावेऽैव ॥ ५८॥ नारकसम्प्रुक्तसनो नपुःसकानी ॥ ५९॥ न देवा: ॥ ५१॥ हेषाःक्रेण: ॥ ५२॥ लोपपालिकाचरेरस्मदेहाः संक्षेपेयाचरणायूप: ॥ ५३॥

इति तत्त्वार्थिनित्यादि माचाराने ह्विनिवेच्ये ॥ ५४॥

रत्ननमाकालेकालेकुद्यमानं महात्म: सामास्यमेऽ चाना-भुवाताकाराप्रतिष्ठित:। तत: स्वातच: ॥ ५५॥ ताप्त विशेषप्रक्षिप्तिः-प्रीतिश्रावविरिक्षयाचनकरा उहारणी पञ्च चेत यथाकरमः ॥ ५६॥ नारकसम्प्रुक्तसनो नपुःसकानी ॥ ५७॥ पग्रुप: न: रहिते हिन्दुरितुः। ॥ ५८॥ संहृतसुरुवैरितुः । बाधा जाकः चन्द्र्यः ॥ ५९॥ तेषास्वक्षरसु: शास्त्रशास्त्रविन्दितविनिधितवमाध्यायस्तवान: परा रिधित: ॥ ६०॥ जम्बुवीष्णुपवे: दादयः। शुभमानामनेव दौर्यस्मुर्दः ॥ ६॥ हिन्दुविन्दितकः: । पूर्वपुर्व-परित्रेष्यो वन्याक्षयत: ॥ ६२॥ नम्भये मेशनासमये को वैजन-शास्त्रशास्त्रविन्दितवें सम्बुवीष्णुः ॥ ६३॥ सरस्तहैवतहृविद्वेदधस्य-वहृत्यवतै: रोक्ताष्ठ: ॥ ६४॥ स्थान: पानमहिमत्विन्दितपनीतकोस्मिनिष्ठिरनो चर्चायनाद: ॥ ६५॥ तदिन्यमोचन: पूर्वाप्रायः। हिपवनमहिमविन्दितपनीतकोस्मिनिष्ठिरनो चर्चायनाद: ॥ ६६॥ सरस्तहैवतहृविद्वेदधस्य-वहृत्यवतैः प्रतिभः ॥ ६७॥ हेषाः क्षुद्रनस्तन्त्रनवैः तत्तथमहमः ॥ ६८॥ सर्विनिचित्रपार्व्य: वर्षी मूले च तुल्यविस्तारः ॥ ६९॥ एवंहस्त्वातिकाकाेकाकामहापुष्करेऽक्षुदरेऽकास्तादस्वेशाः ॥ ७०॥ इति ॥ तत्त्वार्थि दृष्येष्यामः ॥ ७१॥ ईनिनि तत्त्वार्थिनित्यादि माचाराने ह्विनिवेच्ये ॥ ७२॥
पुष्करम् ॥ १८॥ तद्भविषयादिश्रिष्टा हुदा: पुष्कराणि च ॥ १८॥
तद्भविषयादि देय्या: भोहौर्दृशिकीर्तिविविद्यः पत्योपप-
स्थितय: समामाणिकपरिपत्ता: ॥ १८॥ गश्रापिवरुलिङ्गस्त्रिष्टि-
तात्त्वाहिरिन्द्रकिताति सोतातौताति सैनिकानिरकान्तां कुणिर्दयय-
कुटारकारकोर: ॥ २०॥ द्वयोहर्यो: पूर्वा: पूर्वा: ॥ २१॥ श्रीपास्तवपरमः ॥ २२॥ चन्तुद्धशन्दीवहस्तपरिव्रूठा
गश्रापिवरुलिङ्गस्त्रिष्टि नव: ॥ २३॥ भर्त: पुर्विष्टिप्रभये: जननात-
विस्तार: पद्माचैकोन्तिदशितामहे चोजनस्य ॥ २४॥ तद्भविषयादि-
युणविस्ताराशर्वाचर्यवर्या चित्रेहान्तां ॥ २५॥ उत्तर दक्षिण-
तलया: ॥ २६॥ भर्ता: चतुर्भित्वष्ट्वदर्शितासौ पद्मयुवभार्यापकाः
पिलिक्ष्यवस्त्रिष्टिनिपूर्वामु ॥ २७॥ ताम्यामपतर भूमये: विशिष्टता: ॥
२८॥ परिवदिपोपस्थितयो: हैमवतकहारिवर्णकौः प्रक्त-कायः ॥ २९॥ तथोत्तर: ॥ ३०॥ विदेहियु सहिष्येकाकाचा: ॥३१॥
भविष्याविष्कारमेग: जम्मूद्रैपत्य नवतिस्वनिपराम: ॥ ३२॥ दिशात-
कोपकोप: ॥ ३३॥ पुष्कराणि च ॥ ३४॥ प्राणान्तुपर च तङ्गनाञ्चा: ॥
३५॥ अय्या: रन्तन्याण्व ॥ ३६॥ भर्तिरावनवितिरहः कर्मभूमु-
यापिन्यन देवकुरुत्तकरुकस्य: ॥ ३७॥ नृसिध्वी वरान्ते विप्लवे-
पमानानुसृत्तो ॥ ३८॥ तिम्मयो: चित्रेहान्ताः ॥ ३९॥

देवाप्पम्यकायाः ॥ ४०॥ आर्तितितिशु पीतान्तकेशाः ॥
४१॥ दुग्धमपेश्व द्रास्मादिर्धर्माः कर्णे: पपवर्ययतः ॥ ४२॥
इदत्सामानिकलक्ष्यस्यास्पारिधर्मादिर्धर्मास्वामिककाणस्य--
कामित्वायर्थाभिषिप्यायकाः ॥ ४३॥ याय्यातिस्तोऽपानस्य-
वर्ज्यानत्त्वस्त्रिष्टिनिपं ॥ ४४॥ पूर्वेऽश्रीदिपाः ॥ ४५॥ कामवस्त्रसारां
वा पैशानां ॥ ४६॥ श्रीप: स्फूर्तिपश्चाभ्य: प्रवीचाराः ॥ ४७॥
परेयाना: ॥ ४८॥ मन्मधवालिन्तासुराग्निविवु: नखराणिः ॥
तस्ततनिविद्विद्वकुमारं ||१००|| चतुरं || तिनारीविभु- 
संयोगपरमपद्धत्वकः समीतीभाषा || ११ || ज्योतिष्का: 
सृष्टिवृत्तं यत्यागः नूतनेके || १२ || महाप्रद- 
क्षिणा तिन्यागतेः माते कारविशालं || १३ || 
विहरवस्थंतः || १४ || शेषांकाम: || १५ || कहीपापः कल्या- 
वातात्मक || १६ || उपयुः परिः || १७ || गैयमेशाचिनानकुमार- 
माहेन्द्रत्रोम्धानालं तन्वशकंपाशुमक्षशुकशारसहारे- 
श्रवणशशस्यमर्यादाण्युत्योन्हृः || १८ || लिन्वस्य श्रवणे श्रवणे विचर्थ तयत् 
रातापराजितेः || १९ || तत्त्वतपि विद्वद्विद्विद्विद्वत: 
कृत्यां विद्वद्विद्विद्वत ति: सति- 
का: || २० || सारंपतातंत्रीभवमन्त्रं ददात्तायुवादाचारावा: 
रितायच्छु || २१ || विज्ञापितु द्विचरमा: || २२ || औपाव- 
प्रकाशनुस्च: || २३ || शैषाःतिम्ययानय: || २४ || शिबिरिकुर 
नागसुरवर्णीरेणवा: || २५ || सागरोपमच उघोपमान हृदमति: 
समेंत: || २६ || सागराय: || २७ || सान्तकमादिहंदु: 
लस || २८ || त्रिसततर्व: शादशुत्रेः || २९ || शाधकं शाधकं शाधकं 
कालित || ३० || शाधकं शाधकं शाधकं शाधकं शाधकं 
कालित || ३१ || शाधकं शाधकं शाधकं शाधकं शाधकं 
कालित || ३२ || शाधकं शाधकं शाधकं शाधकं शाधकं 
कालित || ३३ || शाधकं शाधकं शाधकं शाधकं शाधकं 
कालित || ३४ || शाधकं शाधकं शाधकं शाधकं शाधकं 
कालित || ३५ || शाधकं शाधकं शाधकं शाधकं शाधकं 
कालित || ३६ || शाधकं शाधकं शाधकं शाधकं शाधकं 
कालित || ३७ || शाधकं शाधकं शाधकं शाधकं शाधकं 
कालित || ३८ || शाधकं शाधकं शाधकं शाधकं शाधकं 
कालित || ३९ || शाधकं शाधकं शाधकं शाधकं शाधकं 
कालित || ४० || शाधकं शाधकं शाधकं शाधकं शाधकं 
कालित || ४१ ||
जैन-वृत्त-संग्रह

अजीवकाय धम्मप्रमाणकाशः पुढळः। ११।  ध्वन्याणि
१२। जीवाये नित्यावसिधितान्यः ध्वन्यार्थः १३।  रूपसिः
पुडळः। १४। वा अफळाकायस्याविधिः १५।  नित्यावर्मनि न
१६। अस्त्रैये याये प्रदेशः धम्मार्थस्मकजीवानामः १७। अफळाकायः
ख्यान्तः। १८। सहुः याये भाष्याये पुडळानामः १९। नाये
। २०। धर्मार्थमेवः गाढः २१। धर्मार्थमेवः। २२।
एकाधाराशः मायः। २३। अस्त्रैये भेघः
२४। गाढः जीवानामः २५। प्रदेशः तत्वाचिर्विपरीतः।
२६। नित्यावसिधिहः धम्मार्थस्येवः २७। अफळाकायः
ख्यानः। २८। श्याये वाणः। २९। प्राधारः। ३०।
३१। चुडः ख्यानः। ३२। प्रवर्तनः जीवानामः ३३। वर्षनार्थः
रत्नाकारिणः। ३४। प्रवर्तनः कालः
३५। स्पर्शरसग्नव्यवर्तः। ३६।
३७। निर्याऑः ३८। मेदायसः
३९। सद्देशः ४०। लक्षणामः
४१। उपाध्यायः ४२। सद्देशः ४३।
४४। तत्प्राध्यायः ४५। नित्यार्थः
४६। अस्त्रैयायः ४७। न जन्मगुणानामः
४८। गुणः
४९। सद्देशः ५०। गुणायः
५१। तत्प्राध्यायः ५२।
संवादादातामित्र गतांशतुरः समुद्रान्
सत्साध्याधामि कलशान् जिनवेदिकान्ते ॥३॥
( पुष्प चक्राति द्रुपरण करके बेदी के कॊमो में चार कलशों
की स्थापना करना चाहिए )

आधि: पुष्पार्यिर्द्वेदः परिमलवहलेनामुना चतुर्भीते
अमृतचेरसर्वभूतान्तः सुनिविधकर्त्चेद्वैमेकर्षिन्न्द्रः ॥
इति रूपेनिवेदी महंसन्धिवनमेकर्षिन्न्द्रः प्रतीपि-
धृपिः नायेरसर्वभूतानि: पुष्पार्यिरि फलारीसर्वाँ चायायम् ॥४॥
( यह पद्मार अगर चढ़ाना चाहिए )

दुराचलसंप्रदलायकिदेवादीकोडकोलङ्ग.
रञ्जिर्पूलकिर्मवसुरार्थिम् ॥
प्रस्वेद्यापमलसनांभवि प्रहृदेर्म-
क्रूत्या तरसिलितपि: बुद्धादामेविशेषः ॥५॥
( शुद्ध जल की घार प्रतिमा पर छोड़ना चाहिए )

भक्तया ललाटनश्वेन्द्रतिवेदिताचेते
हस्तीश्वरा: सुरवरः सुरमर्यायाचे: ।
तत्कालपीठितमहेश्वरस्य धारा
सचा: पुष्पाव जिनायमगतेत्व सुभानः ॥६॥
( इवरसकी घाराः )

उत्तीर्दवर्णवेदेममस्तिमात्मातां
वेदेवावलवायस्मात्मात्मातिर्त्वदि
धाराः घृतस्य शुभाग्नव्युष्णादेवां
चन्द्रेणैवत सुरभिमिश्यन्ते प्रयुक्ताम् ॥७॥
( दृष्ट रक्त की घारा - )
संपूर्णशारदशास्त्राद्रव्यमरीभुविज्ञान—
स्यस्त्रिवादमयशास्त्रामयस्मृति स्पप्तवाहिनीः
क्षरैजिनय: सुचितरसीप्रियज्ञानायामः
संपादकस्तु मम चिन्तसमीहि दिलो || १२२
( दूध रस की धारा १० )

dुर्गामभित्रविषयसंचितफेनराशिः
पाञ्जुमकालिनमब्राह्मणरायणात्मकः
( बाह्य रस की धारा १० )

dुर्गागता जिनपते प्रतिमा सुधाराः
संप्रदेशात् सप्तदि चार्चितसन्दये यः || १३१
( वाही की भाषा १० )

dुर्गापितस्य घुरणुदुपद्वीप्तुत्वाहिनीः
वर्तारुभरोपविधिनहंतमुद्धरस्मातः
( सर्वोपरि पित्र की धारा १० )

dुर्गामन्योद्धारशते रिव भव्यमुचा
पूर्णाः सुरवणलहस्तिनिकिलेवसासात्
संसार सागरविल्लुन्थतुस्तुतमा
प्लायेः चिन्तुभवनकरिति जिनेन्द्रम् || १५४
( फलों से अर्थपूर्ण )

dुर्गापरलयचन्द्रसार बचत: समाद्भै
रामोद्घातिसतसस्मान्तिविन्दताथां
षमुक्तितेन प्रसाद जिनपत्युवायः
प्रेमोपपाठनमानस्तृपत्तं चार्चितम् || १६१
( सूगाधित ज्वल को धारा १० )
मुक्तिश्रीवनिताकरोद्रसिद्ध पुएयादुगोरपार्वकां
नागेन्द्रलिङ्गचक्रकेदवोराज्यादिये केदकामुः
सम्यंग्बान्चराजशंभर्याससस्वरूपकामुः
कीर्तिश्रीदयसाहसकं तत्र जिन स्नानस्य गन्धोदकामु ||२३||
(यह तीनों पदङ्कर गन्धोदक लेकर मस्तक पर लगाना चाहिये)
इति कछुआँभेक पाठः।

विनयपाठः।

इदि विधि ठाड़ो होय के पथग पड़े जो पाठः।
धन्य जिनेष्वर देव तुम नाशे कर्म जु आठ॥१॥
अनंत चंदुप्रय के धनी तुम ही हो शिराताजः।
मुक्ति वधु के कथा तुम तीन मुखन के राज॥२॥
तिनें जग की प देः हरण भवृद्धि शोपतहारः।
हायक हा तुम विभि के शिव मुखी संतारार॥३॥
हर्ता अघ अंबियार के करता धर्म प्रकाशः।
थर्ता पद वातार हो धर्ता निरस्युष्ण पातः॥४॥
धर्माभृत दर जलवयो बान मानुतम प्रयः।
तुमरे चरण सरोज के नावत तिनें जग सूप्॥५॥
मैं वन्धु जिनेश्वर कों कर धर्म निरमल भावः।
कर्म बंदके छेड़ते और न कोई उपाय॥६॥
मविजन कों मांव कुप तें तुमसी कावन हारः।
दीनद्याल अनाृपाते अन्तिमगुण भंडार॥७॥
बिरवन्द्र निमेलं कियो गृहय करं रज मैल॥
शास्त्र करीया जमव में मविजनको शिव नील॥८॥
तुम पद पंकज चूसते विचर रोग टर जाय।
शारु मित्रता को घरें विप निद विषयन थाय। ॥ ८ ॥
चक्री खड़े धर इंद्र पर मिले आप अपनकम कर शिव पद लठी नीम सकल हन पाय। ॥ १० ॥
तुम विन में व्यकुल मये। जैसे जल विन मीन
जन्म जरा मेरे हरो करा मैह स्वाधीन ॥ ११ ॥
पतित बहु नावन फिने गिती की कहें करें।
जंजन से तारे उबो छु जय जय जय जिनदैव ॥ १२ ॥
शक्ति नाना संति दंगा विखि तुम प्रभु पार करें।
देवयिन्य तुम हैं। प्रभु को जय जय र जिनदैव ॥ १३ ॥
राग सहित जग में हो गोद लड़ागी देव।
बीतराम बैठो नवे नेतां राग हुन रेव ॥ १४ ॥
कित निग्रेद कित नादी कित तिरिक्ष महान।
जब चन्द्र नातुप कहे पायो जिनवर थान। ॥ १५ ॥
तुमके पूजे सुरपति अहिन्ति नरपति देव।
थन भाग मेरो मयो, करन लगो तुम लेव। ॥ १६ ॥
उसके के नम शरण हो निराहार आघार।
मैं हृदय भरतिजु में लेव लगायो पार। ॥ १७ ॥
इन्द्रानुक गए गति शक्ति तुम चिंतो भगवान।
चिंतो भाग निहार के कोजे भाग खमान। ॥ १८ ॥
तुमरी नेक खुदां लें जग उत्तम हैं पार।
शहा हवौ जात हो नेक निहार निकार। ॥ १९ ॥
लो मः कहा है और सों तो न मिठूं उर भार।
मेरी तो मेकराव चनी, ताते करत पुकार। ॥ २० ॥
बंदी पारों परं जुखु, जुखु जुखु, जुखु जास।
विश्राम हृदय संगल करत पूरान, परम प्रकाश। ॥ २१ ॥
हृ द्वितीय ज्ञानस्वाद द्वन्दवगुणितवद्वदाश्यङ्गक्रमः।
नाथ शाक्तक्रमः फलं निर्विपाकस्तत् स्वाहा।

हृ  वास्तवार्यतारूप्यविगृहणक्रमः।
पाठ्य सबलायुष्माय शाक्तक्रमः फलं निर्विपाकस्तत् स्वाहा।
सहारागृहणक्षत्रपुष्पालनः।
फलीतिमिथिविशिष्टमुख्येवाच ज्ञानेतिध्यानन्तज्ञानी यथेष्ठमारः॥

हृ  प्रत्यज्ञानेनन्तज्ञानेन शास्त्रविद्या।
वर्त्तमानविद्याशुद्धिः।
हृ  वास्तवार्यतारूप्यविगृहणक्रमः।
पाठ्य सबलायुष्माय शाक्तक्रमः फलं निर्विपाकस्तत् स्वाहा।

ये पूज्य ज्ञानाधारायत्नः सकय सदा कुर्वते।
सृजन्य सुसिदिकम्भरवत्नानमुकार्यत। नरः॥

पुष्पां भृहा मुनिराजनोपरित्सहितः।
नोत्रु नपेतूपणाः सदा।
सकलाविषयवाच्चुरां सिद्धि लभने परामः॥

इत्यङ्गीरावर्तः ( पुष्पांजलि श्रीपण करना )

वृषभोजिनितनागा च संभवस्थितिनन्दनः॥
सुभाति: प्रार्थनां शु ग्रास्यो जिनस्ततमः॥

चन्द्रास: पुष्पवतः श्रीतो भगवान्वनैः।
श्रेयं भवसुपुष्पवक्ष चिमले चिमलकृति:॥

अनन्तस: धर्मराजां न शान्ति:।
भरस्म मिश्रितो श्रुतो नमितार्थः॥
हरिवंशसमुदंपुरेराजिग्रनिविनिवेत्तवरः।
भव्यताप्रसन्नराज्यतारी: पाश्ची नागोऽन्तपुजितः॥८॥
कस्मान्तकमहाविशा: सिद्धार्थकुलसम्भवः।
पते जुगसुराक्रेण पूजिता विमलज्तिरः॥४॥
पूजिता भरताधीशं भूकेत्रेषु विरूपितिः।
चतुर्विधस्त्व सद्ध्रस्त्व स्वरूपित कुर्विन्तु शास्त्रविश्वाम्॥६॥
जिने भक्तिः भक्तिः भक्तिः भक्ति: सदास्तु में।
सम्यक्तमेव संसारावरणं मातकारणम्॥८॥

(पुष्पांजलि ह्येषष्ठ)
श्रुतं मक्ति: श्रुतं मक्ति: श्रुतं मक्ति: सदास्तु में।
सम्यक्तमेव संसारावरणं मातकारणम्॥८॥

(पुष्पांजलि क्रपण)
गुरुभक्तिमुर्दीभक्तिमुर्दीभक्तिः सदास्तु में।
चारितमेव संसारावरणं मातकारणम्॥८॥

(पुष्पांजलि ह्येषष्ठ)

चषथ देव जयमालाः प्रकृत् ।

वत्तारंतः जनंत्तारं प्रद्योगितव तुहु खचंधरः।
तुहु चरणविधाः केवलजाः तुहु परमपव परमपव॥५॥।

जय रित्सह रित्सर भंगमियपाय। जय अतिज नियः
गारीसराय। जय समक्ष समबक्य विभ्राय। जय अहिंग-
जय सुमह सुमह समयपरास । जय प्रजनपह पुजमः गिवास । जय जयहि सुपास सुपासनाग । जय चंद्रपह चंद्राहवच ॥
जय पुप्फयंत दंतंतरंग । जय सीचिल सीचिलवयादशंग । जय सेय सेयकिरणोहसुज । जय वासुधु पुजाणपुच ॥ ४ ॥
जय थिमल थिमलपुणलिविराप । जय जयहि अरणंताौर- तणाण । जय धम्म धम्मतिथ्यय संत । जय सांति सांति विहियायवच ॥ ५ ॥
जय कुण्य कुण्यपहुँचिविसंदं । जय भर भर माहर विहियसमय । जय मल्लि मल्लिांविरामगंध । जय मुखिसुवच्यः वुचिविलिवंध ॥ ६ ॥
जय रामि रामियारामियरसामि । जय बेलि धम्म- रहकरेमि । जय पास पासछंदरणकिवाम । जय चंद्रमाण जसवब्रह्माण ॥ ७ ॥

इति
इह जाणिय णामहि, दु:ऽनिर्वियारामहि, परहिवि णामिय धुराच- लिवि धणहनहि अणाहि, समिकुवाहि, पणविभि अरहंतवळिवि ॥

ई ई हृद धुष्मकादतिमहाविरान्तेयोक्यं महार्यं निवृंभामोति सवाहाण ॥ १ ॥
देवशाळामूलयोऽवरः पदप्राप्तायेयो अध्य निर्विपामिति
स्वाभाषिकतः

अथ जयमाला

deवशाळामूलुर रत्न श्रृङ्ग, तीन रत्न करतार।
शिब सिच कहँ भारती, अल्प सुर्यण विस्तार।

पद्रद्धि चबुद्ध

चक्रकर्म्यक त्रेिसठ प्रकृति नामि। जीिे अश्वश्वादहोऽपराशि
के परम सुगुण हैं वरम थीर। कहृत्र के च्रांक्तिर शृङ्ग
गूङ्भीर।

श्रुतिमवस्तुण्या शोभा धाराव। शत इन्द्र नमस कर सोसीा
यार। देवशाळामूलक अर्हत देव। चतुः मनवचतनकरि शुचीषेव।

जिन को भुिणि हैं वीकारूप। निि अक्षरमय भर्मसा
अनुपुणू। इस्व अथ महावाणिया समेत। लघुभाणा सात शतक
सुवेदन।

तस्या स्वाधीन्यं सतभंग। गणधर गंधे वारदखुशंग
रत्न शाश्रित न हरै लो तम हराय। लो शाश्र नमोऽहु भृति
हयाप।
गुरु अचार्य दयभाव साध। तन नगन रत्नमनोविधि अगाध। संसारदेहवेराग भार। निरवांछि तपें शिवपद निहार॥ ६॥

श्रेण ललित पवित्र अह चोस। भव तारन तरन जिष्ठ। श्रेण को महिमा चरनी न जाय। श्रुत्नाम जणोऽ मनव चनकाय॥ ७॥

सोरठा-तीजी शक्ति प्रमान, शक्ति विना सर्वथा घरे। 'धान्त' सर्धावान, अजय बमरद्र भीवेः॥ ८॥

ॐ हि देवशास्त्रगुरुभ्रो महाद्वयं निर्विपामीति स्वाहा।

चोस तीर्थकर पूजा भाषा।

दीप अढ्दाई मेऱ भान, अव तीर्थ कर्दोस।
तिं लघुभी पूजा करुः, मनवचतन भरि शोक॥ १॥

ॐ हि विद्यमान विशालतीर्थ कराः। अत्र अवतरस अवतरस।
संवृपत्।

ॐ हि विद्यमान विशालतीर्थकराः। अत्र लिहित लिहित। ठठः।
ॐ हि विद्यमान विशालतीर्थकराः। अत्र सम सतिहिताः
भवत्भवत् भवत। वपद्।

इद्द्रयस्दन्विन्दुर्ध्वं ध्वं, पद निर्मवधारी।
शोभानीक संतार, सार श्रेण हृं अविकारी।
श्रीरामचिदम नीरसों ( हे ), पूजां तुषा निचार ।
सीमंधर जिन आर्द्रि दे, बीस विचेदमभार॥
श्रीजिनराज हो सव, तारेन्तरणजिहाज ॥१॥

ॐ ही विचमानविशालतिथियकरेयो जनममुत्युविनाशाय
जलं निर्वामाचति स्वाहाः ॥

यदि भीस पुंज करना हो, तो इस प्रकारसंत घड़े ।
ॐ ही सीमंधर-युमंधर-बहु-सुवाहु-संजात-स्वर्गार्थ
अष्टभानु-कल्याण-सुवाहु-दिववाहु-विशालकान्ति-वज्रधर-चन्द्रानन-चन्द्रवाहु-भुंजगम-निवास-नीर-महाभ्र-देवेश्वराचारी
तत्वीर्याति विशालेश्वरतिथियकरेयो जनममुत्युविनाशाय
जलं निर्वामाचति स्वाहाः ॥२॥

तीन लेक के जीव, पाप आताप सताये ।
तिनकों सता दता, शीतल वचन सुहाये ॥
चान जंडसें जङ्गुः ( हे ) भूपनतपन निर्वार । सीमा ॥३॥

ॐ ही विचमान विशालतिथियकरेयो सचातापविनाशाय-चन्द्रानन निर्वामाचति स्वाहाः ॥४॥

यह संसार अपार, महासागर जिनस्वामी
ताँ तारे बड़ी भक्ति-नौका जग नामी ॥
उदिल अमल सुगंधसों ( हे ), पूजों तुम गुणसार । सीमाँडीश॥

ॐ ही विचमानविशालतिथियकरेयो अक्षगुपद्ग्रास्य
अक्षतानु मिर्चे ॥
भविक-तरोज-विकालि, नियतममहर रविसे है।
जति आचक आचार कथन को, तुम्हीं चढ़े है।

पूलालिसक अनेकः (हो), पूजः मदन प्रहार। सीमं।

ॐ हँ विधमान विश्वतीतीथिकरेः: कामवाणविध्वंसनाय
पुरुषं निर्व।

कामनाग विप्राम्-नाशको गुण्ड कहे है।
छुभा महात्ववाल, तालुको भेग लये हो।
नेवज वहू धूत मिष्टेः (हो), गौना भूष चिडः। सीमं।

ॐ हँ विधमानविश्वतीतीथिकरेः: चुधारिगविनाशनाय
नैवेिः निर्व।

वद्यम ह्वान न देत, सर्वः जगमांिि भर्गो है।
मेह महातम घोर, नाशा परकाश कर्मी है।

पूजः द्रीपकाशालो (हो) हान्वन्यातिकरताः। सीमं।

ॐ हँ विधमानविश्वतीतीथिकरेः। मेहानंजिकरविनाश-
नायावर्णः निर्व।

कर्म अाः सव काठः-भार विस्तार निहारा।
ध्वान जगनिक प्रगट, सर्वः कोमं निर्बारा।

धूष अनुपम बेखरः (हो), दुख जमे निर्वार। सीमं।

ॐ हँ विधमानविश्वतीतीथिकरेः। विध्वंसनाय
पुरुषं निर्व।
सिंधुप्रूजाका भवायकः

निवजनीमणिभजनेयं समस्येकसहस्तित्वाः।
सकलोखकारणोपजसं शहजसिद्धमहं परिपूजये॥१॥ जलम्
शहजकर्मकद्व क्विनाशनेऽर्मवाशस्मापितबचन्द्रः।
अनुपमान्गुणिरपिलायं शहजसिद्धमहं परिपूजये॥२॥
चन्दनम्।

शहजाधवसुनिर्महतंदुःकलादोषविशालविशोधनः।
अनुपरोघतुधुरोधिनिधानं सहजसिद्धमहं परिपूजये॥३॥ वक्तनानं
समयसारसुपुपंसहलय सहजकर्मकेन विशोधया।
परम्योगवें चंदीक्षकं सहजसिद्धमहं परिपूजये॥४॥ पुष्पम्।
अहातबधसुखद्विधे विधुपिकोषितजातजारामकोषः।
निरघधिप्रशुपातिमगुणायं सहजसिद्धमहं परिपूजये॥५॥
नैवेद्यम्।

शहजरतलचिन्द्रत्रिपकं चंद्रनिमित्तितम्। प्रविभायनः।
निरञविलसविश्रायविकः: सहजसिद्धमहं परिपूजये॥६॥
श्रीपम्।

निजगुणाक्षयसुधापूपायनः: स्वगुणदायात्मकप्रतिविभायनः।
विशादबधिङ्गुधुर्धवार्त्तकं सहजसिद्धमहं परिपूजये॥७॥ श्रीपम्।
परम्यवस्तववस्तवतिस्मपः: सहजाधवनाभावचिद्यो-प्रया।
निजगुणाःस्फुरणात्मातिनिर्मालं सहजसिद्धमहं परिपूजये॥८॥ फलम्।
जैन-ग्रन्थ-संग्रह ।

नैचरोनमीतिविकाशमाचारनिवैरत्यन्तराब्धाय च।
वाराण्याक्षतपुष्पदामचरकैं सदृशपुष्पं फलं।
यत्यथानमितिसुदरमाचारपरमहानात्मकेन्द्रस्यदेवतैं
सिद्धं सुवादमागाधोधमचलं संचर्चयामो वयम्।

अध्यायः

सोतलहकारणका अर्घः

वद्वचन्दनंतन्तन्दुलण्णकैशरसुद्रीपसुरुषुपतलार्धकैं।
धवलमकुलगनरवखुलं जिनगृहे जिनहेतुमहं यजे॥

कौः हि दूर्शनविश्वददयादिसोड़कारपेतस्यो अध्यं निर्वापाय
मोति स्वाहा”

द्वालस्तादस्मका अर्घः

वद्वचन्दनंतन्तन्दुलण्णकैशरसुद्रीपसुरुषुपतलार्धकैं।
धवलमकुलगनरवखुलं जिनगृहे जिनधर्मस्महं यजे॥

कौः हि अर्थेनुकसकलमुनिमोत्तुस्तोत्तमकीमार्दीवार्त्तत- सत्यशौचसंयमतपत्त्यागाभिक्षुप्रमायल्हचार्यांशालाक्रयिकथमें:-
वेदा अध्यं निर्वापायमीति स्वाहा

रत्नचयका अर्घः

वद्वचन्दनंतन्तन्दुलण्णकैशरसुद्रीपसुरुषुपतलार्धकैं।
धवलमकुलगनरवखुलं जिनगृहे जिनरत्नमहं यजे॥

कौः हि अयोद्धयस्मर्याध्याय अयोविधासम्यवादनाय योद्धप्रकारसयक्खचारिनाय अध्यं निर्वापायमीति स्वाहा॥

बीस तीर्थकर पूजा की अर्चना

भव अद्भुत भ्रमत बहु जनम धरत अति मरण करत
रह जरा की बिपत्ति अति तुङ्क पायो।
ताति जठ्ठ स्थायि तुम दिग आयो शांत सुधारस जब पाये। !
श्री बीस जिनेश्वर इत्य निवेश्वर जगत महेश्वर मेरी बिपत हरो। मव संकट खंडो आरंद मंडो मोहि निजातम छुड़ करो। !!
पर चाहं अनह़ मोह दृहत सतत वनि दुःख सहत मव बिपत भरत तुम दिग आयो।
ताति हे बाबत तुम अति पावल दाह मिटावन सुख करो। !!
फिर जनम धरत फिर मरण करत भव भ्रमर भ्रमत बहु-नारक नट अति थिकित भयो।
ताति हुम बहित हुम पद्र अर्चनं भव सय तारित छुड़द भयो। !
मोह काम ने सतायो चारीं बामा उर चायो छुड़ दुष्क बिसरायो बहु बिपत गमायो नाना विकर्की।
ताति घर फूल तुम निर्मूलं मोह निशूलं कर अबकी। !
मोह लुघं ने सतायो तब भास्ना बढायो बहु याचना करायो तिहुं पैट न मरायो अति दुःख पायो।
ताति चह घारी तुम निरहारी मोह निराङक पदर बगला। !
मोहतम को चपेट ताति भयो हीं अचेत कियो जड़ ही से हैत भूमो जय्या पर मेद्र तुम्हारण रही। दीपक उज्जवारीं तुम दिग चारीं स्वर प्रकाशो नाथ सही। !
करं इंधन हैं सारी मोक्ती कियो हैं दुखारी ताकी बिपत गहारई नेक छुड़ हूं न चारी तुम चरण नम्म।
ताति वर धूर्त तुम शिव.हर्ष कर निज भूर्य नाथ हमें। !
अंतराय दुःख दारी मेरी शक्ति छिपाई मोक्ती दोनता कराई मोक्ती अति दुःख दारी भयो आज हो। प्रभू।
ताति फल-ल्यायो तुम दिग आयो मोक्त महा फल द्रू बुध प्रभू। !
भाईं कर्मों ने सतायो मोक्तों दुस्क उपजायो। मोक्तों नान्ह हुत-चायो भाग तुम पिसावायो अब बच जाईं। बसु द्रू मर्म तारी तुम दिग घारी हे मव तारी शिव चाँद। !
श्री बीस जिनेश्वर
इत्य निवेश्वर जगत महेश्वर मेरी बिपत हरो। मव संकट
चौषधी
कंचनभारी निरंतर नीर। पूजाँ जिनवर गुणगमीर।
परमशुर हैं, जय जय नाथ परम गुरु हैं॥
दर्शनविशुद्ध भावना माय। सोलह तीर्थकरपद्धार
परमशुर हैं, जय जय नाथ परमशुर हैं॥ १॥
छों ही दर्शनविशुद्धयादिप्रेणकारणोऽयैं जन्ममृत्युविनाशय जन्मशत निः॥
चंदन घरीं कपूर मिठाय, पूजाँ श्रीजिनवरके पाय।
परम हैं, जय जय नाथ परमशुर हैं॥ दर्श् ॥ २॥
छों ही दर्शनविशुद्ध यादिप्रेणकारणेयः संसारताप
विनाशनाय चतुर्था ॥
तंगुल धचल गुंगांध अनुप। पूजाँ जिनवर तिह्वुङ्गमूप।
परमशुर हैं, जय जय नाथ परमशुर हैं॥ दर्शविः ॥ ३॥
छों ही दर्शनविशुद्ध यादिप्रेणकारणेयः अक्षयपद्धाराये
वक्षतानां निः॥
फुङ्ग सुगांध महुपुंश जार। पूजाँ जिनवर जग्नाहार।
परमशुर हैं, जय जय नाथ परमशुर हैं॥ दर्श ॥ ४॥
छों ही दर्शनविशुद्धयादिप्रेणकारणेयः कामवाणवि
छवंसनाय पुष्पं॥
सद्यवज महुकिंवध प्रक्ष्वान। पूजाँ श्रीजिनवर गुणस्वान।
परमशुर हैं, जय जय नाथ परमशुर हैं॥ दर्शविः ॥ ५॥
छों ही दर्शनविशुद्ध यादिप्रेणकारणेयः क्षणारोग
विनाशनाय नैवेद्य॥
दीपकातित तिमार छयकार। पूजूँ श्रीजिन केवलधार।
परमशुर हैं, जय जय नाथ परमशुर हैं॥
दर्शनविशुद्ध भावना माय। सेलह तीर्थकरपद्ध पाय।
परमगुर हो, जय जय नाथ परमगुर हो॥ ६ ॥
ऊँ हीं दर्शनविश्वुद्वादिपीड़शकारणेयो मोहान्धकारभिनाशनाय दीपं॥
अगर कपूर गंध शुभ केय। श्रीजितवर्द्धाणि महकैय।
परमगुर हो, जय जय नाथ परमगुर हो॥ दर्शा ०॥ ८ ॥
ऊँ हीं दर्शनविश्वुद्वादिपीड़शकारणेयो अएकार्यद्व-नाय धूपं निर्वपामि॥ ७ ॥
श्रीफल आदि बहुत फलसार। पूजीं जिन वांछितदातार।
परमगुर हो, जय जय नाथ परमगुर हो॥ दर्शा ०॥ ८ ॥
ऊँ हीं दर्शनविश्वुद्वादिपीड़शकारणेयो मोक्षफल-प्राये फलं निर्वपामि॥ ८ ॥
जल फल आदि दरव चढ़ाय। 'घाटत' वरत करें मनलाय।
परमगुर हो, जय जय नाथ परमगुर हो॥ दर्शा ०॥ ६ ॥
ऊँ हीं दर्शनविश्वुद्वादिपीड़शकारणेयो नवयंगुद्धाये अर्थेन निर्वपामीति॥

श्रय जयसाला।

दोहा।

पोड़शकारण गुण करैं, हरैं चतुरगतिवास।
पापपुरस्य सव नासकै, ब्राह्मण परकास॥२॥
चौपाई १६ माता।

दर्शनविश्वुद्वादिपीड़शकारणेयो नवयंगुद्धाये।
श्रीपन न दृश्य तत्त्व निर्मातार्यो निर्मातार्यो।
श्रीपन न दृश्य तत्त्व निर्मातार्यो निर्मातार्यो।
श्रीपन न दृश्य तत्त्व निर्मातार् तत्त्व निर्मातार्॥ ३॥
श्रीपन न दृश्य तत्त्व निर्मातार् तत्त्व निर्मातार्॥ ३॥
श्रीपन न दृश्य तत्त्व निर्मातार् तत्त्व निर्मातार्॥ ३॥
श्रीपन न दृश्य तत्त्व निर्मातार् तत्त्व निर्मातार्॥ ३॥
दुःख देन मन हरप निदावेः। न ह मन जस परम सुख देखे॥
ता तप तप खेपे अभिलापा। चूरे करमशिकर गुरु भावा॥
लाघुसमाधि सदा मन छाचे। तिहुजसमेरी भोग शिव जाव॥
निशादिन सौभावुत्य करेया। जी निम्न भवनीर तिरैया॥
जे अर्हतभगति मन आने। सा मन विषय कषाय न जाने॥
जे आचारतभगति करेहै। सा निम्न आचार धरेहै॥
बहुभूतत्वभगति ज्ञा करेई। सा नर संपूर्ण श्रृत चारई॥
प्रवचनभगति करें जो बाता। ज्ञा श्राक परमाणुद्रता॥
पद्मावश्य काल जिस साधे। सा ही आचारण्य आराधने॥
धर्मप्रसाव करें जे श्रानी। तिन्य शिवमार्ग रीति पिछानी॥
बस्त्तुक्षर सदा जो ध्यावे। सा तीर्थकरपदवी पावे॥

देहा ॥

यही सोलहसमान, सहित धरें अत जोय।
देवकुंदरचंद्रदरे, 'वानत' शिवपद हैय॥१०॥
वृं मन्दनविशुद्ध याक्षिोदङ्कारणेयः पूर्णं निर्वपामी।
( बर्षेके बाद विसर्जन भी कला चाहिये )

दशलच्छाधरम पूजा ॥

अड़िलू ॥

उच्चम दिमा मारदव आरजबांव हैं।
सत्य साँच संजम तप त्याग उपाव हैं॥
आक्रिचन प्रहतय धरम दस सार हैं।
चहुँगतिविहतं काथि सुकतकतार हैं॥१॥
वै हि उत्सम्भादिद्वाशालंकारः ! सृजातर अवतर ! संवीपद्।
वै हि उत्सम्भादिद्वाशालंकारः ! अन्त तिष्ठ तिष्ठ ! ठः ठः।
वै हि उत्सम्भादिद्वाशालंकारः ! अन्त मम सत्तिष्ठितो भव भव। वरद्।

तौरळ।

हेमाचरणी धर, मुनिचित संम शोतल वर्ष।
भववताप निवार, दसरक्ष सूरजः सदा॥ १॥

वै हि उत्सम्भादिद्वाशालंकारः नवन निर्विपामिः॥२॥
वै हि चंदन केशार गार, होय सुवास दसा दिशा। भवभा॥ ३॥

वै हि उत्सम्भादिद्वाशालंकारः नवन निर्विपामिः॥४॥
चन्द्र अनंत नार, केदार वंडदमान शुभ॥ भवभा॥ ५॥

वै हि उत्सम्भादिद्वाशालंकारः अवमुख निर्विपामिः॥६॥
फूल अनेक आकर, मद्यों जंगलों लो। भवभा॥ ७॥

वै हि उत्सम्भादिद्वाशालंकारः पुष्पं निर्विपामिः॥८॥
वै हि नेवज तिमिर प्रकार, उत्तम पत्तसंजुजात॥ भवभा॥ ५॥

वै हि उत्सम्भादिद्वाशालंकारः नेवजः निर्विपामिः॥१५॥
बाति सुधार सुधार, दोषकालित सुधारन। भवभा॥ ६॥

वै हि उत्सम्भादिद्वाशालंकारः प्रेमं निर्विपामिः॥६॥
अगर धूप विस्तार, पीठ सर्व जुगन्था। भवभा॥ ७॥

वै हि उत्सम्भादिद्वाशालंकारः धूपं निर्विपामिः॥७॥
फलकी जाति अपार, धान नयन मनमोहन॥ भवभा॥ ८॥

वै हि उत्सम्भादिद्वाशालंकारः फलं निर्विपामिः॥८॥
आठवी दूर लंबार, 'धान' अधिक उठाइसे॥ भवभा॥ ९॥

वै हि उत्सम्भादिद्वाशालंकारः नवन्याभि निर्विपामिः॥१॥
ॐ ही पश्मेशस्मवधितिजनात्याल्यस्मिनविभेद्यो
नेविचं नि ॥
तमहूर डलाल जाति जगाय । दोपसौं पूजौं श्रीजीनराय ।
महासूख होय, देवे नाथ परम सुख होय ॥ पाँचों ॥ ६ ॥
ॐ ही पश्मेशस्मवधितिजनात्याल्यस्मिनविभेद्यो
दीपं नि ॥
वेदं अगर परिमल अधिकाय । पूजौं पूजौं श्रीजीनराय ।
महासूख होय, देवे नाथ परम सुख होय ॥ पाँचों ॥ ७ ॥
ॐ ही पश्मेशस्मवधितिजनात्याल्यस्मिनविभेद्यो
धूंर्ण सुर्ण सुर्ण सुभाय । फलसौं पूजौं श्रीजीनराय ।
महासूख होय, देवे नाथ परम सुख होय ॥ पाँचों ॥ ८ ॥
ॐ ही पश्मेशस्मवधितिजनात्याल्यस्मिनविभेद्यो
फलं नि ॥
आदं दरवध चरण चनाय । 'चानत' पूजौं श्रीजीनराय ।
महासूख होय, देवे नाथ परम सुख होय ॥ पाँचों ॥ ६ ॥
ॐ ही पश्मेशस्मवधितिजनात्याल्यस्मिनविभेद्यो
अछं नि ॥

अथ जयमाला ॥

व्रत ॥
प्रथम सुदृढ़न स्वाम, चित्रय अचल मंदर कहा ।
विदु नयाहि नाम, पंचमेह जग में प्रगट ॥ १ ॥
केसरी बनद ॥
प्रथम सुदृढ़न मेम विराजे । भद्रशाल वन भूपर झाले ॥
चैत्यालय चारों सुखकारी । मनवचतन वंकना हमारी ॥ २ ॥
उपर पंच शतकपर सोहैं। नदिनवन देखत मन सहैं॥८॥
लाहे बासठ सहस्रउंचाई। वन सुमनस शोभे अधिकाई॥८॥
ऊँचा जोजन सहस्र छत्रिस। पांडुकवन सोहैं। गिरिसिंह॥८॥
चारों मेह समान बलानी। भूपर भद्रसाल चढ़े जानी॥८॥
चैत्यालय सोहैं। चैत्यालय सोहैं। मनवचतन बंदना हमारी॥८॥
उन्चे पंच शतकपर भाखे। चारों नदिनवन असिलाखे॥८॥
चैत्यालय सोहैं। मनवचतन बंदना हमारी॥८॥
लाहे पचवन सहस्र उंतगा। वन सोमनस चार बहुरंगा॥८॥
चैत्यालय सोहैं। मनवचतनवंदना हमारी॥८॥
उन्चे सहस्र भद्रास्व वताये। पांडुक चारों वन शुभ गाये॥८॥
चैत्यालय सोहैं। मनवचतनवंदना हमारी॥८॥
सुरतर चारन बंदन आवैं। सो शोभा हम विहुशु मुख गावै॥८॥
चैत्यालय महसी सुखकारी। मनवचतनवंदना हमारी॥८॥

do<hा।
पंचमेरको आरती, पढ़ै सुनै जो जोय।
‘धानत’ फल जानें प्रभू, तुम भलासुख होय॥६॥
कैं ही पचमेरसंविनिविजनचैत्यालयस्थविजनविवेधया
अध्ये निर्विपायी॥

रत्नत्रयपूजा।

do<hा।
चहुं गतिनिविजनहरनमणी, दुष्पावक जल्हार
शिवसुखसुधासेरवी, सम्यकमाय सितार॥८॥
कैं ही सम्यगरत्रय! अच्छतरावरत, संवीरप्र।
कैं ही सम्यगरत्रय! अत्र तिष्ट तिष्ट। ठ: ठ:।
जैन-ग्रन्थ-संग्रह

झौं हैं सम्प्रभलत्रय! अन्न मम सचिवितं भव भव। चपटौं सोरठा।

श्रीरोद्धि अन्हार, घजल जल अति सोहना।

जनमरोगलिंगवा, सम्प्रकालत्रय महों॥१॥

झौं हैं सम्प्रभलत्रयाय जन्मरोगविनाशनाय जलं

निर्वाणमिः॥१॥

चदन केशर गारि, परिमल महा खुरंगमय। जन्मरोग॥२॥

झौं हैं सम्प्रभलत्रयाय भवातापविनाशनाय चन्दनं

निर्वाणमिः॥२॥

तंदुल अमल चितार, वासमती सुखदासके। जन्मरोग॥३॥

झौं हैं सम्प्रभलत्रयाय अश्रयपद्मालाय अस्वतान् निर्वा-

निर्वाणमिः॥३॥

महं पूर्व अपार, अहि गुंजः ज्यो शुद्धि करेः। जन्मरोग॥४॥

झौं हैं सम्प्रभलत्रयाय कोमवणविच्छंदनाय पुष्पं

निर्वाणमिः॥४॥

छाडू बहु विस्तार, चोकन मिष्ट खुण्डप्तता। जन्मरोग॥५॥

झौं हैं सम्प्रभलत्रयाय शुधारोगविनाशनाय नैवेधं निर्वा

दीपरतमय सार, नात्र अकाश सम जगत में। जन्मरोग॥६॥

झौं हैं सम्प्रभलत्रयाय मोहानंदकारविनाशनाय दीपं निर्वा

भूप सुवास चितार, चन्दन अर्ध कपूरकी। जन्मरोग॥७॥

झौं हैं सम्प्रभलत्रयाय अश्रयभमदनाय धूमप निर्वाणमिः॥७॥

फलशोभा अधिकार, तोंग झुआरे जायफाल। जन्मरोग॥८॥

झौं हैं सम्प्रभलत्रयाय मैथुषंगमान्ययं फलं निर्वाणमिः॥८॥

आतदूर निरतार, उत्तममयं उत्तम दिये। जन्मरोग॥९॥

झौं हैं सम्प्रभलत्रयाय अन्धत्वपद्मरत्यं अवधं निर्वाणमिः॥१०॥

सम्प्रभलत्रन्द्रय, वनत शिवमग तोनों मय।
चार सेल्है मिलेस सर्व बावल लहे ||
एक एक सीसपर एक जिनमंदिरं भौन० ॥ ६ ॥
विच अठ एकत्री रतनमय सोह ही ||
देवदेवी सरच नयनमन मोह ही ||
पांचलै धतुष्य तन पशुवासनपरं । भौन० ॥ ७ ॥
खाल नय मुख नयन स्याम अरु स्वेत हैं ।
स्यामरंग मोह लिरकेश छवि देत हैं ॥
बचन बोधत मनों हृतत कालुघरं । भौन० ॥ ८ ॥
केतकिशिषि मानदुति तेज छिप जात है ।
महाबाणेऽपि परिषाम ठहरात है ॥
यज्ञ नहिं कहैं लखि हैत सम्यकथरं । भौन० ॥ १६ ॥

सोरठा ।

नन्दीश्वर जिनवाम, प्रतिमामहिमा को तहे ।
‘धान्य’ लीलों नाम, यहैं भागत सब सुख करे ॥ १० ॥
झौं हीं श्रीनन्दीश्वरक्षोप पूर्वपशुभिमोतरदक्षिणि द्विप्पचा-
शाल्जीनालयस्यजिनप्रतिमामयः पूर्णाच्छ निरचामाति स्वाहा ।
(अच्छे के चाव विसर्जन करना चाहिए ।)

चतुर्विणिशतितीथं कर निर्वाचिणेदेत्रधूजः ।

सोरठा ।

परम पूज्य चावीस, जिहैं जिहैं थानक शिव गरे ।
सिद्ध भूमि निशादिः, मनवचतन पूजा करैं ॥ १ ॥
झौं हीं चतुर्विणिशतितीथं कर निर्वाचिणेत्रधूजः । अत्र अवतार
अवततः। संबोधस्त। झौं हीं चतुर्विणिशतितीथं कर निर्वाचिणेत्रधूजः।
अत्र तिष्ठत तिष्ठत ॥ ठः ठः। झौं हीं चतुर्विणिशतितीथं कर निर्वाचिणेत्रधूजः।
श्येत्ताणि भजन सम सन्निहितानि भवत भवति। चपूँ।
गीता छंद।
शुचि श्यौर्द्धिप्सम नीर निरमल, कनकभारोऽयं भराँ।
लंसारपार उत्तर स्वामि, जेतार कर चिनती करूँ।
सम्मेद्गिरि गिरिवार चंपा, पावापुर्वि कैलासकोऽ।
पूजां सदा चौवीसजननिर्वाणभूमिमिवकासकोऽ। १।
ॐ हि चतुर्विंशतितीर्थकरनिर्वाणक्षेत्रेश्यो ज्ञात निर्वानपरमीति स्वाहा। २।
केशर कपुर सुगंध चंदन, श्लिष्ट शीतल विस्तरां।
भवपापेऽसताय मेंरी, जेतार कर चिनती करूँ।सम्मेद्गिरि
ॐ हि चतुर्विंशतितीर्थकरनिर्वाणक्षेत्रेश्यो चंदन निर्वान
परमीति स्वाहा। ३।
मीत्वसमान अखंड तंदुर, यमम्भ आनंदपरि तरी।
ओघुनहकी गुनकरी हमवे, जेतार कर चिनती करूँ।सम्मेद्गिरि
ॐ हि चतुर्विंशतितीर्थकरनिर्वाणक्षेत्रेश्यो अक्षतान् निर्वानपरमीति स्वाहा। ४।
शुभकुळरास सुवासवासित, चेद सव मनकी हरिः।
तुष्याय श्रम चिनता मेरे, जोर कर चिनती करूँ।सम्मेद्गिरि
ॐ हि चतुर्विंशतितीर्थकरनिर्वाणक्षेत्रेश्यो पुप्प निर्वानपरमीति स्वाहा। ५।
नेवन अनेकस्कार जे, मनोग चरि भय परिहरिः।
यह भूखदूक्त दारि प्रभुजी, जोर कर चिनती करूँ।सम्मेद्गिरि
ॐ हि चतुर्विंशतितीर्थकरनिर्वाणक्षेत्रेश्यो नैवेद्य निर्वानपरमीति स्वाहा। ६।
दीपक प्रकाश उजास उजास, तिमिसेती नहीं उठे।
संशयविद्विद्विद्विद्विद्विद्विद्विद्विद्विद्विद्विद्विद्विद्विद्विद्विद्विद्विद्विद्विद्विद्विद्विद्विद्विद्विद्विद्विद्विद्विद्विद्विद्विद्विद्विद्विद्विद्विनिर्वान-
अँ हैं चतुर्विशाशतीयार्थकरित्वाणिर्वाचेन्ये दृष्यं निर्वपामीति स्वाहा ष \ 

श्रम धूप परम अनूप पावण, भाव पावण आचरिन।
सव करमपुंज जलाय दीः, तेरा कर विनाती करिन।\समेत्तिहृः\7
अँ हैं चतुर्विशाशतीयार्थकरित्वाणिर्वाचेन्ये दृष्यं निर्वपामीति स्वाहा \7\7

वहु फलं मांगाय चढाय उत्सम, चारणतिसं निरवर्तिन।
निहारे मुक्तफलं देहु मोरोः, जोर कर विनाती करिन।\समेत्तिहृः\8
अँ हैं चतुर्विशाशतीयार्थकरित्वाणिर्वाचेन्ये फलं निर्वपामीति स्वाहा \8\8

जल गंध अक्षयं फूलं चरु फलं, दृष्यं धूपायन घरी।
'धानतं करीं निरंभयं जगतं, जोर कर विनाती करिन।\समेत्तिहृः\9
अँ हैं चतुर्विशाशतीयार्थकरित्वाणिर्वाचेन्ये अध्यं निर्वपामीति स्वाहा \9\9

अथ जयसालम।
सोरठ।
श्रीचौरवसिनेधा, गिरीकैलासादिक नमों।
तीर्थमहाप्रेक्षा, महापुरुपनिरवचाणि।\1\1

चौपाई।माधा।
नमः दिशं कैलास पहारर।नेमिनाथगिरिनार निहारं।
वातुपूज्य चंपापुर चंडौ। सर्वमति पावापुर अभिनंदृः।\12
चंडौं अजित अजितपदादात।चंडौंसंसचमवदुख्वाता।
चंडौं अभिनंदृ गण्याताक।चंडौं सुमति सुमतिके द्रायक।\13
चंडौं पदम सुक्तिलिप्नमाधर।चंडौं सुपार्श वाशापास्तम हर।
चंडौं चंद्रप्रभ प्रशु चंडा।चंडौं सुविंदुसुविच्चिनिविचिनविद्याछ।\14
चंडौं शीतल अहंकरशीतल।चंडौं त्रियांत्र्यियांसमहितल।
चौपाई (१६ मासा)
एक झाँक केवल जिन स्वामी । दो आगम अभ्यासमं नामी ॥
तीन काल विद्वत परमाट जानी । चारं वनर्तचतुष्य झानी ॥२॥
पंच परापर्तन परकाशी । छह वनर्गुप्तरजयमाती ॥
सातभंगवानी परकाशक । आठों कर्म महारिपुपानाम ॥ ३ ॥
नव तत्ववनसे भावनहारी । दश वनदन से भविजन तारे ॥
ग्यार्हू प्रतिमा के उपदेशी । वारह सभा भुवनी वक्तेशिं ॥४॥
तेरहविचि चारित के द्राता । भौद्र भारगना के द्राता ॥
पंद्रह मेद्र प्रमादनिवारी । सोलव भावन फल अविकारी ॥५॥
तारे तनह धरं भरं भूव । छह शान द्राता तुव ॥
भाव उनीस जु कहै प्रथम गुन । वीस अष्टगणधरजी की गुनो ॥६॥
इकतीस सर्व वातविधि जाने । वास्तं वद नवम गुन थाने ॥
तेसस निधि अर रतन नरेवर । सो पूजन चावनस जिनेवर ॥७॥
नाश नवचीस कप्पार करी हैं । देवरायि छन्नीस हरी हैं ॥
तत्त्र दरव सचाईस वेंचे । मति विशान अठाहत पेंचे ॥८॥
उनतिसं धरं मनुष सव जाने । तीस कुताचु सर्वः विलाने ॥
इकतिस पटल सूघर्म निहारे । वृतिस द्राष्ट समासक रंगे ॥९॥
वेदिस सागर सुकर्क आधे । चौंतिस मेद्र अज्जिम बलाये ॥
पेंतिस विज्ञ जप खुलवाई । जौतिस कारपूर्ण-रीति मिताई ॥१०॥
वेदिस सण कहि ग्यारह गुनमें । अठाहत पदु छह नरक अयुगमें ॥
इकतालीस मेद्र आराघन । उद्दी वियालाल सीर्खर करन ॥
तेतालीस वंध्र झाति वाहि । द्वार चवालिस तर चाथेरहि ॥११॥
पेतालीस पल्य के अच्छर । छियालीस विन द्वार गुनियवर ॥
नरक उद्दी न छियालीस मुनियुग । प्रक्षति छियालीस नाश ॥
दसम गुन ॥१२॥
सरस्वती पूजा।

दोहा।

जन्म जरा मदु धय करी, हरे खनय जद्रीति।
भवसागरसैं ले तिरी, पूजें जनवच्छीति।
ॐ हिं श्रीजिनमकोइसमस्थलस्वतिवालिनादिनि। अन्तः 
अचतर अचतर। संवीप्त। अन्त तिष्ठ तिष्ठ। ठः ठः। अन्त मम 
सन्निहित। भवभव।। चपेट।

त्रिभगी।
चीराधि गंगा, विमल तरंगां, सजिल अर्धगा, खुलत गंगा।
भर फंच भादी, जार निकारी तुषा निवारी, हित चंगा।
तीर्थकरती छूनि, गताये छूनि, अंग रचे छूनि, बांगमई।
श्री जिनवच्चानी, शिवमुखदानी, चित्तवन मानी, पूज्य मई॥१॥
हैं श्रीजिनमुखेद्रमवसरस्वतीदेवी जलं निर्वापिम्
ईति स्वाहा || १ ||
करपूर मंगाया, चंदन भाया, केशर भाया, रंग भरी।
शारदपद बंधों, मन अभिनंदीं, पापनिनंदीं, त्वाह हरि। तीर्थः || २ ||
हैं श्रीजिनमुखेद्रमवसरस्वतीदेवी चलङ्ग निर्व-
पापिति स्वाहा || २ ||
सुखद्रास कलेवां, धारकलेवां, अतिअलोकां, बंधसं।
बहुमक्ति बढ़ाईं, कोरति गाईं, होइ सहाईं, मातमम्। तीर्थः || ३ ||
हैं श्रीजिनमुखेद्रमवसरस्वतीदेवी अष्टतान् निर्व-
पापम् || ३ ||
बहुपूर्वसुवासं, विमलप्रकाशं, आनंदरलं, लाां घरें।
सम काममिठायी, शील-बढ़ायो, सुख उपजायो, देवपरे। तीर्थः० ॥
हैं श्रीजिनमुखेद्रमवसरस्वतीदेवीं पुष्पं निर्वापिम् || ४ ||
पक्वान बनाया, बहुपृत्त लाया, सव चिथ भाया, मिश महा।
पूजूं श्रुति गायं, श्रीति बढ़ाऊं, शुभा नशाऊं, हर्ष लहारा। तीर्थः || ५ ||
हैं श्रीजिनमुखेद्रमवसरस्वतीदेवीं नैचें निर्व-
पापम् || ५ ||
करि दीपक ज्योति, तमक्ष्य हैति, ज्योति उदेति, तसंहि चढ़े।
तुम हो परकाशक, भरमविनाशक, हमचट भास्क, हान बढ़े। तीर्थः ० ॥
हैं श्रीजिनमुखेद्रमवसरस्वतीदेवीं दौंप निर्व-
पापम् || ६ ||
शृभंगं दशंकर, पावकसं घर, धूप मनोहर, लेवत हैं।
सव पाप जलावें, पुष्प कमावें, दास कहावें, लेवत हैं। तीर्थः || ७ ||
हैं श्रीजिनमुखेद्रमवसरस्वतीदेवीं पूमां निर्वापिम् || ८ ||
बादाम छुहारी, लोहं सुपारी, श्रीफल मारी, ल्यावत हैं।
मनवांछित दता, मेट असाता, तुम गुणमाता, ध्यावत हैं। तीर्थः ||
झौंहं श्रीजिनमुखोद्भवसरस्वतीदेवी फलं निवर्णामिः

नयनसुखकारी, मुहुर्गुणयारी, उज्जवलमारी मेलं धरे।
सुभगंप्रसम्हारा, वसन्निहारा, तुमतर धारा, हान करे॥
तीर्थकरकी धुनि, गतधरने सुनि, अंग रते धुनि हानमरे।
लैं जिनवरचानी, शिवसुखदानी, त्रिमुखनामानी, पूज्य भई॥

झौंहं श्रीजिनमुखोद्भवसरस्वतीदेवी चक्रं निवर्णामिः
जल्चंदन अच्छत, फूलचंदनम, श्रीप गुण भवति, फल लावे।
पूजाको ठानत, जैं तुम जानत, लैं नर धानत, लुक्क
पावे॥ तीर्थं॥ १०॥

झौंहं श्रीजिनमुखोद्भवसरस्वतीदेवी बध्यं निवर्णामिः

अश्र जयमाला।

सौरांत।

भोजार धुनिसार, दादा बाण बाणी विसार।

नरमें भक्ति उर धार, हान करे जड़ता हरे॥

वैसरी।

पहला आचारांग बढ़ाने। पद्ध भग्नाश सहस्त्र प्रमाने।

दूःता सूक्ष्मत भमिलायं। पद्ध छत्रोस सहस्त्र गुरु भार्य॥१०॥

तीजा धाना अंग सुजानी। सहस्त्र वियालिस पद्मराघानीं॥

चौथे समवायांग निहारं। चौदह सहस्त्र लाख इकारां॥

पंचम व्याब्यायप्राप्ति दर्श। दौंय लाख श्रद्धाश्च सहस्त्र।

छठा ग्रामकथा विलारं। पांचलाख चुप्पल हुजारं॥ २॥

सप्तम उपासकाय यवरं। सत्तर सहस्त्र व्याजक भागं।

अग्रम अन्तकर्त्तवः देसं। सहस्त्र अदाइस लाखं तेसं॥ ४॥

नवम अंतुतरः सुविशालं। लाख वानं सहस्त्र चवालं।
दशम प्रकाश्याकरण विचारं । छाख तिराणवें सैहभजारं ॥ ५ ॥
स्यारं सूत्रविषयं सु मालं । एक कौड़ चौरासी छाखं ।
चार कौड़ अर्थ पत्रं छाखं । दे हजार सत्य पद गुरुशाखं ॥ ६ ॥
हा द्वादश द्वारिकावाद पनन्दें । इकसीं भाट कौड़ पन चेतं ॥
अड़ुसट छाख सहस्र छप्पन हैं । सहित पंचपद मिश्रयावन्दें ॥ ७ ॥
इकः सी बारह कौड़ि बसानें । छाख तिराणी ऊपर जानें ।
घावन सहस्र पंच अधिकानें । हा द्वादश धर्म सर्व पद मानें ॥ ८ ॥
कौड़ि हा अवाल बाघः छाखं । सहस्र चुरासी छहसीं भाखं ॥
सावे इकोंस शिखावे चताथे । एक एक पद के ये गाये ॥ १ ॥

घर्तर

जा बाने के धान में, सुभे ठाक अलाक।
'धानत' नम ताबंत है, सदा देत हैं ठाक ॥
श्रीज्ञानेश्वरदत्तसरस्वते देवेष्ये पूर्णचर्च निर्विपामि ॥

इति सरस्वतीपूजा

युक्तपुजा ।

दोहा

चढ़े गति दुःखसागरविचि, तारनतरजिन्हाज।
रलनतण्यशिधि नगर तन, धन्य महा मुनिराज ॥ १ ॥
ठ। हूँ श्रीआचार्यपाठ्यसर्वसाधूगृहसूर । महा-
बरतावत पंचपद ॥

ठ। हूँ श्रीआचार्यपाठ्यसर्वसाधूगृहसूर । अत्त
तिश तिश ।

ठ। हूँ श्रीआचार्यपाठ्यसर्वसाधूगृहसूर । अत्त
हर्षान्ते गिरिनाम तस्म, कहै जगति विव्याहात ।
गिरिनारी सासे कहत, देखत मन हर्षात। || 3 ||

अढ़िल्ल ।

गिरि सुधा सुभगाकार है। पञ्चकूट उड़तंग सुधार है।
वन मनोहर शिखर सुहावनी। चन्द्रत सुंदर मन कोभावनी।
और कुट अनेक बो तहां। सिंध थान सुविधि सुन्दर जहां।
देखि मथिजन मन हर्षावते। सकल मन चन्द्र कोभावते। || 15 ||

तहां नैम कुमारा, ग्रह तप धारा, कर्म विद्वारा, शिव पाई।
सुन्द्र लोक बहतर, सात शतक घर, ता गिरि ऊपर सुखदाई।
भवे शिवयुराती, गण के राजी, विधिविध नाभी, भूरिधराय।
ति के गुण गाँव, पूज रचां, मन हर्षां, सिंधि कर।

देहा।

ऐति लोक महान, तिदि पूजत मन बच काय।
स्थापत नय बारकर, तिदि तंत्र इत बाय। ||

श् हं श्री गिरिनारि सिद्धि से नेतीयो। अंत अंतवतरः
समचायादाहनम्। अंत तिदि तंत्र ठ: ठ: स्थापनम्। अंत
ममसाधिता भव भव चन्द्र सन्धीनिर्मण।

अष्टावकं।

माधवी वा किरित छन्द।

केकर नीरसुङ्गोरसमान महा सुखदा नुभासूक साही।
मैं चन्द्र धराजनो चरिणा हर्षना मम जनमजया दुःखदाई।
पढ़ि चुने ते ग्रीति से, सो नर शिवपुर जाय || १७ ||

इत्याश्रेयः।

इतिश्री सोनागिरि पूजा सम्पूर्ण।

रचित्रत पूजा।

अधिकृ।

यह मवजन हितकार, छ रचित्रत जिन कहीं। करहु मवजन खो, हुमन त्रेक लहीं। पूजों पासह्र जिनेन्द्र त्रियोग स्नायंकेः। निम्ने सर्व रत्नाप मात्रे निच्छ चाहे केः। मति सागर एक सेतु गन्धम कहीं। उनाने यह पूजा कर आतन्द स्वस्ती। ततो रचित्रत सार, सो भविजन कीजिये। सुख संपति स्नायं, अतुल निच्छ कीजिये। तेहा। प्रणामो पासह्र जिनेन्द्र केहि, हाय जायः सिर ताथ। पर्यम सुख के काले, पूजा कहूँ बनाय। परतार दृष्ट के दिना, एक हि पूजन भान। ता पह समपति कहे, नित्रयम छीने मान। छे हीं श्री पार्वतनाथ जिनेन्द्राय अत्रभवतार अवतार तिथि २ १ १। अत्र सम साधिहि।

अश्वक।

उक्तजल जल भरकें बति छाया रत्न फोटोरण माहि। धार पैत्र अति हर्ष वड़ौंत जन्म ज्यर मरहूं। पारंस्नाथ जिनेन्द्रवर पूजों रचित्रत के दिन माहि। सुख सम्पति तहु हैय तुष्टही, आतन्द संगमवर। छे हीं श्री पार्वतनाथ जिनेन्द्राय जन्मजयासुत्त्य विनाशनाय जल निर्वासीति स्नाहा। मल्लय-
गिर केशार आति छन्दर कुमकुम रंग चढ़ाई। घार-देव जिन घरन आने सव आताप नसाई। पारसनाथ। सुगन्ध। मेली सदा जिन उजल तन्दुर लयावे नीर। पकारे। अक्षय पद के हेतु भावसे श्रे जिनवर दिग धारे। पारस।
श्रद्धां। वैदा अरसच कुन्द्र चमेलि पारजात के लयावे। चुन चुनः श्री जिन अग चढ़ाई। मनवांछित फल पावे। पारस। पुष्प। वावर फैली नीजा आदिक घूत में लेत पकाई।
कचन याद मनोहर भरके घरन देत चढ़ाई। पारस।
नैवेद्य। मनमय दौप रतनमय लेकर जगमध जीत जगाई।
जिनके आने भारतित करके मेहद तिमिर नस जाई। पारस।
दौप। चूरन कर मल्यागिर चन्द्र सुपुष्प दृष्टांक चढ़ाई।
तट पावक में बेह भावसे करमनाथ हे। जाई। पारसनाथ।
धूर्यः। श्रीफल आदि वद्राम। सुपारी भांट भांट के लवि।
श्री जिन चरन चढ़ाय हरप कर तारे शिव फल पावे। पारस।
फलः। जल गंधार्दिक अष्टे दुर्ब हे अर्च बनावो भाई।
नाचत गावत हर्प भाव से कचन याद मराई। पारस।
इसी। गिरा। चन्द्र कचन काय त्रिजुड़ करके पारश्वनाथ हु पूजिये।
जल आदि अर्च चनाय भविजन भक्तिनाथ। सुहृदिये। पूजा
पारसनाथ जिनवर सकं बुख दातार्ज। जे करत है नवरार
पूजा लहल हुन्द्र अपारजी। पूर्प स्थ्रे। हेज़। यह जगमें
विचित्र यात है, पारसनाथ महान। जिन गुणों जयमालका
भागा करौँ बतान।। पुढ़िरी दंड। जय जय प्राणमा श्री पारछर
इस्त्रादि तिनकी करत ले।। जय जय सुवनारस जयम
लीन। तिरहूँ लेख लिये उचित कोन।।।।।। जय जय जिनके पितु
श्री विध्वसलेन। तिनके घर सवे बुख बेन ए।।।।।। जय वामादिवी
माय जान। तिनकु उपजे पारस महान। २।।।।।। जय तीन लेिक
आनन्द देन। मविजनके दाता भरे पन। जय जिन्ने प्रभु का शरीर भून। तिनकी साहिय प्रभुजी से कीन। ॥ ३ ॥ जय नाग नागनी के अभ्यर्थन। प्रभु चरणान लाग रहे प्रभुजी ।
तजके से देव संगों सु जाय। धरनेद्र पशवर्ति मये बाय। ॥४॥
जे वैर बजना अथम जान। चैरी तज प्रभुके धरो ध्यान।
जे मृत्यु मये स्वर्ग सु जाय। रिद धनेक उनने सुपाय। ॥ ५ ॥
जे मतिसागर एक सेठ जान। जिन रचित पूजा करी ढान।
तिनके चुत थे परदेश माहि। जिन असुम कर्म काटे झट
ताहि। ॥ ६ ॥ जे रचित पूजन करी शेष। ताफ़्तीन सबसे
भई-भेंट। जिन जिनने प्रभुका शरीर भून। तिन रिद्दसंदर्भ
पाई नंदीं। ॥ ७ ॥ जे रचित पूजा करहि जेय। तें सुख्य
अनंतानन्द घेय। ॥ ८ ॥ पूजा विधान, इहि विध रचाय।
मन वचन काय दीनों घमाय। ॥ ९ ॥ भक्तिमान जैमाल गाय।
सोहि सुख समस्त अनुल पाय। ॥ १ ॥ चाजत सुरंग झीनादि
सार। गांवत नाचत नाना प्रकार। तन नन नन नन नन तालु
देत। सन नन नन, सुर मर सु देत। ॥ १ ॥ ता थें। थें थें।
पण धरत जाय। छम छम छम छम गुच्छु बजाय। ॥ जे करहि
विचार इहि मांत मां। ते इहि सुख्य शिशुपुर सुजात॥ ॥
देहा। ॥ रचित पूजा पारंपरिक, करे मध्य जन-केह। सुख
समस्त इहि भव छढ़े, तुष्ट छुरसा पद होय। ॥ तहिए।
रचित पारंपरिक जिनेन्द्र पूज्य मध मन छटे। मध मधके आताप
काल छित्रमें टरे। ॥ हीय छुरेन्द्र नरेन्द्र आदि पद्मी छढ़े।
सुख समस्ति सन्तान बालक कृष्णी हैं। ॥ फें सवं विच पाय
भक्ति प्रभु अनुसरे। नाना विचार सुख मेगां बहुरि शिव जीवनै॥
इत्यादि अशोकविद्।
छाया तंबकी नाहीं लेच हैय। दमकार पलक लागे न कौय।
नब केश छृदि ना हैय जाय। ये द्रा अतिशय केवल प्रकाश
तिनकै हम बनने शीशनाय। अब भवके अब छिममें पिलय।
छो ही केवलजानजनमदशातिशायसूति-शिशिनाय श्रीजिनाय
अथ नित।

चौथोला बंधु।
अब देवन्द्रत चौदह अतिशाय, सो छुन छीजे भाई।
सकल अरथमय मागवि भाषा, सब जीवन सुखदाई।
मन्त्राधें सकल जीवनके, ही धत महा सुखकारी।
निर्मल दिशा सर्व सब मोरी; उपमे आनंद भारी।
अब निर्मल आकाश विराजत, नीचवरन तन धारी।
पद्म सहतूके फल फूल मनेहर, लागे दृष्टोंको बारी।
द्विपं सम सो धरनि तहाँकी, अति जिय आनंद पावे।
निथंकट मेदनि विराजते, कीं कवि उपमा गावे।
मन्द सुगन्ध बरारि वृष्टि, गण्धोदककी बहुवाई।
हरपमाई सब कृष्टि विराज, आनंद मंगवाई।
बरण कृपः तत रचत कमल सुर, चले जात सिनराई।
मेघ कुमारोंकृत भंगे, वस्त्रे अति सुखवाई।
चउ प्रकार सुर जय जय करते, सब जीवन मन भावे।
अर्ध्यक चले वागी प्रभुके, देखत मानु कुजावे।
द्रा विषयं मंगलदपद्ध धरानि, तहाँ देखत मनको मेहाई।
विपुल पुण्यका उदय भयो है, सब विभूतिहुत सोहं।

दोहा।

ये चौदह देवन सु छत, अतिशय कहें बजाय।
इन छठ श्रीराहंतपद, पूर्जी पद सुख मान।
छो ही सुरस्तचतुरदशातिशायसंयुक्त श्रीजिनायअथवंनि।
लद्दीघरा बन्द ।
प्रातिहार्य वसु जान, वृस्त सोहे अशोक जाहै ।
पुष्पवृणि दिल्लिहस्ति, सुर गोरें सु चमक तहैं ॥
छड़ि तीन सिनहसन, भामरतल छवि छाजे ।
बजत दुनहु भो मन्त्र ग्याण, सुख हो हुस्ब माजे ॥१३॥
ॐ हि अपर्विद्विप्रातिहार्यसंखुकाय श्रीजिनाय अर्ध निन ॥

चौपाई ।
जानावरणी करम निवारा, जान अनन्त तबैं जिन धारा ॥
नाश दरशनावरणी खुरा, दरशन भयो अनन्त सु पूरा ॥१४॥
दोहा ।
मीह कर्मका नाशकर, पायेसुकव अनन्त ।
अन्तःरायका नाशकर, बल अनन्त प्रगटन्त ॥१५॥
ॐ हि अनन्तचतुर्थिराजपमानश्रीजिनाय अर्ध निन ॥
पाईता छन्द ।
अतिशय चौतीस बजाने । वसु प्रातिहारज शुभ जाने ॥
पुत्र चार चतुर्थिर तेवा । इह छयाचल्ल सुगुण युत देवो ॥१६॥
ॐ हि पश्चिमत्वातिसृष्टि गुणसहिताय श्रीजिनाय अर्ध निन ॥

श्रीसिद्धगुण पूजा ।

श्राविन्न ।

दर्शन शान्त, अनन्त बल छही ।
सुख अनन्त चिलसंत, सु सम्प्रक गुण कही ॥
अवगाहन सु अगुरुश्य, अव्याचार है।
इन ब्रह्म गुण युत सिद्ध, जो जो यह साध है॥ १॥
३५ हैं अगुरुण चिन्मयाय सिद्धपरमेश्वर नितः॥

श्रीचाचार्य गृहा।
श्रीमां-आचारज आचार्यरूप, निन्द पर मेव वासन।
तिनके गुण चूहा तोहाँ है, तो जाने इम्र सचन।॥ १॥
बैसरी चढ़ा।
उनमं क्षमा घरे मन साही। मारद्व धरम्म मान तिघि नाही।
आरजव सरल सत्त्वात सु जाने। लुहू न कहे सत्त्व परमाने।
निर्मल चित्र शौच गुण भारी। सत्त्व गुण घरे सुखकारी।
द्राक्ष चित्र तप तपत महत। स्त्राव करें मन वच तन संता।
तज सत्यात आक्षिण पालें। प्रहस्य घर कर्मन रात्रें।
ये दुष्म धरम्म घरे गुण मारी। आचारज पूजों सुखकारी।
३५ हैं इष्टाक्षरणकृष्णमध्यार्काचार्य परमेश्वर नितः॥
बैसरी छढ़ा।
अब द्राक्ष तप सुनिये भाई, अनशन ऊँचाऐ सुखदाई।
ब्रह्मपरिसेवा रस नहिं चाहें। चिन्मयायसम्बन अवगाहि।
कायकलेश समे दुख भारी, ये छह तप वारद गुण भारी।
प्रायाहित रेवे गुण:शाखें। चिन्मयाय निनिश्चित चित्र राखें।

दोहा।
बैयाभूत स्वाध्यायकर, कायेतस्रे खुजान।
ध्यान करें निज सुप को, ये वारद तप मान।॥ ६॥
३५ हैं द्राक्षचिन्मयपेयुकाय आचार्यपरमेश्वर नितः॥
स्वाहा || 3 || पृष्ठ सुरगच सु ल्याय-हरप्त की आन चढ़ायो || रोग दुःख बिंद नाय यद्य सब दूर पाठायो || पूजी शिखरेषॊ।

|| 4 || हैं श्री सम्मेदशिल्हर सिद्धशैव मायावाणिविठाय नाय पुष्प निर्वर्तमाती स्वाहा ||

|| 5 || पद पर रस कर नैवेद्य कनक घारी भर ल्याये || धु धा निवारण हेतु छु हू जी मन हरयायो || पूजी शिखरेषॊ। हैं श्री सम्मेदशिल्हर सिद्धशैव मायावाणिविठ नैवेद्य निर्वर्तमाती स्वाहा ||

|| 6 || लेकर मणिमय दीप सुप्योति रुद्रोत हैं || पृक्षु होत स्वामान महालम्य नाश हैं || पूजी शिखरेषॊ। हैं श्री सम्मेदशिल्हर सिद्धशैव मायावाणिविठ नैवेद्य निर्वर्तमाती स्वाहा ||

|| 7 || दस विष्णु धूप अनुप अविन में बेचवह || अपकर्म की नाश होत सुख पावह || पूजी शिखरेषॊ। हैं श्री सम्मेदशिल्हर सिद्धशैव मायावाणिविठ नैवेद्य निर्वर्तमाती स्वाहा ||

|| 8 || वेला दीप छपारी श्रीफल भाराये || फल चढाय मन चांदित फल सु पाठवे || पूजी शिखरेषॊ। हैं श्री सम्मेदशिल्हर सिद्धशैव मायावाणिविठ नैवेद्य निर्वर्तमाती स्वाहा ||

|| 9 || जल गंधार्यत फल सु नेवज लीजिये || दीप धूप फल लेकर अर्थ चढाये || पूजी शिखरेषॊ। हैं श्री सम्मेदशिल्हर सिद्धशैव मायावाणिविठ नैवेद्य निर्वर्तमाती स्वाहा ||

|| 10 || पद्मार्द छन्द-श्रीसिद्धि तीर्थकर जिनेद्र || अर है असंभव बहुदे मुंदे धत करे त्राण || पद्मार्द छन्द-श्रीसिद्धि तीर्थकर जिनेद्र ||
द्वार मृणुपक्ष

श्रीराधिशम सुशुचि नीर, कन्चनमूंग भरें। प्रभु वैग हरी सवपीर, याति घार करें। श्रीचीर महा-अतिविरो, सन-संतियापक हैं। जय चद्र मान गुणधीर, सनमतियाद्रय हैं।

श्रीमहावीरजितेनद्राय कन्चनमूंगमूंगविनाशनाय जलहिर्यापारीति स्वाहा।

अग्रेंगिरजंग सार, केसरसंग वसीं। प्रभु भव आताप निवार, पुजत हितं हुलसैं। जय चद्र मान।

श्रीमहावीरजितेनद्राय भवातापविनाशनाय चन्द्रवं निळ।

तंदुरसतं शशिमं शुद्द, रोजे धाररी। ततु पुंज घरीं अविश्वस, पाऊं शिवनगरी। जय चद्र मान।

श्रीमहावीरजितेनद्राय अक्षयपद्राते अक्षातान्तर, निल।

सुर्यत के सुप्रसमेत, सुमत सुमन प्यारे। सो मन-मथ भजन हैं, पूजू पद यारे। जय चद्र मान।

श्रीमहावीरजितेनद्राय कामवाणविध्वंसनाय पुष्पं निल।

रसनंजतं संज्जतं सूद्द, मजजत धाररी। पदजजतं रजनं बाद, भुजत भूख यारी। जय चद्र मान।

श्रीमहावीरजितेनद्राय दुधरागुप्तविनाशनाय नैवेद्य निल।

तमकंदित मंडित नेहं, दौपक जावत हू। तुम पदतरं हैं सुखों, भुमत लेतत हूं। श्रीचीर जय चद्र मान।

श्रीमहावीरजितेनद्राय महायकाविनाशनाय दौप निल।

हरिजन अगर कपूर, पूरं वुगनं करसे। तुम पदतरं लेवत भूरि, आठा कमं जरे। जय चद्र मान।

श्रीमहावीरजितेनद्राय वर्षमंविध्वंसनाय धूपं निल।

रितुफलं कलोविजितं लायं, काँचन्याय भरीं। शिवं फलं हित।
हे सिनराय, तुम दिख बेट धर्मा || श्री बीर || जयचंद्र मानो ||
कौं ही श्रीचंद्र मानजीनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फढ़ निरो || 8 ||
जयफल वसु सजि हिमधार, तनमन मैद्र धर्मा || गुप गाँव
भवदिचितार, पृज्जु वापहरा || श्रीवीर || जयचंद्र मानो ||
कौं ही श्रीचंद्र मानजीनेन्द्राय अनर्ध्यपदप्राप्तये अर्ध्य निरो ||

पंचकल्याणक——राग टपा ||

मोहि राखी हा सरना, श्रीचंद्र मान जिनरायप्रजी, मोहि
राखी हा सरना || टेक || गरम साहसित छट्ट लियो तिथि,
निहर्षा उर अघररा || सुर सुरपति तित सेव करत नित,
में पृज्जुं सबतरा || मोहि राखी || 1 ||
कौं ही अंपादसुकुवात्तिदिने गरमम्वलममविद्यय श्री—
महावीर जिनेन्द्राय अर्ध्य निर्विपातिति स्वाहा || 1 ||

जन्म चैत सित तेरस के दिम, कुंडलुपुर कनवरना ||
सुरगिर सुरगुरु पूज रचायो, में पृज्जुं सबहरना || मोहिराखी ||
कौं ही चेतुसुकुज्ञौंदीशि दिने जन्ममकुलप्राप्तयां श्रीमहा—
चीरजीनेन्द्राय अर्ध्य निर्विपातिति स्वाहा || 2 ||

मनाविर असित मनोहर दशामी, ता दिन तय आचरण ||
नूष कुमारघर पाप कोना, में पृज्जुं तुम चरना || श्रीराखी है || 3 ||
कौं ही मार्गशीर्षाणां तपोमकुलमन्दिताय श्री—
महावीरजीनेन्द्राय अर्ध्य निर्विपातिति स्वाहा || 3 ||

शुकलदेश वेशधरविनस अरि, घात चतुक छुप करना ||
कैल रूही मचि शवसर तारे, जजुं चरन सुख मरना || मोहि
राखी || 4 ||
कौं ही वेशधरशुकलशि भानकल्याणप्राप्तय श्रीमहा—
चीरजीनेन्द्राय अर्ध्य निर्विपातिति स्वाहा || 4 ||
कांतिक श्राम अमावस शिवतिय, प्राचापूर्वं बनता। गन्धर
नित्यं व जातित बहु-विचि, मूर्त मुखरान्त मोहिरकारी। ॥
ञु हि कांतिका कन्यामावासायाय मोक्षस्वल्लं मंदिताय
महालोचि जिनेन्द्राय अंगं निर्माणीति स्वाहा। ॥

अथ नयमाला। बंधुरसिता (२८ मात्रा)

गन्धर असनिधरं चक्षारं, हरवर गदार वरे वदा।
अव चापाधरं विधायसुधरं, तिरंकुळधरं सेवाः सदा॥
दुबहरं वानं दमरं तारं, तरं च चन रसालं हैं।
दुसुखाल गुण मणिमालं उधत, भाृजौ जयमालं हैं। ॥

छद्र चत्तानंद (३१ मात्रा)

जय त्रिशाळानंदं हरिकृतवदत, जगंद्रानंदचरं घरं।
अच्छापनिकवं तनमनचंदं, रहितसप्तवं नयन घरं। ॥

छद्र तोटक।

जय केवलमानूकालास्वरं। भविकेकविशकण कंजवरं।
जगमृतं महारिपु मोहरं। रजस्मानूकालास्वरं। ॥
गर्वाण दंगमायं मंगलं। दुःख दारिकौ नितं बंधितं हैं।
जनमाहि तुमी सतं पंखितं हैं। तुम्ही भविकाविशीतं हैं। ॥
हरिकृतसरस्वतं रवि हैं। वर्षवत महंतं तुम्ही कवि हैं।
रलली केवल बरम्प्रकाशं कियं। अब्धवो तोऽहै मारण राजदियं। ॥
पुनि वापरते गुणमाहि सदा। सुर मगं रहें जितने सदा हीं।
तिनको विनिता गुण ग्रावत हैं। जय ताणिनिसं मन महचं हैं। ॥
पुनि नाचत रंग अनेक भरी। तुव भक्तिविषयं पवं धरी।
मनवं मनवं मनवं मनवं। सुर लेत तहाँ तमने तनने। ॥
है। शुद्धदने उड़ाहोगैं जिनेको चढ़ाई है। शुभमगढी अमोल माल हाथ जैसी जानिये। जुरी तहां सरसि जाति राव्राज जानिये। अनेक और भूपलोग झेठ साहु को गर्न। कहाँ नाम वर्णि शुद्धबत्ते सभा वर्ष। बोधेवाल जैसवाल अघवाल आइयां। बोधेवाल पौरवाल देशवाल छाईयां। पहलावाल दिल्लिवाल तैवाणवाल जातिके। बोधेवाल पुष्पमाल श्री श्रीमाल पांडेके। शुभोसवाल पल्लिवाल नुखवाल चौसबा। पदातीय तेवरवाल दूसरा वढ़सबा। गंगेवाल बंधुराल तीर्थवाल सोहिला। जरिदवाल पवित्रवाल मेदवाल बोहिला। कवेंचु और माहुरे महेशूरे उद्घारे हैं। मुगोला-लारे गोलापूर्व गोलाँ बिंवाले हैं। वनधार भागी विहारवाल गुरुरा। शुक्ल राग हेय हीर जानराज दूसरा। शुभराल और सुराल और सेटरती चितीरिया। रामल सेमरत वर्ग हुमड़ा नामीरिया। सीरीवाल मंडिया कनौजिया झोप निया। सवाल मालवाल और मेघवाल समेशियां। घूमटेल रायचूल नागरा श्रवाकरा। गुजरन राज जालु राज बालमीक माकरा। पमार लाहौ चोला को गोड मेयोड संभरा। शुभदवाल श्री बंडा चतुर्थ पंचम मारा। शु दलत खेजा सेजकार नारासिंघ हैं पुरी। शु जंदुवाल और क्षेत्र ब्रह्म वेष्य कूलूरी। शु वाह हैं जुरासि जाति जेतथरमारी बनी। सब विराजी नोदिया शु दर्दकी समा बनी। शु दमाल देनको अनेक भूपलोग आवही। शु एक एकते शुमाल मालको बड़ा-वही। कहें जु हाथ जैरि जैरि नाथ माल दौजिये। मगाय दें दें हमरत सो मंडर फोकह कीजिये। शु जेसवाल डाक देत माल देत चौसह। शु दिल्लिवाल,
दैय लाज देत है अगस्त है। ||१५ु॥ सु बहराव बोलिये जू माल मेह दीजिये। दिनार देहू एक लक्ष से गिनाय लीजिये। बस्तिये बोलिया जू दैय लाज देंगे। सुवासी नेतमोल में जिनेन्द्रमाल देंगे। ||१६ु॥ जू संभरी कहीं जू मेरी खानि देहू जायके। सुवर्ण खानि देत हैं वितोड़िया हुलायके || अनेक भूष गांव देत रायसे चंदेरिका। खजान बोलियो कोढ़री सु देत हैं अमेरिका। ||१७ु॥ सुगीजवाल यी कही गयनद बीस लीजिये। मद्राय देह मेहद्वत माल मेह दीजिये ये पमार के तमर्कु सांजि देत हैं विनागने। लगाम जीन पाड़ूँ जड़ार हुमके बने। ||१८ु॥ कतौलिया कपूर देत गाड़िया भरायके। सुहार मेहति गांव देत ओशवाल आयके। || सु हुमड़ा हँकार!हिं माल देंगे। मरायके जिहाज में कितेक दाया देंगे। ||१६ु॥ कितेक लेग आयके खड़े हाथ आरके। कितेक भूष देखके चढ़े जू बाग मेरिकन। कितेक सूख थों कहीं जू बैठ के लक्ष देत है। || लुटाय माल आपनी सु फूडमाल तैत ही। ||२०ु॥ कई पंवीन आविका जिनेन्द्र का विवाह हो। कई सुकंठ रागसंग खड़ी जू माल गावकी। कहीं नृत्यके कहीं नहीं। अनेक भावहर। कई मछु सांपे सु चंगके फिरावर। ||२१ु॥ कहीं गुरु उदार थों सु यों माल गावकी। कराइये जिनेन्द्र यह विवाह भराइये। नछायें जू लंघ जान संघर ही कहाइये। तबे अनेक पुलियसं भोजाल माल पाइये। ||२२ु॥ भविष्य सरं गोयितो गुरु उदारके लई। हुलाय के जिनेन्द्रमाल संघ रायके दै। अनेक हर्षसे करें जिनेन्द्र तिलक पाइंवे। सुमाल श्रीजिनेन्द्रकु विनोदीलाल गाइये। ||२३ु॥

दोहा।
माल भई भगवन्तकी, पाई संग निविन्द।